18-1-2000

ब्रह्मा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाओ

आज समर्थ बापदादा अपने समर्थ बच्चों को देख रहे हैं। आज का दिन स्मृति दिवस सो समर्थ दिवस है। आज का दिन बच्चों को सर्व शक्तियां विल में देने का दिवस है। दुनिया में अनेक प्रकार की विल होती है लेकिन ब्रह्मा बाप ने बाप से प्राप्त हुई सर्व शक्तियों की विल बच्चों को की। ऐसी अलौकिक विल और कोई भी कर नहीं सकते हैं। बाप ने ब्रह्मा बाप को साकार में निमित्त बनाया और ब्रह्मा बाप ने बच्चों को 'निमित्त भव' का वरदान दे विल किया। यह विल बच्चों में सहज पावर्स की (शक्तियों की) अनुभूति कराती रहती है। एक है अपने पुरुषार्थ की पावर्स और यह है परमात्म-विल द्वारा पावर्स की प्राप्ति। यह प्रभु देन है, प्रभु वरदान है। यह प्रभु वरदान चला रहा है। वरदान में पुरुषार्थ की मेहनत नहीं लेकिन सहज और स्वत: निमित्त बनाकर चलाते रहते हैं। सामने थोड़े से रहे लेकिन बापदादा द्वारा, विशेष ब्रह्मा बाप द्वारा विशेष बच्चों को यह विल प्राप्त हुई है और बापदादा ने भी देखा कि जिन बच्चों को बाप ने विल की उन सभी बच्चों ने *(आदि रत्नों ने और सेवा के निमित्त बच्चों ने)* उस प्राप्त विल को अच्छी तरह से कार्य में लगाया। और उस विल के कारण आज यह ब्राह्मण परिवार दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जाता है। बच्चों की विशेषता के कारण यह वृद्धि होनी थी और हो रही है।

बापदादा ने देखा कि निमित्त बने हुए और साथ देने वाले दोनों प्रकार के बच्चों की दो विशेषतायें बहुत अच्छी रही। पहली विशेषता – चाहे स्थापना के आदि रत्न, चाहे सेवा के रत्न दोनों में **संगठन की युनिटी बहुत-बहुत अच्छी रही।** किसी में भी क्यों, क्या, कैसे... यह संकल्प मात्र भी नहीं रहा।

दूसरी विशेषता – **एक ने कहा दूसरे ने माना।** यह एकस्ट्रा पावर्स के विल के वायुमण्डल में विशेषता रही। इसलिए सर्व निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाबा-बाबा ही दिखाई देता रहा।

बापदादा ऐसे समय पर निमित्त बने हुए बच्चों को दिल से प्यार दे रहे हैं। बाप की कमाल तो है ही लेकिन बच्चों की कमाल भी कम नहीं है। और उस समय का संगठन, युनिटी - हम सब एक हैं, वही आज भी सेवा को बढ़ा रही है। क्यों? निमित्त बनी हुई आत्माओं का फाउण्डेशन पक्का रहा। तो बापदादा भी आज के दिन बच्चों की कमाल को गा रहे थे। बच्चों ने चारों ओर से प्यार की मालायें पहनाई और बाप ने बच्चों की कमाल के गुणगान किये। इतना समय चलना है, यह सोचा था? कितना समय हो गया? सभी के मुख से, दिल से यही निकलता, अब चलना है, अब चलना है.... लेकिन बापदादा जानते थे कि अभी अव्यक्त रूप की सेवा होनी है। साकार में इतना बड़ा हाल बनाया था? बाबा के अति लाड़ले डबल विदेशी आये थे? तो विशेष डबल विदेशियों का अव्यक्त पालना द्वारा अलौकिक जन्म होना ही था, इतने सब बच्चों को आना ही था। इसलिए ब्रह्मा बाप को अपना साकार शरीर भी छोड़ना पड़ा। डबल विदेशियों को नशा है कि हम अव्यक्त पालना के पात्र हैं?

ब्रह्मा बाप का त्याग ड्रामा में विशेष नूंधा हुआ है। आदि से ब्रह्मा बाप का त्याग और आप बच्चों का भाग्य नूंधा हुआ है। सबसे नम्बरवन त्याग का एक्ज़ाम्पल ब्रह्मा बाप बना। त्याग उसको कहा जाता है - **जो सब कुछ प्राप्त होते हुए त्याग करे।** समय अनुसार, समस्याओं के अनुसार त्याग – श्रेष्ठ त्याग नहीं है। शुरू से ही देखो तन, मन, धन, सम्बन्ध, सर्व प्राप्ति होते हुए त्याग किया। शरीर का भी त्याग किया, सब साधन होते हुए स्वयं पुराने में ही रहे। साधनों का आरम्भ हो गया था। होते हुए भी साधना में अटल रहे। यह ब्रह्मा की तपस्या आप सब बच्चों का भाग्य बनाकर गई। ड्रामानुसार ऐसे त्याग का एक्ज़ाम्पल रूप में ब्रह्मा ही बना और इसी त्याग ने संकल्प शक्ति

की सेवा का विशेष पार्ट बनाया। जो नये-नये बच्चे संकल्प शक्ति से फास्ट वृद्धि को प्राप्त कर रहे हैं। तो सुना ब्रह्मा के त्याग की कहानी।

ब्रह्मा की तपस्या का फल आप बच्चों को मिल रहा है। तपस्या का प्रभाव इस मधुबन भूमि में समाया हुआ है। साथ में बच्चे भी हैं, बच्चों की भी तपस्या है लेकिन निमित्त तो ब्रह्मा बाप कहेंगे। जो भी मधुबन तपस्वी भूमि में आते हैं तो ब्राह्मण बच्चे भी अनुभव करते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल, यहाँ के वायब्रेशन सहजयोगी बना देते हैं। योग लगाने की मेहनत नहीं, सहज लग जाता है और कैसी भी आत्मायें आती हैं, वह कुछ न कुछ अनुभव करके ही जाती हैं। ज्ञान को नहीं भी समझते लेकिन अलौकिक प्यार और शान्ति का अनुभव करके ही जाते हैं। कुछ न कुछ परिवर्तन करने का संकल्प करके ही जाते हैं। यह है ब्रह्मा और ब्राह्मण बच्चों की तपस्या का प्रभाव। साथ में सेवा की विधि - भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवा बच्चों से प्रैक्टिकल में कराके दिखाई। उसी विधियों को अभी विस्तार में ला रहे हो। तो जैसे ब्रह्मा बाप के त्याग, तपस्या, सेवा का फल आप सब बच्चों को मिल रहा है। **ऐसे हर एक बच्चा अपने त्याग, तपस्या और सेवा का वायब्रेशन विश्व में फैलाये।** जैसे साइन्स का बल अपना प्रभाव प्रत्यक्ष रूप में दिखा रहा है ऐसे साइन्स की भी रचता साइलेन्स बल है। साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। **साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता।** यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता।

बापदादा आज देख रहे थे कि एकाग्रता की शक्ति अभी ज्यादा चाहिए। सभी बच्चों का एक ही दृढ़ संकल्प हो कि अभी अपने भाई-बहनों के दु:ख की घटनायें परिवर्तन हो जाएँ। दिल से रहम इमर्ज हो। क्या जब साइन्स की शक्ति हलचल मचा सकती है तो इतने सभी ब्राह्मणों के साइलेन्स की शक्ति, रहमदिल भावना द्वारा वा संकल्प द्वारा हलचल को परिवर्तन नहीं

कर सकती! जब करना ही है, होना ही है तो इस बात पर विशेष अटेन्शन दो। जब आप ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर के बच्चे हैं, आपके ही सभी बिरादरी हैं, शाखायें हैं, परिवार है, आप ही भक्तों के इष्ट देव हो। यह नशा है कि हम ही इष्ट देव हैं? तो भक्त चिल्ला रहे हैं, आप सुन रहे हो! वह पुकार रहे हैं - हे इष्ट देव, आप सिर्फ सुन रहे हो, उन्हों को रेसपाण्ड नहीं करते हो? तो बापदादा कहते हैं हे भक्तों के इष्ट देव अभी पुकार सुनो, रेसपाण्ड दो, सिर्फ सुनो नहीं। क्या रेसपाण्ड देंगे? परिवर्तन का वायुमण्डल बनाओ। आपका रेसपाण्ड उन्हों को नहीं मिलता तो वह भी अलबेले हो जाते हैं। चिल्लाते हैं फिर चुप हो जाते हैं।

ब्रह्मा बाप के हर कार्य के उत्साह को तो देखा ही है। जैसे शुरू में उमंग था – चाबी चाहिए! अभी भी ब्रह्मा बाप यही शिव बाप से कहते - अभी घर के दरवाजे की चाबी दो। लेकिन साथ जाने वाले भी तो तैयार हों। अकेला क्या करेगा! तो अभी साथ जाना है ना या पीछे-पीछे जाना है? साथ जाना है ना? तो ब्रह्मा बाप कहते हैं कि बच्चों से पूछो अगर बाप चाबी दे दे तो आप एवररेडी हो? एवररेडी हो या रेडी हो, सिर्फ रेडी नहीं – एवररेडी। त्याग, तपस्या, सेवा तीनों ही पेपर तैयार हो गये हैं? ब्रह्मा बाप मुस्कराते हैं कि प्यार के आँसू बहुत बहाते हैं और ब्रह्मा बाप वह आँसू मोती समान दिल में समाते भी हैं लेकिन एक संकल्प ज़रूर चलता कि सब एवररेडी कब बनेंगे! डेट दे देवें। आप कहेंगे कि हम तो एवररेडी हैं, लेकिन आपके जो साथी हैं उन्हें भी तो बनाओ या उनको छोड़कर चल पड़ेंगे? आप कहेंगे ब्रह्मा बाप भी तो चला गया ना! लेकिन उनको तो यह रचना रचनी थी। फास्ट वृद्धि की ज़िम्मेवारी थी। तो सभी एवररेडी हैं, एक नहीं? सभी को साथ ले जाना है ना या अकेले-अकेले जायेंगे? तो सभी एवररेडी हैं या हो जायेंगे? बोलो। कम से कम ९ लाख तो साथ जायें। नहीं तो राज्य किस पर करेंगे? अपने ऊपर राज्य करेंगे? तो ब्रह्मा बाप की यही सभी बच्चों के प्रति शुभ-कामना है कि एवररेडी बनो और एवररेडी बनाओ।

आज वतन में भी सभी विशेष आदि रत्न और सेवा के आदि रत्न इमर्ज हुए। एडवांस पार्टी कहती है हम तो तैयार हैं। किस बात के लिए तैयार हैं? वह कहते हैं यह प्रत्यक्षता का नगाड़ा बजायें तो हम सभी प्रत्यक्ष होकर नई सृष्टि की रचना के निमित्त बनेंगे। हम तो आह्वान कर रहे हैं कि नई सृष्टि की रचना करने वाले आवें। अभी काम सारा आपके ऊपर है। नगाड़ा बजाओ। आ गया, आ गया... का नगाड़ा बजाओ। नगाड़ा बजाने आता है? बजाना तो है ना! अभी ब्रह्मा बाप कहते हैं डेट ले आओ। आप लोग भी कहते हो ना कि डेट के बिना काम नहीं होता है। तो इसकी भी डेट बनाओ। डेट बना सकते हो? बाप तो कहते हैं आप बनाओ। बाप कहते हैं आज ही बनाओ। कान्फ्रेन्स की डेट फिक्स किया है और यह, इसकी भी कान्फ्रेन्स करो ना! विदेशी क्या समझते हैं, डेट फिक्स हो सकती है? डेट फिक्स करेंगे? हाँ या ना! अच्छा - दादी जानकी के साथ राय करके करना। अच्छा।

देश विदेश के चारों ओर के, बापदादा के अति समीप, अति प्यारे और न्यारे, बापदादा देख रहे हैं कि सभी बच्चे लगन में मगन हो लवलीन स्वरूप में बैठे हुए हैं। सुन रहे हैं और मिलन के झूले में झूल रहे हैं। दूर नहीं हैं लेकिन नयनों के सामने भी नहीं, समाये हुए हैं।

तो ऐसे सम्मुख मिलन मनाने वाले और अव्यक्त रूप में लवलीन बच्चे, सदा बाप समान त्याग, तपस्या और सेवा का सबूत दिखाने वाले सपूत बच्चे, सदा एकाग्रता की शक्ति द्वारा विश्व का परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक बच्चे, सदा बाप समान तीव्र पुरुषार्थ द्वारा उड़ने वाले डबल लाइट बच्चों को बापदादा का बहुत-बहुत-बहुत यादप्यार और नमस्ते।

राजस्थान के सेवाधारी – बहुत अच्छा सेवा का चांस राजस्थान को मिला। राजस्थान का जैसे नाम है 'राजस्थान', तो राजस्थान से राजे क्वालिटी वाले निकालो। प्रजा नहीं, राज-घराने के राजे निकालो। तब जैसा नाम है राजस्थान, वैसे ही जैसा नाम वैसे सेवा की क्वालिटी निकलेगी। हैं कोई छिपे हुए राजे लोग या अभी बादलों में हैं? वैसे जो बिज़नेसमैन हैं उन्हों की सेवा पर विशेष अटेन्शन दो। यह मिनिस्टर और सेक्रेटरी तो बदलते ही रहते

हैं लेकिन बिज़नेसमैन बाप से भी बिज़नेस करने में आगे बढ़ सकते हैं। और बिज़नेसमैन की सेवा करने से उनकी परिवार की मातायें भी सहज आ सकती हैं। अकेली मातायें नहीं चल सकती हैं लेकिन अगर घर का स्तम्भ आ जाता है तो परिवार आपेही धीरे-धीरे बढ़ता जाता है इसलिए राजस्थान को राजे क्वालिटी निकालनी है। ऐसे कोई नहीं हैं, ऐसा नहीं कहो। थोड़ा ढूंढना पड़ेगा लेकिन हैं। थोड़ा सा उन्हों के पीछे समय देना पड़ता है। बिज़ी रहते हैं ना! कोई ऐसी विधि बनानी पड़ती जो वह नज़दीक आवें। बाकी अच्छा है, सेवा का चांस लिया, हर एक ज़ोन लेता है यह बहुत अच्छा नजदीक आने और दुआयें लेने का साधन है। चाहे आप लोगों को सब देखें या नहीं देखें, जानें या नहीं जाने, लेकिन जितनी अच्छी सेवा होती है तो दुआयें स्वत: निकलती हैं और वह दुआयें पहुँचती बहुत जल्दी हैं। दिल की दुआयें हैं ना! तो दिल में जल्दी पहुँचती हैं। बापदादा तो कहते हैं सबसे सहज पुरुषार्थ है दुआयें दो और दुआयें लो। दुआओं से जब खाता भर जायेगा तो भरपूर खाते में माया भी डिस्टर्ब नहीं करेगी। जमा का बल मिलता है। राजी रहो और सर्व को राजी करो। हर एक के स्वभाव का राज़ जानकर राजी करो। ऐसे नहीं कहो यह तो है ही नाराज़। आप स्वयं राज़ को जान जाओ, उसकी नब्ज को जान जाओ फिर दुआ की दवा दो। तो सहज हो जायेगा। ठीक है ना राजस्थान! राजस्थान की टीचर्स उठो। सेवा की मुबारक हो। तो सहज पुरुषार्थ करो, दुआयें देते जाओ। लेने का संकल्प नहीं करो, देते जाओ तो मिलता जायेगा। देना ही लेना है। ठीक है ना! ऐसा है ना! दाता के बच्चे हैं ना! कोई दे तो दें। नहीं, दाता बनके देते जाओ तो आपेही मिलेगा। अच्छा।

जो इस कल्प में पहली बार आये हैं वो हाथ उठाओ। आधे पहले वाले आते हैं, आधे नये आते हैं। अच्छा - पीछे वाले, किनारे में बैठे हुए सभी सहजयोगी हो? सहज योगी हो तो एक हाथ उठाओ। अच्छा।

विदाई के समय – *(बापदादा को रथ यात्राओं का समाचार सुनाया)*

चारों तरफ़ का यात्राओं का समाचार समय प्रति समय बापदादा के पास आता रहता है। अच्छा सब उमंग-उत्साह से सेवा का पार्ट बजा रहे हैं। भक्तों को दुआयें मिल रही हैं और जिन भक्तों की भक्ति पूरी हुई, उन्हों को बाप का परिचय मिल जायेगा और परिचय वालों से जो बच्चे बनने होंगे वह भी दिखाई देते रहेंगे। बाकी सेवा अच्छी चल रही है और जो भी साधन बनाया है वह साधन अच्छा सबको आकर्षित कर रहा है। अभी रिज़ल्ट में कौन-कौन किस केटगिरी में निकलता है वह मालूम पड़ जायेगा लेकिन भक्तों को भी आप सबकी नजर-दृष्टि मिली, परिचय मिला – यह भी अच्छा साधन है। अब आगे बढ़कर इन्हों की सेवा कर आगे बढ़ाते रहना। जो भी रथ यात्रा में सेवा कर रहे हैं, अथक बन सेवा कर रहे हैं, उन सभी को यादप्यार। बापदादा सभी को देखते रहते हैं और सफलता तो जन्म-सिद्ध अधिकार है। अच्छा।

मॉरीशियस में अपने ईश्वरीय विश्व-विद्यालय को नेशनल युनिटी एवार्ड प्राइमिनिस्टर द्वारा मिला है

मॉरीशियस में वैसे भी वी.आई.पी. का कनेक्शन अच्छा रहा है और प्रभाव भी अच्छा है इसलिए गुप्त सेवा का फल मिला है तो सभी को खास मुबारक। अच्छा। ओमशान्ति।

साइलेन्स बल को अभी प्रत्यक्ष दिखाने का समय है। **साइलेन्स बल का वायब्रेशन तीव्रगति से फैलाने का साधन है - मन-बुद्धि की एकाग्रता।** यह एकाग्रता का अभ्यास बढ़ना चाहिए। एकाग्रता की शक्तियों द्वारा ही वायुमण्डल बना सकते हो। हलचल के कारण पावरफुल वायब्रेशन बन नहीं पाता

15-2-2000

मन को स्वच्छ, बुद्धि को क्लीयर रख डबल लाइट फ़रिश्ते स्थिति का अनुभव करो

आज बापदादा अपने स्वराज्य अधिकारी बच्चों को देख रहे हैं। स्वराज्य ब्राह्मण जीवन का जन्म सिद्ध अधिकार है। बापदादा ने हर एक ब्राह्मण को स्वराज्य के तख्तनशीन बना दिया है। स्वराज्य का अधिकार जन्मते ही हर एक ब्राह्मण आत्मा को प्राप्त है। जितना स्वराज्य स्थित बनते हो उतना ही अपने में लाइट और माइट का अनुभव करते हो।

बापदादा आज हर एक बच्चे के मस्तक पर लाइट का ताज देख रहे हैं। जितनी अपने में माइट धारण की है उतना ही नम्बरवार लाइट का ताज चमकता है। बापदादा ने सभी बच्चों को सर्व शक्तियाँ अधिकार में दी है। हर एक मास्टर सर्वशक्तिवान है, परन्तु धारण करने में नम्बरवार बन गये हैं। बापदादा ने देखा कि सर्वशक्तियों की नॉलेज भी सबमें है, धारणा भी है लेकिन एक बात का अन्तर पड़ जाता है। कोई भी ब्राह्मण आत्मा से पूछो - हर एक शक्ति का वर्णन भी बहुत अच्छा करेंगे, प्राप्ति का वर्णन भी बहुत अच्छा करेंगे। परन्तु अन्तर यह है कि समय पर जिस शक्ति की आवश्यकता है, उस समय पर वह शक्ति कार्य में नहीं लगा सकते। समय के बाद महसूस करते हैं कि इस शक्ति की आवश्यकता थी। बापदादा बच्चों को कहते हैं - सर्व शक्तियों का वर्सा इतना शक्तिशाली है जो कोई भी समस्या आपके आगे ठहर नहीं सकती है। समस्या-मुक्त बन सकते हो। सिर्फ सर्व शक्तियों को इमर्ज रूप में स्मृति में रखो और समय पर कार्य में लगाओ। इसके लिए अपने बुद्धि की लाइन क्लीयर रखो। **जितनी बुद्धि की लाइन क्लीयर और क्लीन होगी उतना निर्णय शक्ति तीव्र होने के कारण जिस समय जो शक्ति की आवश्यकता है वह कार्य में लगा सकेंगे** क्योंकि समय के प्रमाण बापदादा हर

एक बच्चे को विघ्न-मुक्त, समस्या-मुक्त, मेहनत के पुरुषार्थ-मुक्त देखने चाहते हैं। बनना तो सबको है ही लेकिन बहुतकाल का यह अभ्यास आवश्यक है। ब्रह्मा बाबा का विशेष संस्कार देखा - ''तुरत दान महापुण्य''। जीवन के आरम्भ से हर कार्य में तुरत दान भी, तुरत काम भी किया। ब्रह्मा बाप की विशेषता – निर्णय-शक्ति सदा फास्ट रही। तो बापदादा ने रिज़ल्ट देखी। सबको साथ तो ले ही जाना है। बापदादा के साथ चलने वाले हो ना! या पीछे-पीछे आने वाले हो? जब साथ चलना ही है तो फ़ालो ब्रह्मा बाप। कर्म में फ़ालो ब्रह्मा बाप और स्थिति में निराकारी शिव बाप को फ़ालो करना है। फ़ालो करना आता है ना?

डबल विदेशियों को फ़ालो करना आता है? फ़ालो करना तो सहज है ना! जब फ़ालो ही करना है तो क्यों, क्या, कैसे... यह समाप्त हो जाता है। और सबको अनुभव है कि व्यर्थ संकल्प के निमित्त यह क्यों, क्या, कैसे... ही आधार बनते हैं। फ़ालो फादर में यह शब्द समाप्त हो जाता है। कैसे नहीं– ऐसे! बुद्धि फौरन जज करती है ऐसे चलो, ऐसे करो। **तो बापदादा आज विशेष सभी बच्चों को चाहे पहले बारी आये हैं, चाहे पुराने हैं, यही इशारा देते हैं कि अपने मन को स्वच्छ रखो। बहुतों के मन में अभी भी व्यर्थ और निगेटिव के दाग छोटे-बड़े हैं। इसके कारण पुरुषार्थ की श्रेष्ठ स्पीड, तीव्रगति में रुकावट आती है। बापदादा सदा श्रीमत देते हैं कि मन में सदा हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना रखो - यह है स्वच्छ मन। अपकारी पर भी उपकार की वृत्ति रखना– यह है स्वच्छ मन।** स्वयं के प्रति वा अन्य के प्रति व्यर्थ संकल्प आना - यह स्वच्छ मन नहीं है। तो स्वच्छ मन और क्लीन और क्लीयर बुद्धि। जज करो, अपने आपको अटेन्शन से देखो, ऊपर-ऊपर से नहीं, ठीक है, ठीक है। नहीं, सोच के देखो - मन और बुद्धि स्पष्ट है, श्रेष्ठ है? तब डबल लाइट स्थिति बन सकती है। बाप समान स्थिति बनाने का यही सहज साधन है। और यह अभ्यास अन्त में नहीं, बहुतकाल का आवश्यक है। तो चेक करना आता है? अपने को चेक करना, दूसरे को नहीं करना। बापदादा ने पहले भी हँसी की बात बताई थी कि कई बच्चों की दूर की नज़र बहुत तेज़ है और नज़दीक

की नज़र कमज़ोर है! इसलिए दूसरे को जज करने में बहुत होशियार हैं। अपने को चेक करने में कमज़ोर नहीं बनना।

बापदादा ने पहले भी कहा है कि जैसे अभी यह पक्का हो गया है कि मैं ब्रह्माकुमारी/ब्रह्माकुमार हूँ। चलते-फिरते-सोचते - हम ब्रह्माकुमारी हैं, हम ब्रह्माकुमार ब्राह्मण आत्मा हैं। ऐसे अभी यह नेचुरल स्मृति और नेचर बनाओ कि ''मैं फ़रिश्ता हूँ।'' **अमृतवेले उठते ही यह पक्का करो कि मैं फ़रिश्ता परमात्म-श्रीमत पर नीचे इस साकार तन में आया हूँ, सभी को सन्देश देने के लिए वा श्रेष्ठ कर्म करने के लिए।** कार्य पूरा हुआ और अपने शान्ति की स्थिति में स्थित हो जाओ। ऊँची स्थिति में चले जाओ। एक-दो को भी फ़रिश्ते स्वरूप में देखो। आपकी वृत्ति दूसरे को भी धीरे-धीरे फ़रिश्ता बना देगी। आपकी दृष्टि दूसरे पर भी प्रभाव डालेगी। यह पक्का है कि हम फ़रिश्ते हैं? 'फ़रिश्ता भव' का वरदान सभी को मिला हुआ है? एक सेकण्ड में फरिश्ता अर्थात् डबल लाइट बन सकते हो? एक सेकण्ड में, मिनट में नहीं, [illegible] सेकण्ड में नहीं, एक सेकण्ड में सोचा और बना, ऐसा अभ्यास है? अच्छा जो एक सेकण्ड में बन सकते हैं, दो सेकण्ड नहीं, एक सेकण्ड में बन सकते हैं, वह एक हाथ की ताली बजाओ। बन सकते हैं? ऐसे ही नहीं हाथ उठाना। डबल फ़ारेनर नहीं उठा रहे हैं! टाइम लगता है क्या? अच्छा जो समझते हैं कि थोड़ा टाइम लगता है, एक सेकण्ड में नहीं, थोड़ा टाइम लगता है, वह हाथ उठाओ। *(बहुतों ने हाथ उठाया)* अच्छा है, लेकिन लास्ट घड़ी का पेपर एक सेकण्ड में आना है, फिर क्या करेंगे? अचानक आना है और सेकण्ड का आना है। हाथ उठाया, कोई हर्जा नहीं। महसूस किया, यह भी बहुत अच्छा। परन्तु यह अभ्यास करना ही है। करना ही पड़ेगा नहीं, **करना ही है**। यह अभ्यास बहुत-बहुत-बहुत आवश्यक है। चलो फिर भी बापदादा कुछ टाइम देते हैं। कितना टाइम चाहिए? दो हज़ार तक चाहिए। [illegible]वीं सदी तो आप लोगों ने चैलेन्ज की है, ढिंढोरा पीटा है, याद है? चैलेन्ज किया है - गोल्डन एजड दुनिया आयेगी या वातावरण बनायेंगे। चैलेन्ज किया है ना! तो इतने तक तो

बहुत टाइम है। जितना स्व पर अटेन्शन दे सको, **दे सको भी नहीं, देना ही है।** जैसे देह-भान में आने में कितना टाइम लगता है! दो सेकण्ड? जब चाहते भी नहीं हो लेकिन देह भान में आ जाते हो, तो कितना टाइम लगता है? एक सेकण्ड या उससे भी कम लगता है? पता ही नहीं पड़ता है कि देह-भान में आ भी गये हैं। ऐसे ही यह अभ्यास करो - कुछ भी हो, क्या भी कर रहे हो लेकिन यह भी पता ही नहीं पड़े कि मैं सोल-कान्सेस, पावरफुल स्थिति में नेचुरल हो गया हूँ। फ़रिश्ता स्थिति भी नेचुरल होनी चाहिए। जितनी अपनी नेचर फ़रिश्ते-पन की बनायेंगे तो नेचर स्थिति को नेचुरल कर देगी। तो बापदादा कितने समय के बाद पूछे? कितना समय चाहिए? जयन्ती बोलो - कितना समय चाहिए? फ़ारेन की तरफ़ से आप बोलो - कितना समय फ़ारेन वालों को चाहिए? जनक बोलो। (दादी जी ने कहा आज की आज होगी, कल नहीं) अगर आज की आज है तो अभी सभी फ़रिश्ते हो गये? हो जायेंगे नहीं। अगर जायेंगे तो कब तक? बापदादा ने आज ब्रह्मा बाप का कौन-सा संस्कार बताया? – 'तुरत दान महापुण्य।'

बापदादा का हर एक बच्चे से प्यार है, तो ऐसे ही समझते हैं कि एक बच्चा भी कम नहीं रहे। नम्बरवार क्यों? सभी नम्बरवन हो जाएं तो कितना अच्छा है। अच्छा - आज बहुत ग्रुप्स आये हुए हैं।

प्रशासक वर्ग (एडमिनिस्ट्रेशन विंग) – आपस में मिलकर क्या प्रोग्राम बनाया? ऐसा तीव्र पुरुषार्थ का प्लैन बनाया कि जल्द-से-जल्द आप श्रेष्ठ आत्माओं के हाथ में यह कार्य आ जाए। विश्व-परिवर्तन करना है तो सारी एडमिनिस्ट्रेशन बदलनी पड़ेगी ना! कैसे यह कार्य सहज बढ़ता जाए, फैलता जाए, ऐसे सोचा? जो भी कम से कम बड़े-बड़े शहरों में निमित्त हैं उन्हों को पर्सनल सन्देश देने का प्लैन बनाया है? कम से कम यह तो समझें कि अब आध्यात्मिकता द्वारा परिवर्तन हो सकता है और होना चाहिए। तो अपने वर्ग को जगाना इसीलिए यह वर्ग बनाये गये हैं। तो बापदादा वर्ग वालों की सेवा देख करके खुश है परन्तु यह रिज़ल्ट देखनी है कि हर वर्ग वालों ने

अपने-अपने वर्ग को कहाँ तक मैसेज दिया है! थोड़ा बहुत जगाया है वा साथी बनाया है? सहयोगी, साथी बनाया है? ब्रह्माकुमार नहीं बनाया लेकिन सहयोगी साथी बनाया?

सभी वर्गों को बापदादा कह रहे हैं कि जैसे अभी धर्म-नेतायें आये, नम्बरवन वाले नहीं थे फिर भी एक स्टेज पर सब इकट्ठे हुए और सभी के मुख से यह निकला कि हम सबको मिलकर आध्यात्मिक शक्ति को फैलाना चाहिए। ऐसे हर वर्ग वाले जो भी आये हो, उस हर वर्ग वाले को यह रिज़ल्ट निकालनी है कि हमारे वर्ग वालों में मैसेज कहाँ तक पहुँचा है? **दूसरा** – आध्यात्मिकता की आवश्यकता है और हम भी सहयोगी बनें - यह रिज़ल्ट हो। रेग्युलर स्टूडैण्ट नहीं बनते लेकिन सहयोगी बन सकते हैं। तो अभी तक हर वर्ग वालों की जो भी सेवा की है, जैसे अभी धर्म-नेताओं को बुलाया, ऐसे हर देश से हर विंग वालों का करो। पहले इण्डिया में ही करो, पीछे इण्टरनेशनल करना, हर वर्ग के ऐसे भिन्न-भिन्न स्टेज वाले इकट्ठे हो और यह अनुभव करें कि हम लोगों को सहयोगी बनना है। यह हर वर्ग की रिज़ल्ट अब तक कितनी निकली है? और आगे का क्या प्लैन है? क्योंकि एक वर्ग, एक-एक को अगर लक्ष्य रखकर समीप लायेंगे तो फिर सब वर्ग के जो समीप सहयोगी हैं ना, उन्हों का संगठन करके बड़ा संगठन बनायेंगे। और एक दो को देख करके उमंग-उत्साह भी आता है। अभी बंटे हुए हैं, कोई शहर में कितने हैं, कोई शहर में कितने हैं। अच्छे-अच्छे हैं भी परन्तु सबका पहले संगठन इकट्ठा करो और फिर सबका मिलकर संगठन मधुबन में करेंगे। तो ऐसे प्लैन कुछ बनाया? बना होगा जरूर। फ़ारेन वालों को भी सन्देश भेजा था कि बिखरे हुए बहुत हैं। अगर भारत में भी देखो तो अच्छी-अच्छी सहयोगी आत्मायें जगह-जगह पर निकली हैं परन्तु गुप्त रह जाती हैं। उन्हों को मिलाकर कोई विशेष प्रोग्राम रखकर अनुभव की लेन-देन करें उससे अन्तर पड़ जाता है, समीप आ जाते हैं। किस वर्ग के ३ होंगे, किसके ८ होंगे, किसके १३-२० भी होंगे। संगठन में आने से आगे बढ़ जाते हैं। उमंग-उल्लास

बढ़ता है। तो अभी तक जो सभी वर्गों की सेवा हुई है, उसकी रिज़ल्ट निकालनी चाहिए। सुना, सभी वर्ग वाले सुन रहे हैं ना! सभी वर्ग वाले जो आज विशेष आये हैं वह हाथ उठाओ। बहुत हैं। तो अभी रिज़ल्ट देना - कितने-कितने, कौन-कौन और कितनी परसेन्ट में समीप सहयोगी हैं? फिर उन्हों के लिए रमणीक प्रोग्राम बनायेंगे। ठीक है ना!

मधुबन वालों को खाली नहीं रहना है। खाली रहने चाहते हैं? बिज़ी रहने चाहते हैं ना! या थक जाते हैं? बीच-बीच में [illegible] दिन छुट्टी भी होती है और होनी भी चाहिए। परन्तु प्रोग्राम के पीछे प्रोग्राम लिस्ट में होना चाहिए तो उमंग-उत्साह रहता है, नहीं तो जब सेवा नहीं होती है तो दादी एक कम्पलेन करती है। कम्पलेन बतायें? कहती है सभी कहते हैं - अपने-अपने गाँव में जायें। चक्कर लगाने जायें, सेवा के लिए भी चक्कर लगाने जायें। इसीलिए बिजी रखना अच्छा है। बिज़ी होंगे तो खिट-खिट भी नहीं होगी। और देखो मधुबन वालों की एक विशेषता पर बापदादा पद्मगुणा मुबारक देते हैं। [illegible] गुणा भी नहीं, पद्मगुणा। किस बात पर? जब भी कोई आते हैं तो मधुबन वालों में ऐसी सेवा की लगन लग जाती है जो कुछ भी अन्दर हो, छिप जाता है। अव्यक्ति दिखाई देते हैं। अथक दिखाई देते हैं और रिमार्क लिखकर जाते हैं कि यहाँ तो हर एक फ़रिश्ता लग रहा है। तो यह विशेषता बहुत अच्छी है जो उस समय विशेष विल पावर आ जाती है। सेवा की चमक आ जाती है। तो यह सर्टिफ़िकेट तो बापदादा देता है। मुबारक है ना! तो ताली तो बजाओ मधुबन वाले। बहुत अच्छा। बापदादा भी उस समय चक्कर लगाने आता है, आप लोगों को पता नहीं पड़ता है लेकिन बापदादा चक्कर लगाने आता है। तो यह विशेषता मधुबन की और आगे बढ़ती जायेगी। अच्छा।

मीडिया विंग – फ़ारेन में भी मीडिया का शुरू हुआ है ना! बापदादा ने देखा है कि मीडिया में अभी मेहनत अच्छी की है। अभी अखबारों में निकलने शुरू हुआ है और प्यार से भी देते हैं। तो मेहनत का फल भी मिल रहा है।

अभी और भी विशेष अखबारों में, जैसे टी.वी. में किसी ने भी परमानेंट थोड़ा समय भी दे दिया है ना! रोज़ चलता है ना। तो यह प्रोग्रेस अच्छी है। सभी को सुनने में अच्छा अनुभव होता है। ऐसे अखबार में विशेष चाहे सप्ताह में, चाहे रोज़, चाहे हर दूसरे दिन एक पीस *(एक टुकड़ा)* मुकरर हो जाए कि यह आध्यात्म-शक्ति बढ़ाने का मौका है। ऐसा पुरुषार्थ करो। वैसे सफलता है, कनेक्शन भी अच्छा बढ़ता जाता है। अभी कुछ कमाल करके दिखाओ अखबार की। कर सकते हैं? ग्रुप कर सकता है? हाथ उठाओ - हाँ करेंगे। उमंग-उल्लास है तो सफलता है ही। क्यों नहीं हो सकता है! आखिर तो समय आयेगा जो सब साधन आपकी तरफ़ से यूज़ होंगे। आफर करेंगे आपको। आफर करेंगे कुछ दो, कुछ दो। मदद लो। अभी आप लोगों को कहना पड़ता है - सहयोगी बनो, फिर वह कहेंगे – हमारे को सहयोगी बनाओ। सिर्फ यह बात पक्की रखना – फ़रिश्ता, फ़रिश्ता, फ़रिश्ता! फिर देखो आपका काम कितना जल्दी होता है। पीछे पड़ना नहीं पड़ेगा लेकिन परछाई के समान वह आपेही पीछे आयेंगे। बस सिर्फ आपकी अवस्थाओं के रुकने से रुका हुआ है। एवररेडी बन जाओ तो सिर्फ स्विच दबाने की देरी है, बस। अच्छा कर रहे हैं और करेंगे।

स्पार्क ग्रुप – यह बहुत बड़ा ग्रुप है। स्पार्क वाले रिसर्च करते हैं ना! स्पार्क वालों को विशेष यह अटेन्शन में रहे कि जैसे साइन्स प्रत्यक्ष अनुभव कराती है, मानो गर्मी है तो साइन्स के साधन ठण्डी का प्रत्यक्ष अनुभव कराते हैं। ऐसे रीसर्च वालों को विशेष ऐसा प्लैन बनाना चाहिए कि हर एक जो बाप की या आत्मा की विशेषतायें हैं, ज्ञान-स्वरूप, शान्त-स्वरूप, आनन्द-स्वरूप, शक्ति-स्वरूप.... इस एक-एक विशेषता का प्रैक्टिकल में अनुभव क्या होता है। वह ऐसा सहज साधन निकालो जो कोई भी अनुभव करने चाहे तो चाहे थोड़े समय के लिए भी अनुभव कर सके कि शान्ति इसको कहते हैं, शक्ति की अनुभूति इसको कहते हैं। एक सेकण्ड, दो सेकण्ड भी अनुभव कराने की विधि निकालो। तो एक सेकण्ड भी अगर

किसको अनुभव हो गया तो वह अनुभव आकर्षित करता है। ऐसी कोई इन्वेन्शन निकालो। आपके सामने आवे और जिस विशेषता का अनुभव करने चाहे वह कर सके। क्या-क्या भिन्न-भिन्न स्थिति होती है, जैसे साधना करने वाले जो साधु हैं वह प्रैक्टिकल में उन्हों को अनुभव कराते हैं, चक्र नाभी से शुरू हुआ फिर ऊपर गया, फिर ऊपर जाके क्या अनुभूति होती है। ऐसे आप अपने विधिपूर्वक, मन और बुद्धि द्वारा उनको अनुभव कराओ। लाइट बैठकर नहीं दिखाना है लेकिन लाइट का अनुभव करें। रिसर्च का अर्थ ही है – 'प्रत्यक्ष विधि द्वारा अनुभव करना-कराना।' तो ऐसा प्लैन बनाके प्रैक्टिकल में इसकी विधि निकालो। जैसे योग शिविर की विधि निकाली ना तो टैम्प्रेरी टाइम में योग शिविर में जो भी आते हैं वह उस समय तो अनुभव करते हैं ना! और उन्हों को वह अनुभव याद भी रहता है। ऐसे कोई-न-कोई गुण, कोई-न-कोई शक्ति, कोई-न-कोई अनादि संस्कार, उन्हों की अनुभूति कराओ। तो ऐसी रिसर्च वालों को पहले स्वयं अनुभूति करनी पड़ेगी फिर विधि बनाओ और दूसरों को अनुभूति कराओ। आजकल लोगों को भक्ति में जैसे चमत्कार चाहिए ना, मेहनत नहीं – 'चमत्कार।' ऐसे आध्यात्मिक रूप में अनुभव चाहिए। अनुभवी कभी बदल नहीं सकता। जल्दी-जल्दी अनुभव के आधार से बढ़ते जायेंगे। सुना। अभी नई-नई विधि निकालो। आप कहते जाओ वह अनुभव करते जायें, **इसके लिए बहुत पावरफुल अभ्यास करना पड़ेगा।**

समाज सेवा प्रभाग (सोशल विंग) – इन्हों का भी कार्य है बिगड़ी को प्रैक्टिकल बनाना। वह तो गांव को बदलते हैं, परिवार को बदलते हैं, परिवार की समस्याओं को समाप्त कर दिखाते हैं। लेकिन उनका होता है टैम्प्रेरी। सोशल विंग वालों को ऐसे कोई मिसाल दिखाने चाहिए जो पहले कोई बहुत दुःखी परिवार हों और परिवर्तन हो सुखी बन जाए, ऐसे यहाँ परिवार तो बहुत आते हैं। तो गवर्मेन्ट के आगे प्रैक्टिकल मिसाल दिखाने चाहिए। इतने परिवार बदलकर और क्या अनुभव करते हैं, वह गवर्मेन्ट के

सामने लाना चाहिए। जैसे बताया कि कोई ऐसे प्रत्यक्ष प्रमाण परिवर्तन के अभी स्टेज पर लाओ। मैसेज तो दे रहे हैं, कार्य तो कर रहे हैं। लेकिन अभी गवर्मेन्ट की आंखों में आना चाहिए कि स्प्रीचुअल पावर से सोशल वर्ग क्या नहीं कर सकता या क्या नहीं कर रहा है। अभी जैसे पार्क का सुनाया *(बाम्बे के पार्क)*, कितनी सेवा हो रही है। कितने बच्चों को आराम मिल रहा है, यह रिजल्ट गवर्मेन्ट के सामने आना चाहिए। तो जो सोशल वर्ग के नेतायें हैं, उन्हों के पास रिज़ल्ट आनी चाहिए। अगर लिस्ट निकालो तो मुख्य-मुख्य परिवार की लिस्ट काफी निकाल सकते हो। यहाँ तो है ही प्रैक्टिकल। वह सोशल वर्क क्या करते हैं! कपड़ा बाँटते हैं, पैसे की मदद करते हैं.... तो आप लोग परिवार में जो सन्तुष्टता लाते हैं, जिससे उसकी एकॉनामी भी अच्छी हो जाती है, कपड़े, खाने पीने में मुश्किलात खत्म हो जाती है। आराम से रहते हैं। थोड़े में भी बहुत आराम से जिदंगी बिता रहे हैं, तो जो वह करते हैं उसको भेंट करके अलौकिक रूप से आप क्या कर रहे हैं, वह बताओ, और ऐसे-ऐसे जो एकदम बिगड़े हुए हो, उन्हों का संगठन बुलाकर उन्हों को बताओ कि देखो क्या हम कर रहे हैं। तो क्या होगा कि गवर्मेन्ट की नज़र में आने से, गवर्मेन्ट का कोई भी आता है तो एडवरटाइज़ भी सहज हो जाती है। आप बुलायेंगे प्रेस वालों को तो थोड़े आयेंगे और वह बुलायेंगे तो पीछे-पीछे आयेंगे। तो ऐसे ढंग से सबको प्रैक्टिकल दृष्टान्त दिखाओ कि हम क्या कर रहे हैं। कर बहुत रहे हैं लेकिन गुप्त है। अच्छा।

राजनेता सेवा प्रभाग – पॉलिटिशियन वाले भी अपने-अपने स्थान वालों की सेवा तो कर ही रहे हैं। सेवा कर रहे हैं और होती रहेगी। पॉलिटिशन वालों को विशेष यह अटेन्शन रखना चाहिए - जैसे समाचार सुना कि हैदराबाद में चीफ़ मिनिस्टर प्रभावित होने के कारण वहाँ के गवर्मेन्ट की सेवा सहज हो रही है। ऐसे हर स्थान पर कोई न कोई ऐसे सम्पर्क वाले हैं जिन्हों को थोड़ा और आगे ला सकते हैं। हर एक शहर में अपनी-अपनी गवर्मेन्ट में कुछ-न-कुछ अच्छे हैं, तो बापदादा समझते हैं कि जैसे हैदराबाद

वाला विशेष है, उसके द्वारा भिन्न-भिन्न स्थान पर ऐसे क्वालिटी जो आगे आ सकती है, थोड़ा सा उसके पीछे मेहनत करें तो क्वालिटी निकल सकती है। ऐसा ग्रुप एक तैयार करो। भले भिन्न-भिन्न शहरों के हों लेकिन ऐसी क्वालिटी हो जो समझते हो, समीप आ सकते हैं। और फिर उस हैदराबाद वाले को उस संगठन में बुलाकर औरों की सेवा कराओ। वह प्रैक्टिकल उसका अनुभव सुनने से हिम्मत में आयेंगे तो हम भी कर सकते हैं। तो ऐसा संगठन पहले इकट्ठा करो, रिपोर्ट तो आती है ना। तो संगठन इकट्ठा करके फिर जगह-जगह पर थोड़ा-सा गवर्मेन्ट के अन्दर जाते रहेंगे तो बड़ों तक भी पहुंच जायेंगे क्योंकि बड़ों को फुर्सत कम होती है लेकिन बीच वाले आ सकते हैं। जैसे धर्म-नेताओं में बीच वाले आये ना। कोई पहला नम्बर वाले तो नहीं आये। लेकिन बीच वालों द्वारा उन्हों तक पहुंच सकते हैं, रास्ता है। तो ऐसे आप भी ऐसा ग्रुप तैयार करके आगे थोड़ा जाते रहो। आप इस समय 'राज्य और धर्म' – दोनों स्थापन कर रहे हैं तो राजधानी वाले वंचित तो नहीं रहे ना। फिर भी साथी तो हैं। तो ऐसे करके देखो। अच्छा।

धार्मिक सेवा प्रभाग – धर्म के वर्ग वालों ने एक कार्य करके तो दिखाया लेकिन यह रिहर्सल थी। रिहर्सल में सफलता मिली यह तो अच्छा हुआ। अभी और जो मुख्य हैं उन्हों को भी सिर्फ आध्यात्मिक-शक्ति का महत्त्व बताके, आध्यात्मिक शक्ति से आप क्या कर सकते हैं, वह बताओ। भले डिसकस में नहीं जाओ, लेकिन पहले समीप आवें और इसी पर ही चर्चा हो तो आध्यात्मिक शक्ति मिलकर क्या कर सकती है। आध्यात्मिक-शक्ति वालों की कितनी बड़ी ज़िम्मेवारी है, इस टॉपिक को लेकर उन्हों को समीप लाओ और समीप लाकर फिर सम्पर्क में लाओ, यहाँ आबू तक ले आओ। तो आबू का प्रवाह, प्रभाव आपेही उन्हों को आकर्षित करेगा। ऐसे नहीं सोचना कि यात्रा निकाली, नेताओं का सम्मेलन हो गया, बहुत अच्छा। नहीं। और आगे बढ़ना है, फिर और आगे बढ़ना है। आगे बढ़ते ही जाना है।

रथ यात्री – रथ यात्रियों की तो स्वागत बहुत हो चुकी है और अभी भी

देखो रथ यात्रियों को सभी ने कितनी तालियां बजाई, और ग्रुप में नहीं बजाई। तो बहुत अच्छा, इस यात्रा को वरदान था, बापदादा ने पहले भी सुनाया कि रथ यात्रियों को विशेष बापदादा द्वारा वरदान थे – **एक तो** – निर्विघ्न, किसी भी प्रकार का विघ्न नहीं आया। **दूसरा** – सभी के सभी स्वस्थ रहे। बीमारी का विघ्न भी नहीं आया। और **तीसरा** – विशेष सभी में उमंग-उत्साह होने के कारण अथक रहे। तो यह वरदान प्रत्यक्ष रूप में सभी ने देखा और अनुभव किया। जहाँ उमंग-उत्साह होता है वहाँ यह सब बातें स्वत: प्राप्त होती हैं। तो सफलतापूर्वक सभी पहुँच गये और अभी भी शिवरात्रि के उत्सव में रथ तो जहाँ-तहाँ जा नहीं सकते लेकिन जो वीडियो फिल्म निकाली है तो हर स्थान पर इस वीडियो फिल्म द्वारा सेवा अच्छी होनी ही है। तो आपकी यात्रा वीडियो में आ गई अर्थात् अमर हो गई, चलती रहेगी। अच्छा है। निमित्त तो इन्वेन्शन जगदीश ने किया। ऐसे ही शुरू से वरदान है – इन्वेन्शन करने का। अभी भी इस वरदान को आगे बढ़ाते रहना। अच्छा है। एक की इन्वेन्शन से सभी तरफ उमंग-उत्साह आ गया। तो इन्वेन्शन की मुबारक हो। अच्छा।

विदेश का इन्टरनेशनल सर्विस ग्रुप – डबल फ़ारेनर्स डबल फायदा उठाने में होशियार हैं। मधुबन की भी रिफ्रेशमेंट और सेवा के प्लैन भी बन गये। तो अच्छा चांस लेते हैं। बापदादा को भी खुशी होती है, जब संगठित रूप में मिलकर सेवा का प्लैन बनाते हैं। जिस प्लैन में सब तरफ के निमित्त बनी हुई आत्माओं की दृष्टि पड़ जाती है, वायब्रेशन मिल जाते हैं तो उस प्लैन में दुआयें भर जाती हैं और चारों ओर एक ही सेवा का प्लैन चलने से चारों ओर का फैला हुआ आवाज़, आवाज़ बुलन्द करता है। तो अभी भी प्लैन बनाया है ना - कल्चर और पीस का। टॉपिक अच्छी है। देखो दोनों रीति से इस टॉपिक पर सेवा कर सकते हो। चाहे कल्चर पर करो, चाहे पीस पर करो। चाहे दोनों मिलाकर करो। लेकिन शान्ति की अनुभूति तो आजकल सभी चाहते ही हैं और अपना कल्चर भी अच्छा बनाने तो चाहते ही हैं।

समझते हैं कि कुछ और एडीशन चाहिए जिससे कल्चर अच्छे ते अच्छा, ऊँचे-ते ऊँचा हो जाए। तो टॉपिक अच्छी है और जैसे उमंग-उत्साह से चाहे भारत, चाहे विदेश दोनों तरफ प्लैन बना रहे हैं, सफलता तो है ही। और अच्छा है, इसी बहाने से टॉपिक उन्हों की है और प्रैक्टिकल आप हैं। तो टॉपिक और प्रैक्टिकल मिल जायेगा तो अच्छा होगा। अच्छा है। यू.एन. की सेवा भी अच्छी हो रही है, उसके कारण और-और की भी सेवा हो रही है। धीरे-धीरे नान-गवर्मेन्ट से गवर्मेन्ट तक भी पहुँच जायेंगे। अच्छा चल रहा है ना! कनेक्शन भी अच्छा बढ़ता जाता है। सहयोग भी देते रहते हैं। तो सहयोगी बनाना, सम्पर्क में लाना। जितना-जितना सम्पर्क में आयेंगे उतना ही सहयोगी स्वत: ही बनते जाते हैं और जितनी सेवा फैलती जाती है तो उल्टा-सुल्टा वायुमण्डल उसमें दब जाता है। तो अच्छी बात है। बापदादा प्रोजेक्ट के बारे में पहले ही मुबारक दे रहे हैं। अच्छा।

बाकी डबल विदेशी चाहे मीटिंग वाले, चाहे ग्रुप्स में आने वाले सभी को बापदादा बहुत-बहुत स्नेह सम्पन्न मुबारक दे रहे हैं। अच्छी हिम्मत रखते हैं। बापदादा ने सेवा का उमंग-उत्साह और हिम्मत इसमें रिजल्ट अच्छी देखी है। बाकी एड करना है – **'सेवा और स्व-उन्नति का बैलेन्स।'** सेवा अच्छी चल रही है और सेवा ही विघ्न-विनाशक बनी हुई है। तो सभी डबल फ़ारेनर्स को बापदादा सदैव यादप्यार देते हैं और सदा ही याद-प्यार साथ रहेगा। अच्छा।

महाराष्ट्र ज़ोन सेवा में आया है – अच्छा - आधा हाल तो महाराष्ट्र है। महाराष्ट्र में सेवा की वृद्धि अच्छी हो रही है। तो महाराष्ट्र ९ लाख जल्दी बना सकेगा। ऐसा है ना! ९ लाख बनाने में नम्बरवन लेंगे ना! अच्छा है। आप सबको भी खुशी होती है ना! अगर आपके परिवार में वृद्धि होती है तो खुश होते हो ना! और सब यही चाहते हैं कि जल्दी-जल्दी वृद्धि हो जाए। तो महाराष्ट्र वृद्धि कर रहा है और सभी ज़ोन भी ऐसे वृद्धि कर जल्दी-जल्दी सम्पन्न बन, सम्पूर्ण बन बाप के साथ चल सकेंगे। साथ चलना है, यह भूलना नहीं। बापदादा ने पहले भी कहा है कि प्यार से नहीं चलेंगे तो

जबरदस्ती भी ले चलेंगे! साथ नहीं चलेंगे तो पीछे-पीछे भी लेके चलेंगे। लेकिन मज़ा नहीं होगा। अच्छा।

चारों ओर के देश विदेश के साकार स्वरूप में या सूक्ष्म स्वरूप में मिलन मनाने वाले सर्व स्वराज्य अधिकारी आत्माओं को, सदा इस श्रेष्ठ अधिकार को अपने चलन और चेहरे से प्रत्यक्ष करने वाले विशेष आत्मायें, सदा बापदादा को हर कदम में फालो करने वाले, सदा मन को स्वच्छ और बुद्धि को क्लीयर रखने वाले ऐसे स्वतः तीव्र पुरुषार्थी आत्माओं को, सदा साथ रहने वाले और साथ चलने वाले डबल लाइट बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

समय के प्रमाण बापदादा हर एक बच्चे को
विघ्न-मुक्त, समस्या-मुक्त, मेहनत के
पुरुषार्थ-मुक्त देखने चाहते हैं।
बनना तो सबको है ही लेकिन बहुतकाल का
यह अभ्यास आवश्यक है।
ब्रह्मा बाबा का विशेष संस्कार देखा –
''तुरत दान महापुण्य''।

जन्मदिन की विशेष गिफ़्ट - शुभ भाव और प्रेम भाव को इमर्ज कर – क्रोध महाशत्रु पर विजयी बनो

आज बापदादा अपने जन्म के साथियों को, साथ-साथ सेवा के साथियों को देख हर्षित हो रहे हैं। आज आप सभी को भी बापदादा के अलौकिक जन्म, साथ में जन्म साथियों के जन्म-दिवस की खुशी है, क्यों? ऐसा न्यारा और अति प्यारा अलौकिक जन्म और किसी का भी हो नहीं सकता। ऐसा कभी भी नहीं सुना होगा कि बाप का जन्म-दिन भी वही और बच्चों का भी जन्म-दिवस वही। यह न्यारा और प्यारा अलौकिक हीरे तुल्य जन्म आज आप मना रहे हो। साथ-साथ सभी को यह भी न्यारा और प्यारा-पन स्मृति में है कि यह अलौकिक जन्म ऐसा विचित्र है जो स्वयं भगवान बाप बच्चों का मना रहे हैं। परम आत्मा बच्चों का, श्रेष्ठ आत्माओं का जन्म-दिवस मना रहे हैं। दुनिया में कहने मात्र कई लोग कहते हैं कि हमको पैदा करने वाला भगवान है, परम-आत्मा है। परन्तु न जानते हैं, न उसी स्मृति में चलते हैं। आप सभी अनुभव से कहते हो - हम परमात्म-वंशी हैं, ब्रह्मा-वंशी हैं। परम आत्मा हमारा जन्म-दिवस मनाते हैं। हम परमात्मा का जन्म-दिवस मनाते हैं।

आज सब तरफ़ से यहाँ पहुचे हैं किसलिए? मुबारक देने और मुबारक लेने के लिए। तो बापदादा विशेष अपने जन्म साथियों को मुबारक दे रहे हैं। सेवा के साथियों को भी मुबारक दे रहे हैं। मुबारक के साथ-साथ परम-प्रेम के मोती, हीरों, जवाहरों द्वारा वर्षा कर रहे हैं। प्रेम के मोती देखे हैं ना। प्रेम के मोतियों को जानते हो ना? फूलों की वर्षा, सोने की वर्षा तो सब करते हैं, लेकिन बापदादा आप सभी पर परम-प्रेम, अलौकिक-स्नेह के मोतियों की

वर्षा कर रहे हैं। एक गुणा नहीं, पद्म-पद्म-पद्म गुणा दिल से मुबारक दे रहे हैं। आप सब भी दिल से मुबारक दे रहे हैं, वह भी बापदादा के पास पहुँच रही है। तो आज मनाने का और मुबारक का दिन है। मनाने के समय क्या करते हो? बैण्ड बजाते हो। तो बापदादा सभी बच्चों के मन के ख़ुशी की बैण्ड कहो, बाजे, गाने सुन रहे हैं। भक्त लोग पुकारते रहते हैं और आप बच्चे बाप के प्यार में समा जाते हो। समा जाना आता है ना? यह समा जाना ही समान बनाता है।

बापदादा बच्चों को अपने से अलग नहीं कर सकते। बच्चे भी अलग होने चाहते नहीं हैं लेकिन कभी-कभी माया के खेल-खेल में थोड़ा सा किनारा कर लेते हैं। **बापदादा कहते हैं – मैं तुम बच्चों का सहारा हूँ**, लेकिन बच्चे नटखट होते हैं ना। माया नटखट बना देती है, हैं नहीं, माया बना देती है। तो सहारा से किनारा करा लेती है। फिर भी बापदादा सहारा बन समीप ले आते हैं। बापदादा सभी बच्चों से पूछते हैं कि हर एक – जीवन में क्या चाहता है? फ़ॉरेनर्स दो बातों को बहुत पसन्द करते हैं। डबल फ़ॉरेनर्स के फेवरेट दो शब्द कौन से हैं? *(कम्पैनियन और कम्पनी)* यह दोनों पसन्द हैं। अगर पसन्द हैं तो एक हाथ उठाओ। भारत वालों को पसन्द हैं? कम्पैनियन भी ज़रूरी है और कम्पनी भी ज़रूरी है। कम्पनी बिना भी नहीं रह सकते और कम्पैनियन बिना भी नहीं रह सकते। तो आप सबको क्या मिला है? कम्पैनियन मिला है? बोलो – हाँ जी या ना जी? (हाँ जी) कम्पनी मिली है? (हाँ जी) ऐसी कम्पनी और ऐसा कम्पैनियन सारे कल्प में मिला था? कल्प पहले मिला था? ऐसा कम्पैनियन जो कभी भी किनारा नहीं करता, कितना भी नटखट हो जाओ लेकिन वह फिर भी सहारा ही बनता है। और जो आपके दिल की प्राप्तियां हैं, वह सर्व प्राप्तियां पूर्ण करता है। कोई अप्राप्ति है? सबकी दिल कहती है या मर्यादा-पूर्वक 'हाँ' कहते हो? गाते तो हो – जो पाना था वह पा लिया, या पाना है? पा लिया? अभी पाने का कुछ नहीं है या थोड़ी-थोड़ी आशायें रह गई हैं? सब आशायें पूरी हो गई हैं या रह गई हैं?

बापदादा कहता है रह गई हैं। *(बाप को प्रत्यक्ष करने की आशा रह गई है)* यह तो बाप की आशा है कि सभी बच्चों को मालूम पड़ जाए कि बाप आया है और कोई रह न जाये!.... तो यह बापदादा की विशेष आशा है कि सभी को कम से कम मालूम तो पड़ जाए कि हमारा सदा का बाप आया है। लेकिन बच्चों की हद की और आशायें पूरी हो गई हैं, प्रेम की आशायें हैं। हर एक चाहता है - स्टेज पर आयें, यह आशा है? *(अब तो बाबा स्वयं सबके पास आते हैं)* यह भी आशा पूरी हो गई? सन्तुष्ट आत्मायें हैं, मुबारक हो क्योंकि सभी बच्चे समझदार हैं। समझते हैं कि जैसा समय वैसा स्वरूप बनाना ही है। इसलिए बापदादा भी ड्रामा के बंधन में तो है ना! तो सभी बच्चे हर समय अनुसार सन्तुष्ट हैं और सदा सन्तुष्टमणि बन चमकते रहते हैं। क्यों? आप स्वयं ही कहते हो - पाना था वो पा लिया। यह ब्रह्मा बाप के आदि अनुभव के बोल हैं, तो जो ब्रह्मा बाप के बोल वही सर्व ब्राह्मणों के बोल। तो बापदादा सभी बच्चों को यही रिवाइज करा रहे हैं कि सदा बाप के कम्पनी में रहो। बाप ने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया है। कहते भी हो कि बाप ही सर्व सम्बन्धी है। जब सर्व सम्बन्धी है तो जैसा समय वैसे सम्बन्ध को कार्य में क्यों नहीं लगाते! और यही सर्व सम्बन्ध का समय प्रति समय अनुभव करते रहो तो कम्पैनियन भी होगा, कम्पनी भी होगी। और कोई साथियों के तरफ़ मन और बुद्धि जा नहीं सकती। बापदादा आफ़र कर रहे हैं- **जब सर्व सम्बन्ध आफर कर रहे हैं तो सर्व सम्बन्धों का सुख लो। सम्बन्धों को कार्य में लगाओ।**

बापदादा जब देखते हैं - कोई-कोई बच्चे कोई-कोई समय अपने को अकेला वा थोड़ा-सा नीरस अनुभव करते हैं तो बापदादा को रहम आता है कि ऐसी श्रेष्ठ कम्पनी होते, कम्पनी को कार्य में क्यों नहीं लगाते? फिर क्या कहते? व्हाई-व्हाई (Why-Why) बापदादा ने कहा 'व्हाई' नहीं कहो, जब यह शब्द आता है, व्हाई निगेटिव है और पॉजिटिव है 'फ्लाई' (Fly), तो व्हाई-व्हाई कभी नहीं करना, फ्लाई याद रखो। बाप को साथ साथी बनाए

फ्लाई करो तो बड़ा मज़ा आयेगा। वह कम्पनी और कम्पैनियन दोनों रूप से सारा दिन कार्य में लाओ। ऐसा कम्पैनियन फिर मिलेगा? बापदादा इतने तक कहते हैं - अगर आप दिमाग से वा शरीर से दोनों प्रकार से थक भी जाओ तो कम्पैनियन आपकी दोनों प्रकार से मालिश करने के लिए भी तैयार है। मनोरंजन कराने लिए भी एवररेडी हैं। फिर हद के मनोरंजन की आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। ऐसा यूज़ करना आता है वा समझते हो बड़े-से-बड़ा बाबा है, टीचर है, सतगुरु है....? लेकिन सर्व सम्बन्ध हैं। समझा - डबल विदेशियों ने?

अच्छा - सभी बर्थ डे मनाने आये हो ना! मनाना है ना! अच्छा जब बर्थ डे मनाते हो, तो जिसका बर्थ डे मनाते हो उसको गिफ्ट देते हो या नहीं देते हो? *(देते हैं)* तो आज आप सब बाप का बर्थ डे मनाने आये हो। नाम तो शिवरात्रि है, तो बाप का खास मनाने आये हो। मनाने आये हो ना? तो बर्थ डे की आज की गिफ़्ट क्या दी? या सिर्फ मोमबत्ती जलायेंगे, केक काटेंगे... यही मनायेंगे? आज क्या गिफ़्ट दी? या कल देंगे? चाहे छोटी दो, चाहे मोटी दो, लेकिन गिफ़्ट तो देते हैं ना! तो क्या दी? सोच रहे हैं। अच्छा देनी है? देने के लिए तैयार हो? जो बापदादा कहेगा वह देंगे या आप अपनी इच्छा से देंगे? क्या करेंगे? जो बापदादा कहेंगे वह देंगे या अपनी इच्छा से देंगे? *(जो बापदादा कहेंगे वह देंगे)* देखना, थोड़ी हिम्मत रखनी पड़ेगी। हिम्मत है? मधुबन वाले हिम्मत है? डबल फ़ारेनर्स में हिम्मत है? हाथ तो बहुत अच्छा उठा रहे हैं। अच्छा - शक्तियों में, पाण्डवों में हिम्मत है? भारत वालों में हिम्मत है? बहुत अच्छा। यही बाप को मुबारक मिल गई। अच्छा - सुनायें। यह तो नहीं कहेंगे कि यह तो सोचना पड़ेगा? गा-गा नहीं करना। एक बात बापदादा ने मैजारिटी में देखी है। मैनारिटी नहीं मैजारिटी। क्या देखा? जब कोई सरकमस्टांश सामने आता है तो मैजारिटी में एक, दो, तीन नम्बर में क्रोध का अंश, न चाहते भी इमर्ज हो जाता है। कोई में महान क्रोध के रूप में होता, कोई में जोश के रूप में होता, कोई में तीसरा नम्बर चिड़चिड़ेपन रूप

में होता है। चिड़चिड़ापन समझते हो? वह भी है क्रोध का ही अंश, हल्का है। तीसरा नम्बर है ना तो वह हल्का है। **पहला ज़ोर से है, दूसरा उससे थोड़ा।** फिर भाषा तो आजकल सबकी रॉयल हो गई है। तो रॉयल रूप में क्या कहते हैं? बात ही ऐसी है ना, जोश तो आयेगा ही। तो आज बापदादा सभी से यह गिफ्ट लेने चाहते हैं कि – क्रोध तो छोड़ो लेकिन क्रोध का अंश मात्र भी नहीं रहे। क्यों? क्रोध में आकर डिस-सर्विस करते हैं क्योंकि क्रोध होता है दो के बीच में। अकेला नहीं होता है, दो के बीच में होता है तो दिखाई देता है। चाहे मन्सा में भी किसके प्रति घृणा भाव का अंश भी होता है तो मन में भी उस आत्मा के प्रति जोश ज़रूर आता है। तो बापदादा को यह डिस-सर्विस का कारण अच्छा नहीं लगता है। तो क्रोध का भाव अंश मात्र भी उत्पन्न न हो। **जैसे ब्रह्मचर्य के ऊपर अटेन्शन देते हो, ऐसे ही काम महाशत्रु, क्रोध महाशत्रु गाया हुआ है। शुभ-भाव, प्रेम-भाव वह इमर्ज नहीं होता है। फिर मूड ऑफ कर देंगे। उस आत्मा से किनारा कर देंगे। सामने नहीं आयेंगे, बात नहीं करेंगे। उसकी बातों को ठुकरायेंगे। आगे बढ़ने नहीं देंगे।** यह सब मालूम बाहर वालों को भी पड़ता है फिर भले कह देते हैं, आज इसकी तबियत ठीक नहीं है, बाकी कुछ नहीं है। तो क्या जन्म-दिवस की यह गिफ़्ट दे सकते हो? जो समझते हैं कोशिश करेंगे, वह हाथ उठाओ। सौगात देने के लिए सोचेंगे, कोशिश करेंगे वह हाथ उठाओ। सच्ची दिल पर भी साहेब राज़ी होता है। *(कई भाई-बहनें खड़े हुए)* धीरे-धीरे उठ रहे हैं। सच बोलने की मुबारक हो। अच्छा जिन्होंने कहा कोशिश करेंगे, ठीक है कोशिश भले करो लेकिन कोशिश के लिए कितना समय चाहिए? एक मास चाहिए, ६ मास चाहिए, कितना चाहिए? छोड़ेंगे या छोड़ने का लक्ष्य ही नहीं है? जिन्होंने कहा कोशिश करेंगे वह फिर से उठो। जो समझते हैं कि हम दो तीन मास में कोशिश करके छोड़ेंगे वह बैठ जाओ। और जो समझते हैं ६ मास चाहिए, अगर ६ मास पूरा लगे भी तो कम करना, इस बात को छोड़ना नहीं क्योंकि यह बहुत ज़रूरी है। यह डिस-सर्विस दिखाई देती है। मुख से नहीं बोलो, शक्ल बोलती है। इसलिए जिन्होंने हिम्मत रखी है उन सब पर बापदादा ज्ञान, प्रेम, सुख, शान्ति के

मोतियों की वर्षा कर रहे हैं। अच्छा।

बापदादा रिटर्न सौगात में यह विशेष सभी को वरदान दे रहे हैं - जब भी गलती से भी, न चाहते हुए भी कभी क्रोध आ भी जाए तो सिर्फ दिल से – ''मीठा बाबा'' शब्द कहना, तो बाप की एक्स्ट्रा मदद हिम्मत वालों को अवश्य मिलती रहेगी। मीठा बाबा कहना, सिर्फ बाबा नहीं कहना, ''**मीठा बाबा**'' तो मदद मिलेगी, ज़रूर मिलेगी क्योंकि लक्ष्य रखा है ना। तो लक्ष्य से लक्षण आने ही हैं। मधुबन वाले हाथ उठाओ। अच्छा - करना ही है ना! *(हाँ जी)* मुबारक हो। बहुत अच्छा। आज खास मधुबन वालों को टोली देंगे। मेहनत बहुत करते हैं। क्रोध के लिए नहीं देते हैं, मेहनत के लिए देते हैं। सभी समझेंगे हाथ उठाया है, इसलिए टोली देते हैं। मेहनत बहुत अच्छी करते हैं। सबको सेवा से सन्तुष्ट करना, यह तो मधुबन का एक्जैम्पुल है। इसलिए आज मुख मीठा करायेंगे। आप सब इन्हों का मुख मीठा देख, मीठा मुख कर लेना, खुशी होगी ना। यह भी एक ब्राह्मण परिवार का कल्चर है। आजकल आप लोग 'कल्चर आफ पीस' का प्रोग्राम बना रहे हो ना। तो यह भी फर्स्ट नम्बर का कल्चर है -''**ब्राह्मण कुल की सभ्यता**''। बापदादा ने देखा है, यह दादी जब सौगात देती है ना, उसमें एक बोरी का थैला होता है। उसमें लिखत होती है -''कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो''। तो आज बापदादा यह सौगात दे रहे हैं, बोरी वाला थैला नहीं देते, वरदान में यह शब्द देते हैं। हर एक ब्राह्मण के चेहरे और चलन में ब्राह्मण कल्चर प्रत्यक्ष हो। प्रोग्राम तो बनायेंगे, भाषण भी करेंगे लेकिन पहले स्व में यह सभ्यता आवश्यक है। हर एक ब्राह्मण मुस्कराता हुआ हर एक से सम्पर्क में आये। कोई से कैसा, कोई से कैसा नहीं। किसको देखकर अपना कल्चर नहीं छोड़ो। बीती बातें भूल जाओ। नये संस्कार सभ्यता के जीवन में दिखाओ। अभी दिखाना है, ठीक है ना! (सभी ने कहा – हाँ जी)

यह बहुत अच्छा है, डबल फ़ॉरेनर्स मैजारिटी 'हाँ जी' करने में बहुत अच्छे हैं। अच्छा है - भारतवासियों की तो एक मर्यादा ही है - ''हाँ जी

करना।'' सिर्फ माया को 'ना जी' करो, बस और आत्माओं को हाँ जी, हाँ जी करो। माया को ना-जी, ना-जी करो। अच्छा। सभी ने जन्म दिवस मना लिया? मनाया, गिफ़्ट दे दी, गिफ़्ट ले ली।

अच्छा - आपके साथ-साथ और भी जगह-जगह पर सभायें लगी हुई हैं। कहाँ छोटी सभायें हैं, कहाँ बड़ी सभायें हैं, सभी सुन रहे हैं, देख रहे हैं। उन्हों को भी बापदादा यही कहते कि आज के दिन की आप सबने भी सौगात दी या नहीं? सब कह रहे हैं, हाँ जी बाबा। अच्छे हैं, दूर बैठे भी जैसे सामने ही सुन रहे हैं क्योंकि साइन्स वाले जो इतनी मेहनत करते हैं, मेहनत तो बहुत करते हैं ना। तो सबसे ज़्यादा फायदा ब्राह्मणों को होना चाहिए ना! इसलिए जब से संगमयुग आरम्भ हुआ है तब से यह साइन्स के साधन भी बढ़ते जा रहे हैं। सतयुग में तो आपके देवता रूप में यह साइन्स सेवा करेगी लेकिन संगमयुग में भी साइन्स के साधन आप ब्राह्मणों को मिल रहे हैं और सेवा में भी, प्रत्यक्षता करने में भी यह साइन्स के साधन बहुत विशाल रूप से सहयोगी बनेंगे। इसलिए साइन्स के निमित्त बनने वाले बच्चों को भी बापदादा मेहनत की मुबारक देते हैं।

बाकी बापदादा ने देखा मधुबन में भी देश-विदेश से बहुत शोभनिक-शोभनिक कार्ड, पत्र और कोई द्वारा यादप्यार मैसेज भेजे हैं। बापदादा उन्हों को भी विशेष यादप्यार और जन्म दिवस की पदम-पदम-पदम-पदम-पदम गुणा मुबारक दे रहे हैं। सब बच्चे बापदादा के नयनों के सामने आ रहे हैं। आप लोगों ने तो सिर्फ कार्ड देखे, लेकिन बापदादा बच्चों को भी नयनों से देख रहे हैं। बहुत स्नेह से भेजते हैं और उसी स्नेह से बापदादा ने स्वीकार किया है। कईयों ने अपनी अवस्थायें भी लिखी हैं तो बापदादा कहते हैं – उड़ो और उड़ाओ। उड़ने से सब बातें नीचे रह जायेंगी और आप सदा ऊँचे ते ऊँचे बाप के साथ ऊँचे रहेंगे। सेकण्ड में स्टॉप और स्टॉक शक्तियों का, गुणों का इमर्ज करो। अच्छा।

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मायें, सदा बाप के कम्पनी में रहने

वाले, बाप को कम्पैनियन बनाने वाले स्नेही आत्मायें, सदा बाप के गुणों के सागर में समाने वाले समान बापदादा की श्रेष्ठ आत्मायें, सदा सेकण्ड में बिन्दी लगाने वाले मास्टर सिन्धु स्वरूप आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और बहुत-बहुत मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो। नमस्ते तो बापदादा हर समय, हर बच्चे को करते हैं, आज भी नमस्ते।

एज्युकेशन विंग – एज्युकेशन वाले हाथ उठाओ। एज्युकेशन वाले अपनी श्रेष्ठ एज्युकेशन समय प्रति समय प्रत्यक्ष कर रहे हैं और करते रहना क्योंकि ऐसी एज्युकेशन जो मानव को ऐसा श्रेष्ठ बनावे जो एक जन्म नहीं लेकिन अनेक जन्म के लिए आत्मा को कोई अप्राप्ति नहीं रहे। आजकल की एज्युकेशन, एज्युकेट तो बना देती लेकिन सर्व जीवन की प्राप्तियां एक जन्म के लिए भी नहीं करा सकती। कोई भी स्टूडेन्ट को यह गैरन्टी नहीं कि पढ़ाई के बाद भविष्य क्या! लेकिन आप उन्हों को स्पष्ट कर सकते हो कि इस एज्युकेशन से क्या गैरन्टी है, प्राप्तियों की। एक जन्म की नहीं लेकिन जन्म-जन्म के लिए। इसलिए स्टूडेन्ट्स को उमंग और हिम्मत की बातें बताकर इस एज्युकेशन के महत्त्व को स्पष्ट करो। वर्तमान क्या मिलता है और भविष्य क्या मिलता है - दोनों ही स्पष्ट कर सकते हैं और कितनी सरल एज्युकेशन है। कम खर्चा बालानशीन की एज्युकेशन है। ऐसे हिम्मत और खुशी की बातें बताओ। समझा। अच्छा।

यूथ विंग – यूथ विंग वाले हाथ उठाओ। आप लोग तो गीत गाते हो कि यूथ की क्या-क्या ज़िम्मेवारी है। गीत बना हुआ है ना! यूथ का विशेष विश्व-परिवर्तन में विशेष पार्ट है क्योंकि आलमाइटी गवर्मेन्ट और आज की गवर्मेन्ट दोनों को यूथ में बहुत उम्मीदें हैं। इसलिए यूथ परिवर्तन का स्तम्भ बन सकते हैं। बहुत करके यूथ जब कोई कार्य करते हैं तो मशाल आगे लेकर आरम्भ करते हैं। तो आप ब्राह्मण यूथ अपने चलन और चेहरे में ऐसा मशाल दिखाओ जो सबकी नज़र न चाहते भी आपके ऊपर ही आवे। अभी जहाँ-जहाँ भी यूथ ने सेवा की है, वहाँ के सहयोगी वा सम्पर्क वाले ग्रुप को

इकट्ठा करो। पहले एक-एक शहर में करो, फिर ज़ोन में करो। फिर ऐसा ग्रुप आबू में लाना। तो सेवा का प्रत्यक्ष स्वरूप संगठन में दिखाई दे। समझा। अच्छा।

पंजाब के सेवाधारी – अच्छा है यह सेवा का चांस, बेहद की कारोबार सिखाता है। सतयुग में राजधानी सम्भालेंगे तो सम्भालने का अभ्यास तो यहाँ ही डालना है ना। तो हर एक ज़ोन को यह अच्छा चांस मिलता है। ब्राह्मणों को सेवा से सन्तुष्ट करने का और सन्तुष्टता से दुआयें जमा करने का। तो अनुभव किया पंजाब वालों ने? सम्भालने का अनुभव होता जाता है ना! बेहद का सम्भालना। सेन्टर पर तो हद का हो जाता है ना। बेहद का राज्य सम्भालना है, उसके संस्कार भरते जाते हैं। सेवा के साथ-साथ राज्य चलाने की ट्रेनिंग भी मिलती रहती है। समीप भी आते हैं। सेवा से समीपता स्वत: ही आती है। तो बहुत अच्छा किया और सदा ही अच्छे ते अच्छा होना ही है। ठीक है ना - पंजाब वाले। टीचर्स हाथ उठाओ। अच्छा लगा ना। पंजाब के सेवाधारी हाथ उठाओ। सेवाधारी मातायें हाथ उठाओ। बहुत अच्छा।

डबल विदेशी – आज की सभा में डबल विदेशियों का ग्रुप भी बड़ा है और सामने भी बैठे हैं। नाम ही डबल विदेशी है। तो अपना ओरीज्नल विदेश, तो डबल विदेशी नाम सुनने से ही याद आता। जब और भी कोई आप सभी को डबल विदेशी कहते हैं तो उन्हों को भी याद आता और आप सबको तो है ही। डबल विदेशियों को बापदादा सदा मैजारिटी को हिम्मत में और साफ दिल में आगे रखते हैं। कुछ भी हो जाता लेकिन हिम्मत रख आगे बढ़ रहे हैं और बढ़ते रहेंगे। **बापदादा को सबसे समीप रत्न वही लगता है जिसमें सफाई और सच्चाई है। दिल साफ़ और सच्ची है तो वह बच्चे चाहे कितना भी दूर हों लेकिन वह सबसे समीप बापदादा के दिल पर रहते हैं। इसलिए इस विशेषता को सदा ही सामने रख अपनी विशेषता को बढ़ाते रहना। यह समीप आने का बहुत सहज साधन है। वैसे तो सभी के लिए है, भारतवासियों के लिए भी है। लेकिन डबल विदेशियों में मैजारिटी में यह विशेषता है, अब इसी विशेषता को अपने में भी बढ़ाओ और बढ़ाते-बढ़ाते समीप आते-आते समान बन ही जाना है।**

ठीक है ना!

बापदादा सदा अमृतवेले वरदानों की झोली ले चारों तरफ़ चक्कर लगाते हैं। अच्छा। डबल विदेशी बच्चों को विशेष हिम्मत में आगे बढ़ने की और जन्म-दिन की डबल मुबारक।

बापदादा ने अपने हस्तों से झण्डा लहराया, ६४ वीं शिवजयन्ति निमित्त ६४ मोमबत्ती जलाई तथा सभी बच्चों को शिव जयन्ती की बधाईयां दी

सभी ने अपनी बर्थ डे भी मनाई, झण्डा भी लहराया। अभी हर एक आत्मा के दिल में यह झण्डा लहराना। आप सबके दिलों में तो बाप का झण्डा लहराता रहता है, अभी विश्व कहे – ''मेरा बाबा'', यह आवाज़, जैसे नगाड़ा बजता है तो बुलन्द आवाज़ से बजता है। ऐसे ही – ''मेरा बाबा'' यह नगाड़ा ज़ोर-शोर से बजे। यही सभी बच्चों के दिल की आश है। होना ही है। अनेक बार हुआ है, अब फिर से रिपीट होना ही है। उस दिन सभी मिलकर कौन सा गीत गायेंगे? – वाह बाबा वाह! और वाह ड्रामा वाह! सबके दिल में बाबा, बाबा और बाबा ही होगा। दिखाई दे रहा है ना - वह दिन! दिखाई देता है? वह दिन आया कि आया। सभी को मुबारक तो मिल गई है। आप सबको मुबारक है ही और सर्व को इस दिवस की मुबारक दिलानी है। अवतरण-दिवस, जन्म-दिवस, परिवर्तन-दिवस, प्रत्यक्षता-दिवस आना ही है। अच्छा। सबको आज के दिवस की गोल्डन नाईट, डायमण्ड नाईट। अच्छा – ओमशान्ति।

बाप ने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कराया है। कहते भी हो कि बाप ही सर्व सम्बन्धी है। जब सर्व सम्बन्धी है तो जैसा समय वैसे सम्बन्ध को कार्य में क्यों नहीं लगाते! और यही सर्व सम्बन्ध का समय प्रति समय अनुभव करते रहो तो कम्पैनियन भी होगा, कम्पनी भी होगी। और कोई साथियों के तरफ मन और बुद्धि जा नहीं सकती।

19-3-2000

निर्माण और निर्मान के बैलेन्स से दुआओं का खाता जमा करो

आज बापदादा अपने 'होली-हैपी-हंसों' की सभा में आये हैं। चारों ओर होली हंस दिखाई दे रहे हैं। होलीहंसों की विशेषता को सभी अच्छी तरह से जानते हो। 'सदा होली हैपी हंस अर्थात् स्वच्छ और साफ़ दिल।' ऐसे होलीहंसों की स्वच्छ और साफ़ दिल होने के कारण हर शुभ आशायें सहज पूर्ण होती हैं। सदा तृप्त आत्मा रहते हैं। श्रेष्ठ संकल्प किया और पूर्ण हुआ। मेहनत नहीं करनी पड़ती। क्यों? बापदादा को सबसे प्रिय, सबसे समीप साफ दिल प्यारे हैं। साफ दिल सदा बापदादा के दिलतख्त नशीन, सर्व श्रेष्ठ संकल्प पूर्ण होने के कारण वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं। **सरलता की निशानी है - दिल, दिमाग, बोल एक समान।** दिल में एक, बोल में और (दूसरा) - यह सरलता की निशानी नहीं है। **सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। होलीहंस की विशेषता – सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।**

बापदादा इस वर्ष में सभी बच्चों में दो विशेषतायें 'चलन और चेहरे' में देखने चाहते हैं। सभी पूछते हैं ना – आगे क्या करना है? इस सीज़न के विशेष समाप्ति के बाद क्या करना है? सभी सोचते हो ना - आगे क्या होना है! आगे क्या करना है! सेवा के क्षेत्र में तो यथाशक्ति मैजारिटी ने बहुत अच्छी प्रगति की है, आगे बढ़े हैं। बापदादा इस उन्नति के लिए मुबारक भी देते हैं - बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा। साथ-साथ रिज़ल्ट में एक बात दिखाई दी, क्या वह सुनायें? टीचर्स सुनायें, डबल फ़ारेनर्स सुनायें? पाण्डव सुनायें? हाथ उठाओ तभी सुनायेंगे, नहीं तो नहीं सुनायेंगे। *(सभी ने हाथ उठाया)* बहुत अच्छा। एक बात क्या देखी? क्योंकि आज वतन में बापदादा की आपस में रूह-रूहान थी, कैसे रूह-रूहान करेंगे? दोनों कैसे एक दो में रूह-रूहान करेंगे? जैसे यहाँ इस दुनिया में आप लोग 'मोनोएक्टिंग'

करते हो ना! बहुत अच्छी-अच्छी करते हो। तो आप लोंगो की साकारी दुनिया में तो एक आत्मा दो पार्ट बजाती है और बापदादा दो आत्मायें एक शरीर है। फर्क हुआ ना! तो बहुत मजे की बात होती है।

तो आज वतन में बापदादा की रूहरिहान चली - किस बात पर? आप सब जानते हो कि ब्रह्मा बाप को उमंग क्या होता है? जानते हो ना अच्छी तरह से? ब्रह्मा बाप का उमंग था - जल्दी-से-जल्दी हो। तो शिव बाप ने कहा ब्रह्मा बाप को - विनाश वा परिवर्तन करना तो एक ताली भी नहीं, चपटी *(चुटकी)* बजाने की बात है। लेकिन आप पहले १०८ नहीं, आधी माला बनाकर दो। तो ब्रह्मा बाप ने क्या उत्तर दिया होगा? बताओ। *(तैयार हो रहे हैं)* अच्छा - आधी माला भी तैयार नहीं हुई है? पूरी माला की बात छोड़ो, आधी माला तैयार हुई है? *(सभी हँस रहे हैं)* हँसना माना कुछ है! जो बोलते हैं आधी माला तैयार है, वह एक हाथ उठाओ। तैयार हुई है? बहुत थोड़े हैं। जो समझते हैं कि हो रही है, वह हाथ उठाओ। मैजारिटी कहते हैं हो रही है और मैनारिटी कहते हैं हो गई है। जिन्होंने हाथ उठाया है कि तैयार हुई है, उनको बापदादा कहते हैं आप नाम लिखकर देना। अच्छी बात है ना! बापदादा ही देखेंगे और कोई नहीं देखेंगे, बंद होगा। बापदादा देखेंगे कि ऐसे अच्छे उम्मींदवार रत्न कौन-कौन हैं। बापदादा भी समझते हैं होने चाहिए। तो इनसे नाम लेना, इनका फोटो निकालो।

तो ब्रह्मा बाप ने क्या जवाब दिया? आप सबने तो अच्छे-अच्छे जवाब दिये। ब्रह्मा बाप ने कहा तो बस सिर्फ इतनी देरी है जो आप चपटी बजायेंगे, वह तैयार हो जायेंगे। तो अच्छी बात हुई ना! तो शिव बाप ने कहा – अच्छा, सारी माला तैयार है? आधी माला का तो जवाब मिला, सारी माला के लिए पूछा। उसमें कहा थोड़ा टाइम चाहिए। यह रूह-रूहान चली। क्यों थोड़ा टाइम चाहिए? रूह-रूहान में तो प्रश्न-उत्तर ही चलता है ना। क्यों थोड़ा टाइम चाहिए? कौन-सी विशेष कमी है जिसके कारण आधी माला भी रुकी हुई है? तो चारों ओर के बच्चे हर एरिया, एरिया के इमर्ज करते गये, जैसे

आपके जोन हैं ना, ऐसे ही एक-एक जोन नहीं, ज़ोन तो बहुत-बहुत बड़े हैं ना। तो एक-एक विशेष शहर को इमर्ज करते गये और सबके चेहरे देखते गये, देखते-देखते ब्रह्मा बाप ने कहा कि एक विशेषता अभी जल्दी-से-जल्दी सभी बच्चे धारण कर लेंगे तो माला तैयार हो जायेगी। कौन सी विशेषता? तो यही कहा कि जितनी सर्विस में उन्नति की है, सर्विस करते हुए आगे बढ़े हैं। अच्छे आगे बढ़े हैं लेकिन एक बात का बैलेन्स कम है। वह यही बात कि निर्माण करने में तो अच्छे आगे बढ़ गये हैं लेकिन निर्माण के साथ निर्मान - वह है **निर्माण और वह है निर्मान।** मात्रा का अन्तर है। लेकिन निर्माण और निर्मान दोनों के बैलेन्स में अन्तर है। सेवा की उन्नति में निर्मानता के बजाए कहाँ-कहाँ, कब-कब स्व-अभिमान भी मिक्स हो जाता है। जितना सेवा में आगे बढ़ते हैं, उतना ही वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, चाल में निर्मानता दिखाई दे, इस बैलेन्स की अभी बहुत आवश्यकता है। अभी तक जो सभी सम्बन्ध-सम्पर्क वालों से ब्लैसिंग मिलनी चाहिए वह ब्लैसिंग नहीं मिलती है। और पुरुषार्थ कोई कितना भी करता है, अच्छा है लेकिन पुरुषार्थ के साथ अगर दुआओं का खाता जमा नहीं है तो दाता-पन की स्टेज, रहमदिल बनने की स्टेज की अनुभूति नहीं होगी। **आवश्यक है - स्व पुरुषार्थ और साथ-साथ बापदादा और परिवार के छोटे-बड़ों की दुआयें।** यह दुआयें जो हैं - यह पुण्य का खाता जमा करना है। यह मार्क्स में एडीशन होती है। कितनी भी सर्विस करो, अपनी सर्विस की धुन में आगे बढ़ते चलो, लेकिन बापदादा सभी बच्चों में यह विशेषता देखने चाहते हैं कि सेवा के साथ **निर्मानता, मिलनसार - यह पुण्य का खाता जमा होना बहुत-बहुत आवश्यक है। फिर नहीं कहना कि मैंने तो बहुत सर्विस की, मैंने तो यह किया, मैने तो यह किया, मैने तो यह किया, लेकिन नम्बर पीछे क्यों? इसलिए बापदादा पहले से ही इशारा देते हैं कि वर्तमान समय यह पुण्य का खाता बहुत-बहुत जमा करो।** ऐसे नहीं सोचो - यह तो है ही ऐसा, यह तो बदलना नहीं है। जब प्रकृति को बदल सकते हो, एडजेस्ट करेंगे ना प्रकृति को? तो क्या ब्राह्मण आत्मा को एडजेस्ट नहीं कर सकते हो? अगेन्स्ट को एडजेस्ट करो, यह है – निर्माण और निर्मान

का बैलेन्स। सुना!

लास्ट में होमवर्क तो देंगे ना! कुछ तो होम वर्क मिलेगा ना! तो बापदादा आने वाली सीज़न में आयेगा लेकिन.... कन्डीशन डालेगा। देखो साकार का पार्ट भी चला, अव्यक्त पार्ट भी चला, इतना समय अव्यक्त पार्ट चलने का स्वप्न में भी नहीं था। तो दोनों पार्ट ड्रामानुसार चले। अब कोई तो कन्डीशन डालनी पड़ेगी या नहीं! क्या राय है? क्या ऐसे ही चलता रहेगा? क्यों? आज वतन में प्रोग्राम भी पूछा। तो बापदादा की रूहरिहान में यह भी चला कि यह ड्रामा का पार्ट कब तक? क्या कोई डेट है? (देहरादून की प्रेम बहन से) जन्म-पत्री सुनाओ, कब तक? अभी यह क्वेश्चन उठा है, कब तक? तो लेकिन.... के लिए ६ मास तो हैं ही ना! ६ मास के बाद ही दूसरी सीजन शुरू होती है। **तो बापदादा रिज़ल्ट देखने चाहते हैं। दिल साफ़, कोई भी दिल में पुराने संस्कार का, अभिमान-अपमान की महसूसता का दाग नहीं हो।**

बापदादा के पास भी दिल का चित्र निकालने की मशीनरी है। यहाँ एक्सरे में यह स्थूल दिल दिखाई देता है ना। तो वतन में दिल का चित्र बहुत स्पष्ट दिखाई देता है। कई प्रकार के छोटे-बड़े दाग, ढीले स्पष्ट दिखाई देते हैं।

आज होली मनाने आये हो ना! लास्ट टर्न होने के कारण पहले होम-वर्क बता दिया लेकिन होली का अर्थ औरों को भी सुनाते हो कि होली मनाना अर्थात् बीती सो बीती करना। होली मनाना अर्थात् दिल में कोई भी छोटा-बड़ा दाग नहीं रहना, बिल्कुल साफ़ दिल, सर्व प्राप्ति सम्पन्न। बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि बापदादा का बच्चों से प्यार होने के कारण एक बात अच्छी नहीं लगती। वह है - मेहनत बहुत करते हैं। **अगर दिल साफ़ हो जाए तो मेहनत नहीं, दिलाराम दिल में समाया रहेगा और आप दिलाराम के दिल में समाये हुए रहेंगे। दिल में बाप समाया हुआ है। किसी भी रूप की माया, चाहे सूक्ष्म रूप हो, चाहे रॉयल रूप हो, चाहे मोटा रूप हो, किसी भी रूप से माया आ नहीं सकती। स्वप्न मात्र, संकल्प मात्र भी माया आ नहीं सकती।** तो मेहनत मुक्त हो जायेंगे ना! बापदादा मन्सा में भी मेहनत मुक्त देखने चाहते हैं। मेहनत मुक्त ही जीवनमुक्त का अनुभव कर सकते हैं। होली मनाना माना मेहनत मुक्त,

जीवनमुक्त अनुभूति में रहना। अब बापदादा मन्सा शक्ति द्वारा सेवा को शक्तिशाली बनाने चाहते हैं। वाणी द्वारा सेवा चलती रही है, चलती रहेगी, लेकिन इसमें समय लगता है। समय कम है, सेवा अभी भी बहुत है। रिजल्ट आप सबने सुनाई। अभी तक 16108 की माला भी निकाल नहीं सकते। 16 हजार, 9 लाख - यह तो बहुत दूर हो गये। इसके लिए फास्ट विधि चाहिए। पहले अपनी मन्सा को श्रेष्ठ, स्वच्छ बनाओ, एक सेकण्ड भी व्यर्थ नहीं जाये। अभी तक मैजारिटी के वेस्ट संकल्प की परसेन्टेज़ रही हुई है। अशुद्ध नहीं लेकिन वेस्ट हैं इसलिए मन्सा सेवा फास्ट गति से नहीं हो सकती। अभी होली मनाना अर्थात् मन्सा को, व्यर्थ से भी होली बनाना।

होली मनाई? मनाना अर्थात् बनना। दुनिया वाले तो भिन्न-भिन्न रंगों से होली मनाते हैं लेकिन बापदादा सब बच्चों के ऊपर दिव्य गुणों के, दिव्य शक्तियों के, ज्ञान गुलाब के रंग डाल रहे हैं।

आज वतन में और भी समाचार था। एक तो सुनाया - रूहरिहान का। दूसरा यह था कि जो भी आपके अच्छे-अच्छे सेवा साथी एडवांस पार्टी में गये हैं, उन्हों का आज वतन में होली मनाने का दिन था। आप सबको भी जब कोई मौका होता है तो याद तो आती है ना। अपनी दादियों की, सखियों की, पाण्डवों की याद तो आती है ना! बहुत बड़ा ग्रुप हो गया है एडवान्स पार्टी का। अगर नाम निकालो तो बहुत हैं। तो वतन में आज सब प्रकार की आत्मायें होली मनाने आई थी। सभी अपने-अपने पुरुषार्थ की प्रालब्ध प्रमाण भिन्न-भिन्न पार्ट बजा रहे हैं। एडवांस पार्टी का पार्ट अभी तक गुप्त है। आप सोचते हो ना - क्या कर रहे हैं? वह आप लोगों का आह्वान कर रहे हैं कि सम्पूर्ण बन दिव्य जन्म द्वारा नई सृष्टि के निमित्त बनो। सभी अपने पार्ट में खुश हैं। यह स्मृति नहीं है कि हम संगमयुग से आये हैं। दिव्यता है, पवित्रता है, परमात्म लगन है, लेकिन ज्ञान क्लीयर इमर्ज नहीं है। न्यारापन है, लेकिन अगर ज्ञान इमर्ज हो जाए तो सभी भाग करके मधुबन में तो आ जायें ना! लेकिन इन्हों का पार्ट न्यारा है, ज्ञान की शक्ति है। शक्ति कम नहीं हुई है।

निरन्तर मर्यादा पूर्वक घर का वातावरण, माँ-बाप की सन्तुष्टता और स्थूल साधन भी सब प्राप्त हैं। मर्यादा में बहुत पक्के हैं। नम्बरवार तो हैं लेकिन विशेष आत्मायें पक्के हैं। महसूस करते हैं कि हमारा पूर्व-जन्म और पुनर्जन्म महान रहा है और रहेगा। फीचर्स भी सभी के मैजारिटी एक रॉयल फैमली की तृप्त आत्मायें, भरपूर आत्मायें, हर्षित आत्मायें और दिव्य गुण सम्पन्न आत्मायें दिखाई देते हैं। यह तो हुई उन्हों की हिस्ट्री, लेकिन वतन में क्या हुआ? होली कैसे मनाई? आप लोगों ने देखा होगा कि होली में भिन्न-भिन्न रंगों के, सूखे रंग, थालियां भरकर रखते हैं। तो वतन में भी जैसे सूखा रंग होता है ना - ऐसे बहुत महीन चमकते हुए हीरे थे लेकिन बोझ वाले नहीं थे, जैसे रंग को हाथ में उठाओ तो हल्का होता है ना! ऐसे भिन्न-भिन्न रंग के हीरों की थालियां भरी हुई थी। तो जब सब आ गये, तो वतन में स्वरूप कौन सा होता है, जानते हो? लाइट का ही होता है ना! देखा है ना! तो लाइट की प्रकाशमय काया तो पहले ही चमकती रहती है। तो बापदादा ने सभी को अपने संगमयुगी शरीर में इमर्ज किया। जब संगमयुगी शरीर में इमर्ज हुए तो एक दो में बहुत मिलन मनाने लगे। एडवांस पार्टी के जन्म की बातें भूल गये और संगम की बातें इमर्ज हो गई। तो आप समझते हो कि संगमयुग की बातें जब एक दो में करते हैं तो कितनी खुशी में आ जाते हैं। बहुत खुशी में एक दो से लेन-देन कर रहे थे। बापदादा ने भी देखा - यह बड़े मौज में आ गये हैं तो मिलने दो इन्हों को। आपस में अपने जीवन की बहुत सी कहानियां एक दो को सुना रहे थे, बाबा ने ऐसा कहा, बाबा ने ऐसे मेरे से प्यार किया, शिक्षा दी। बाबा ऐसे कहता है, बाबा-बाबा, बाबा-बाबा ही था। कुछ समय के बाद क्या हुआ? सबके संस्कारों का तो आपको पता है। तो सबसे रमणीक कौन थी इस ग्रुप में? *(दीदी और चन्द्रमणि दादी)* तो दीदी पहले उठी। चन्द्रमणि दादी का हाथ पकड़ा और रास शुरू कर दी। और दीदी जैसे यहाँ नशे में चली जाती थी ना, वैसे नशे में खूब रास किया। मम्मा को बीच में ठहराया और सर्किल लगाया, एक-दो को आँख मिचौनी की, बहुत खेला और

बापदादा भी देख-देख बहुत मुस्करा रहे थे। होली मनाने आये तो खेलें भी। कुछ समय के बाद सभी बापदादा की बांहों में समा गये और सब एकदम लवलीन हो गये और उसके बाद फिर बापदादा ने सबके ऊपर भिन्न-भिन्न रंगों के जो हीरे थे, बहुत महीन थे, जैसे किसी चीज़ का चूरा होता है ना, ऐसे थे। लेकिन चमक बहुत थी तो बापदादा ने सबके ऊपर डाला। तो चमकती हुई बॉडी थी ना तो उसके ऊपर वह भिन्न-भिन्न रंग के हीरे पड़ने से बहुत सभी जैसे सज गये। लाल, पीला, हरा... जो सात रंग कहते हैं ना। तो सात ही रंग थे। तो बहुत सभी ऐसे चमक गये जो सतयुग में भी ऐसी ड्रेस नहीं होगी। सब मौज में तो थे ही। फिर एक दो को भी डालने लगे। रमणीक बहनें भी तो बहुत थी ना। बहुत-बहुत मौज मनाई। मौज के बाद क्या होता है? बापदादा ने इनएडवान्स सबको भोग खिलाया, आप तो कल भोग लगायेंगे ना लेकिन बापदादा ने मधुबन का, संगमयुग का भिन्न-भिन्न भोग सबको खिलाया और उसमें विशेष होली का भोग कौन-सा है? *(गेवर-जलेबी)* आप लोग गुलाब का फूल भी तलते हैं ना। तो वैरायटी संगमयुग के ही भोग खिलाये। आपसे पहले भोग उन्होंने ले लिया है, आपको कल मिलेगा। अच्छा। मतलब तो बहुत मनाया, नाचा, गाया। सभी ने मिलके वाह बाबा, मेरा बाबा, मीठा बाबा के गीत गाया। तो नाचा, गाया, खाया और लास्ट क्या होता है? बधाई और विदाई। तो आपने भी मनाया कि सिर्फ सुना? लेकिन पहले अभी फरिश्ता बन प्रकाशमय काया वाले बन जाओ। बन सकते हो या नहीं? मोटा शरीर है? नहीं। सेकण्ड में चमकता हुआ डबल लाइट का स्वरूप बन जाओ। बन सकते हो? बिल्कुल फ़रिश्ता! **(बापदादा ने सभी को ड्रिल कराई)**।

अभी अपने ऊपर भिन्न-भिन्न रंगों के चमकते हुए हीरे सूक्ष्म शरीर पर डालो और सदा ऐसे दिव्य गुणों के रंग, शक्तियों के रंग, ज्ञान के रंग से स्वयं को रंगते रहो। और सबसे बड़ा रंग बापदादा के संग के रंग में सदा रंगे रहो। ऐसे अमर भव। अच्छा।

ऐसे देश-विदेश के फ़रिश्ते स्वरूप बच्चों को, सदा साफ़ दिल, प्राप्ति सम्पन्न बच्चों को, सच्ची होली मनाना अर्थात् अर्थ सहित चित्र प्रत्यक्ष रूप में लाने वाले बच्चों को, सदा निर्माण और निर्मान का बैलेन्स रखने वाले बच्चों को, सदा दुआओं के पुण्य का खाता जमा करने वाले बच्चों को बहुत-बहुत पद्मगुणा यादप्यार और नमस्ते।

इस्टर्न और तामिलनाडु ज़ोन सेवा में आया है – अच्छा इस ग्रुप में बंगाल, बिहार, आसाम, नेपाल, उड़ीसा और साथ में तामिलनाडु भी है। तो जो भी इस्टर्न ज़ोन में सब मिलकर सेवा में आये हैं तो यह सेवा का भाग्य भी बहुत अच्छा चांस मिला है। यह सेवा का चांस सर्व ब्राह्मणों के सन्तुष्टता की दुआयें लेने का भाग्य है। तो इस ग्रुप को सबसे ज्यादा आत्माओं की दुआओं का भाग्य मिला है। इस बारी ज़्यादा संख्या आई है ना! तो वेलकम किया? थक तो नहीं गये? बहुत संख्या देख करके घबराये तो नहीं? खुश हुए? लास्ट टर्न सदा बड़ा होता ही है। एक तो सीज़न अच्छा हो जाता है, सर्दी कम हो जाती है, तो अच्छा चांस मिला है। तो दिल से वेलकम किया ना? दिल से वेलकम करना अर्थात् दुआ लेना। अच्छा है। अभी-अभी पुरुषार्थ किया और अभी-अभी सर्व के दुआओं का फल मिला। प्रत्यक्ष फल मिलता है, अगर दिल से किया तो। मुहब्बत से किया, उसका प्रत्यक्ष फल है – दिल की प्रसन्नता। तो बहुत अच्छा किया। मुबारक हो। सबने मिलकर किया और अभी तो आने की सीजन के बाद कल से जाने की सीजन है। अच्छा। जो सेवा में आये हैं वह हाथ उठाओ। मज़ा आया ना। तो सदा कोई-न-कोई सेवा में मज़ा लेते रहना। अच्छा। तामिलनाडु के सेवाधारी हाथ उठाओ। नेपाल के सेवाधारी हाथ उठाओ। नेपाल की रिज़ल्ट अच्छी है। ऐसे ही तामिलनाडु के सेवा की रिज़ल्ट अच्छी है। हैं छोटे लेकिन सेवा के सफलता की रिज़ल्ट मोटी है। अच्छा।

मीटिंग में आये हुए भाई-बहनों से – मीटिंग में कोई-न-कोई नवीनता तो निकालेंगे ही। लेकिन एक विशेष ध्यान रखना कि अभी जो बापदादा ने पहले भी इशारा दिया था कि हर ज़ोन अपने सेवा के सहयोगी सम्पर्क वाले

जो सेवा के निमित्त बनने वाले हो, ऐसा गुलदस्ता मधुबन में तैयार करके लाओ। चाहे कोई भी वर्ग के हों, लेकिन ऐसी विशेष आत्मायें हों जो समय प्रति समय सहयोगी बनने के निमित्त बन सकती हों। ऐसे सेवा कराने अर्थ निमित्त बने हुए आत्माओं को सामने लाओ। बापदादा के सामने नहीं, मधुबन में पहले लाओ ग्रुप बनाके। फिर वह जितना आगे बढ़ेंगे तो समीप आयेंगे। तो इस बात पर विशेष अटेन्शन देकर, चारों ओर का देश-विदेश सब तरफ का ग्रुप सामने आना चाहिए। कर सभी रहे होंगे, लेकिन सामने आना चाहिए और उस ग्रुप द्वारा आपकी सेवा ज्यादा से ज्यादा बढ़ेगी क्योंकि संगठन में आने से उनको बल मिलेगा। फैमिली मेम्बर अनुभव करते जायेंगे और साथ-साथ मन्सा सेवा के ऊपर विशेष आपस में ग्रुप बनाकर एक तो स्पष्ट करना और दूसरा उस ग्रुप को समय प्रति समय आपस में मिलकर मन्सा सेवा के वृत्ति का प्लैन बनाना चाहिए। रिज़ल्ट निकालनी चाहिए क्योंकि समय प्रमाण, सरकमस्टांश प्रमाण अभी मन्सा सेवा की बहुत-बहुत आवश्यकता होगी। जैसे आप लोगों ने भिन्न-भिन्न वर्ग तो बनाये हैं, लेकिन हर वर्ग का ऐसा सहयोगी ग्रुप तैयार होना चाहिए, जो गवर्मेन्ट के सामने अब तक क्या-क्या सेवा की है, कितनों में परिवर्तन लाया है, प्रैक्टिकल रिज़ल्ट क्या निकली है - हर वर्ग की, वह गवर्मेन्ट के सामने आनी चाहिए। तो गवर्मेन्ट भी समझे कि यह आलराउण्ड सेवाधारी हैं। सिर्फ रिलीज़स नहीं हैं लेकिन आलराउण्ड सेवाधारी हैं। जो भी सेवा हो, गवर्मेन्ट को दो, तो गवर्मेन्ट ग्रुप की रिज़ल्ट देखकर आप लोगों को आफ़र करेगी कि आप लोग इस कार्य में सहयोगी बनो। अभी गवर्मेन्ट के सामने प्रैक्टिकल नक्शा नहीं आया है, सेवा बहुत कर रहे हो, लेकिन सबकी आंखे खुलें, टी.वी. में, पेपर्स में आये कि ब्रह्माकुमारियां यह-यह सेवा का परिणाम लेकर गवर्मेन्ट के सामने आई, तो प्रैक्टिकल परिणाम निकाल कर दिखाओ। यह छोटे-छोटे विघ्न सब खत्म हो जायेंगे। अभी तक यही समझते हैं कि यह धार्मिक संस्था है। सोशल भी है, एज्युकेशनल भी है और सब वर्ग के निमित्त

है, सारी सृष्टि के भिन्न-भिन्न वर्गो को परिवर्तन करने वाली है, इतनों को शराब छुड़ाते हो, हेल्थ मेले करते हो, गवर्मेन्ट के आगे क्या रिजल्ट है? एक समाचार यहाँ रिपोर्ट छपाकर भेज देंगे, इससे नहीं पता पड़ता है। प्रैक्टिकल स्टेज पर आने के प्लैन बनाओ। फंक्शन करो, प्रदर्शनियां करो, खूब करो लेकिन उसकी रिज़ल्ट सभी की नज़र में आनी चाहिए। जितनी आप लोगों की सेवा है और जितनी रिज़ल्ट है उस अनुसार और कोई संस्था इतनी सेवा नहीं करती। भिन्न-भिन्न वर्गो में, भिन्न-भिन्न गाँवों में और बिना खर्चे के दिल से, स्नेह से सेवा करते हो, लेकिन गुप्त है। समझा। समझदार तो हो ही तब तो मीटिंग में आते हो। अच्छा।

डबल फ़ारेनर्स से – अच्छा ग्रुप है और बापदादा को डबल फ़ारेनर्स को देख अपना एक नाम याद आता है? कौन सा नाम? विश्व-कल्याणकारी। आप नहीं थे ना, तो बापदादा भारत-कल्याणकारी था, जब से आप आये हो तो बापदादा विश्व-कल्याणकारी हो गया। तो कमाल किसकी? आपकी कमाल है ना! और मेहनत भी अच्छी कर रहे हो। आपका जो साकार में बैकबोन है ना। वह बहुत होशियार है। बैठने नहीं देता है। कोई भी कोना छूट नहीं जाए, यह लगन अच्छी है। सिर्फ सेवा में निर्विघ्नता - यह सेवा की सफलता है। कोई भी सेवा शुरू करते हो, चाहे देश में, चाहे विदेश में बापदादा यही कहते हैं कि पहले एकमत, एक बल, एक भरोसा और एकता- साथियों में, सेवा में, वायुमण्डल में हो। जैसे नारियल तोड़कर उद्घाटन करते हो, रिबन काटकर उद्घाटन करते हो, तो पहले इन चार बातों की रिबन काटो और फिर सर्व के सन्तुष्टता, प्रसन्नता का नारियल तोड़ो। यह पानी धरनी में डालो। जो भी कार्य की धरनी है, उसमें पहले यह नारियल का पानी डालो फिर देखो सफलता कितनी होती है। नहीं तो कोई-न-कोई विघ्न ज़रूर आता है। **सेवा सब करते हो लेकिन नम्बर बापदादा के पास रजिस्टर में नोट उसका होता है जो निर्विघ्न सेवाधारी है। बापदादा के पास ऐसे सेवाधारियों की लिस्ट है**, लेकिन अभी बहुत थोड़ी है लम्बी नहीं हुई है, भाषण करने वालों

की लिस्ट भी आपके पास लम्बी है, बापदादा उसको भाषण करने वाला कहता है जो पहले भासना दे, फिर भाषण करे। भाषण तो आजकल स्कूल कालेज के लड़के-लड़कियां बहुत अच्छा करते हैं, तालियां बजती रहती हैं। लेकिन बापदादा के पास लिस्ट वह है जो निर्विघ्न सबकी प्रसन्नता, सन्तुष्टता वाले हों। इसीलिए माला में हाथ नहीं उठाया। तो डबल विदेशियों के सेवा में कोई इतना विघ्न आपस में नहीं आता है, लेकिन थोड़े-थोड़े मन के विघ्न आते हैं। बाकी मैजारिटी ठीक हैं। मन के संकल्प, मन की स्थिति अचल, अडोल। सुना - डबल विदेशी अच्छी सेवा कर रहे हो। वृद्धि करने की बधाई हो। अच्छा।

दिल्ली में भवन निर्माण के बारे में

आप सबके शुद्ध संकल्प के आधार पर, आप सबकी राजधानी में स्थान ले लिया है। अभी उसको बेहद का स्थान बनाना है। जैसे मधुबन को हर एक समझता है, हमारा मधुबन। ऐसे जो भी देखे, जो भी आये, अनुभव करे - हमारा है। दिल्ली का है, फलाने का है, फलानी का है, नहीं। बेहद सेवा के लिए है। बेहद की वृत्ति, बेहद की भावना और नारियल भी तोड़ना जो बताया, और रिबन भी कांटना, उसी विधि से यह उद्घाटन करना। ठीक है ना। *(नाम क्या रखें)* अभी फाउण्डेशन तो पड़े। बेहद सेवा, बेहद का फल देता रहेगा। सभी को खुशी है ना। अच्छा है। अच्छा – ओमशान्ति।

बापदादा को सबसे प्रिय, सबसे समीप साफ़ दिल प्यारे हैं। साफ़ दिल सदा बापदादा के दिलतख्तनशीन, सर्व श्रेष्ठ संकल्प पूर्ण होने के कारण वृत्ति में, दृष्टि में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में सरल और स्पष्ट एक समान दिखाई देते हैं।

मन को दुरुस्त रखने के लिए बीच-बीच में ५ सेकण्ड भी निकाल कर मन की एक्सरसाइज़ करो

आज दूरदेशी बापदादा अपने साकार दुनिया के भिन्न-भिन्न देशवासी बच्चों से मिलने आये हैं। बापदादा भिन्न-भिन्न देशवासियों को एक देशवासी देख रहे हैं। चाहे कोई कहाँ से भी आये हो लेकिन सबसे पहले सभी एक ही देश से आये हो। तो अपना अनादि देश याद है ना! प्यारा लगता है ना! बाप के साथ-साथ अपना अनादि देश भी बहुत प्यारा लगता है ना!

बापदादा आज सभी बच्चों के पाँच स्वरूप देख रहे हैं, जानते हो पांच स्वरूप कौन से हैं? जानते हो ना! ५ मुखी ब्रह्मा का भी पूजन होता है। तो बापदादा सभी बच्चों के ५ स्वरूप देख रहे हैं।

पहला – अनादि ज्योतिबिन्दु स्वरूप। याद है ना अपना स्वरूप? भूल तो नहीं जाते? *दूसरा है* – आदि देवता स्वरूप। पहुँच गये देवता स्वरूप में? **तीसरा –** मध्य में पूज्य स्वरूप, वह भी याद है? आप सबकी पूजा होती है या भारतवासियों की होती है? आपकी पूजा होती है? कुमार सुनाओ आपकी पूजा होती है? तो तीसरा है पूज्य स्वरूप। **चौथा है –** संगमयुगी ब्राह्मण स्वरूप और **लास्ट** में है फ़रिश्ता स्वरूप। तो ५ ही रूप याद आ गये? अच्छा एक सेकण्ड में यह ५ ही रूपों में अपने को अनुभव कर सकते हो? वन, टू, थ्री, फोर, फाइव... तो कर सकते हो! यह ५ ही स्वरूप कितने प्यारे हैं? जब चाहो, जिस भी रूप में स्थित होने चाहो, सोचा और अनुभव किया। यही रूहानी मन की एक्सरसाइज़ है। आजकल सभी क्या करते हैं? एक्सरसाइज़ करते हैं ना! जैसे आदि में भी आपकी दुनिया में (सतयुग में) नेचुरल चलते-फिरते की एक्सरसाइज़ थी। खड़े होकर के वन, टू, थ्री.... एक्सरसाइज़ नहीं। तो अभी अन्त में भी बापदादा मन की एक्सरसाइज़ कराते हैं। जैसे स्थूल एक्सरसाइज़ से तन भी दुरुस्त रहता है ना! तो चलते-फिरते यह मन

की एक्सरसाइज़ करते रहो। इसके लिए टाइम नहीं चाहिए। 5 सेकण्ड कभी भी निकाल सकते हो या नहीं! ऐसा कोई बिज़ी है, जो 5 सेकण्ड भी नहीं निकाल सके! है कोई, तो हाथ उठाओ। फिर तो नहीं कहेंगे - क्या करें टाइम नहीं मिलता? यह तो नहीं कहेंगे ना! टाइम मिलता है? तो यह एक्सरसाइज़ बीच-बीच में करो। किसी भी कार्य में हो 5 सेकण्ड की यह मन की एक्सरसाइज़ करो। तो मन सदा ही दुरुस्त रहेगा, ठीक रहेगा। बापदादा तो कहते हैं - हर घण्टे में यह 5 सेकण्ड की एक्सरसाइज़ करो। हो सकती है? देखो, सभी कह रहे हैं - हो सकती है। याद रखना। ओमशान्ति भवन याद रखना, भूलना नहीं। तो जो मन की भिन्न-भिन्न कम्पलेन है ना! क्या करें मन नहीं टिकता! मन को मण बना देते हो। वज़न करते हैं ना! पहले जमाने में पाव, सेर और मण होता था, आजकल बदल गया है। तो मन को मण बना देते हैं बोझ वाला और यह एक्सरसाइज़ करते रहेंगे तो बिल्कुल लाइट हो जायेंगे। अभ्यास हो जायेगा। ब्राह्मण शब्द याद आये तो ब्राह्मण जीवन के अनुभव में आ जाओ। फ़रिश्ता शब्द कहो तो फ़रिश्ता बन जाओ। मुश्किल है? नहीं है? कुमार बोलो थोड़ा मुश्किल है? आप फ़रिश्ते हो या नहीं? आप ही हो या दूसरे हैं? कितने बार फ़रिश्ता बने हो? अनगिनत बार बने हो। आप ही बने हो? अच्छा। अनगिनत बार की हुई बात को रिपीट करना क्या मुश्किल होता है? कभी-कभी होता है? अभी यह अभ्यास करना। कहाँ भी हो 5 सेकण्ड मन को घुमाओ, चक्कर लगाओ। चक्कर लगाना तो अच्छा लगता है ना! टीचर्स ठीक है ना! राउण्ड लगाना आयेगा ना? बस राउण्ड लगाओ फिर कर्म में लग जाओ। हर घण्टे में राउण्ड लगाया फिर काम में लग जाओ क्योंकि काम को तो छोड़ नहीं सकते हैं ना! ड्युटी तो बजानी है। लेकिन 5 सेकण्ड, मिनट भी नहीं, सेकण्ड। नहीं निकल सकता है? निकल सकता है? यू. एन. की आफिस में निकल सकता है? मास्टर सर्वशक्तिवान हो। तो मास्टर सर्वशक्तिवान क्या नहीं कर सकता!

बापदादा को एक बात पर बच्चों को देख करके मीठी-मीठी हँसी आती

है। किस बात पर? चैलेन्ज करते हैं, पर्चा छपाते हैं, भाषण करते हैं, कोर्स कराते हैं। क्या कराते हैं? हम विश्व को परिवर्तन करेंगे। यह तो सभी बोलते हैं ना! या नहीं? सभी बोलते हैं या सिर्फ भाषण करने वाले बोलते हैं? तो एक तरफ़ कहते हैं विश्व को परिवर्तन करेंगे, मास्टर सर्वशक्तिवान हैं! और दूसरे तरफ़ अपने मन को मेरा मन कहते हैं, मालिक हैं मन के और मास्टर सर्वशक्तिवान हैं। फिर भी कहते हैं मुश्किल है? तो हँसी नहीं आयेगी! आयेगी ना हंसी! तो जिस समय सोचते हो, मन नहीं मानता, उस समय अपने ऊपर मुस्कराना। मन में कोई भी बात आती है तो बापदादा ने देखा है तीन लकीरें गाई हुई हैं। **एक** पानी पर लकीर, पानी पर लकीर देखी है, लगाओ लकीर तो उसी समय मिट जायेगी। लगाते तो है ना! तो **दूसरी है** किसी भी कागज पर, स्लेट पर कहाँ भी लकीर लगाना और **सबसे बड़ी** लकीर है पत्थर पर लकीर। पत्थर की लकीर मिटती बहुत मुश्किल है। तो बापदादा देखते हैं कि कई बार बच्चे अपने ही मन में पत्थर की लकीर के मुआफ़िक पक्की लकीर लगा देते हैं। जो मिटाते हैं लेकिन मिटती नहीं है। ऐसी लकीर अच्छी है? कितना वारी प्रतिज्ञा भी करते हैं, अब से नहीं करेंगे। अब से नहीं होगा। लेकिन फिर-फिर परवश हो जाते हैं। इसलिए बापदादा को बच्चों पर घृणा नहीं आती है, रहम आता है। परवश हो जाते हैं। तो परवश पर रहम आता है। जब बापदादा ऐसे रहम भाव से बच्चों को देखते हैं तो ड्रामा के पर्दे पर क्या आ जाता है? कब तक? तो इसका उत्तर आप दो। कब तक? कुमार दे सकते हैं - कब तक यह समाप्त होगा? बहुत प्लैन बनाते हो ना कुमार! तो कब तक, बता सकते हो? आखिर भी यह कब तक? बोलो। जवाब आता है कब तक? दादियां सुनाओ। *(जब तक संगमयुग है तब तक थोड़ा-थोड़ा रहेगा)* तो संगमयुग भी कब तक? *(जब फ़रिश्ता बन जायेंगे)* वह भी कब तक? *(बाबा बतायें)* फ़रिश्ता बनना आपको है या बाप को? तो इसका जवाब सोचना। बाप तो कहेंगे अब, तैयार हैं? आधी माला में भी हाथ नहीं उठाया।

बापदादा सदा ही बच्चों को सम्पन्न स्वरूप में देखने चाहते हैं। जब कहते ही हो, बाप ही मेरा संसार है। यह तो सब कहते हो ना! दूसरा भी कोई संसार है क्या? बाप ही संसार है, तो संसार के बाहर और क्या है? सिर्फ संस्कार परिवर्तन करने की बात है। ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है - संस्कार। चाहे अपना संस्कार, चाहे दूसरों का संस्कार। ज्ञान सभी में है, शक्तियां भी सभी के पास हैं। लेकिन कारण क्या होता है? जो शक्ति, जिस समय कार्य में लानी चाहिए, उस समय इमर्ज होने के बजाए थोड़ा पीछे इमर्ज होती हैं। पीछे सोचते हैं कि यह न कहकर यह कहती तो बहुत अच्छा। यह करने के बजाए यह करती तो बहुत अच्छा। लेकिन जो समय पास होने का था वह तो निकल जाता है, वैसे सभी अपने में शक्तियों को सोचते भी रहते हो, सहनशक्ति यह है, निर्णय शक्ति यह है, ऐसे यूज़ करना चाहिए। सिर्फ थोड़े समय का अन्तर पड़ जाता है। और दूसरी बात क्या होती है? चलो एक बार समय पर शक्ति कार्य में नहीं आई और बाद में महसूस भी किया कि यह न करके यह करना चाहिए था। समझ में आ जाता है पीछे। लेकिन उस गलती को एक बार अनुभव करने के बाद आगे के लिए अनुभवी बन उसको अच्छी तरह से रियलाइज़ कर लें जो दुबारा नहीं हो। फिर भी प्रोग्रेस हो सकती है। उस समय समझ में आता है - यह रांग है, यह राइट है। लेकिन वही गलती दुबारा नहीं हो, उसके लिए अपने आपसे अच्छी तरह से रियलाइज़ेशन करना, उसमें भी इतना फुल परसेन्ट पास नहीं होते। और माया बड़ी चतुर है, वही बात मानो आपमें सहनशक्ति कम है, तो ऐसी ही बात जिसमें आपको सहनशक्ति यूज़ करना है, एक बार आपने रियलाइज़ कर लिया, लेकिन माया क्या करती है कि दूसरी बारी थोड़ा-सा रूप बदली करके आती है। होती वही बात है लेकिन जैसे आजकल के ज़माने में चीज़ वही पुरानी होती है लेकिन पालिश ऐसी कर देते हैं जो नई से भी नई दिखाई दे। तो माया भी ऐसे पालिश करके आती है जो बात का रहस्य वही होता है, मानों आपमें ईर्ष्या आ गई। ईर्ष्या भी भिन्न-भिन्न रूप की है, एक रूप की

नहीं है। तो बीज ईर्ष्या का ही होगा लेकिन और रूप में आयेगी। उसी रूप में नहीं आती है। तो कई बार सोचते हैं कि यह बात पहले वाली तो वह थी ना, यह तो बात ही दूसरी हुई ना। लेकिन बीज वही होता है सिर्फ रूप परिवर्तित होता है। उसके लिए कौन-सी शक्ति चाहिए? – 'परखने की शक्ति।' इसके लिए बापदादा ने पहले भी कहा है कि दो बातों का अटेन्शन रखो। **एक** –*सच्ची दिल।* सच्चाई। अन्दर नहीं रखो। अन्दर रखने से गैस का गुब्बारा भर जाता है और आखिर क्या होगा? फटेगा ना! तो सच्ची दिल - चलो आत्माओं के आगे थोड़ा संकोच होता है, थोड़ा शर्म-सा आता है - पता नहीं मुझे किस दृष्टि से देखेंगे। लेकिन सच्ची दिल से, महसूसता से बापदादा के आगे रखो। ऐसे नहीं मैंने बापदादा को कह दिया, यह गलती हो गई। जैसे आर्डर चलाते हैं – हाँ, मेरे से यह गलती हो गई, ऐसे नहीं। महसूसता की शक्ति से, सच्ची दिल से, सिर्फ दिमाग से नहीं लेकिन दिल से अगर बापदादा के आगे महसूस करते हैं तो दिल खाली हो जायेगी, किचड़ा खत्म। बातें बड़ी नहीं होती है, छोटी ही होती है लेकिन अगर आपकी दिल में छोटी-छोटी बातें भी इकट्ठी होती रहती हैं तो उनसे दिल भर जाती है। खाली तो नहीं रहती है ना! तो दिल खाली नहीं तो दिलाराम कहाँ बैठेगा! बैठने की जगह तो हो ना! **तो सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। जो हूँ, जैसी हूँ, जो हूँ, जैसा हूँ, बाबा आपका हूँ। बापदादा तो जानते ही हैं कि नम्बरवार तो होने ही हैं। इसीलिए बापदादा उस नज़र से आपको नहीं देखेगा। लेकिन सच्ची दिल और दूसरा कहा था - सदा बुद्धि की लाइन क्लीयर हो। लाइन में डिस्ट्रबेन्स नहीं हो, कटआफ नहीं हो। बापदादा जो एक्स्ट्रा समय पर शक्ति देने चाहते हैं, दुआयें देने चाहते हैं, एक्स्ट्रा मदद देने चाहते हैं, अगर डिस्ट्रबेन्स होगी तो वह मिल नहीं सकेगी।** लाइन क्लीयर ही नहीं है, क्लीन नहीं है, कटआफ है, तो यह जो प्राप्ति होनी चाहिए वह नहीं होती। कई बच्चे कहते हैं, कहते नहीं हैं तो सोचते हैं – कोई-कोई आत्मा को बहुत सहयोग मिलता, ब्राह्मणों का भी मिलता, बड़ों का भी मिलता, बापदादा का भी मिलता, हमको कम मिलता है। कारण क्या? बाप तो दाता है, सागर है, जितना जो लेने चाहे बापदादा के भण्डारे में ताला-चाबी नहीं है, पहरेदार नहीं

है। बाबा कहा, जी हाज़िर। बाबा कहा - लो। दाता है ना। दाता भी है और सागर भी है। तो क्या कमी होगी? इन्हीं दो बातों की कमी होती है। एक सच्ची दिल, साफ़ दिल हो, चतुराई नहीं करो। चतुराई बहुत करते हैं। भिन्न-भिन्न प्रकार की चतुराई करते हैं। तो साफ़ दिल, सच्ची दिल और दूसरा बुद्धि की लाइन सदा चेक करो क्लीयर है और क्लीन है? आजकल के साइन्स के साधनों में भी देखते हो ना थोड़ी भी डिस्ट्रबेन्स क्लीयर नहीं करने देती। तो यह ज़रूर करो।

और विशेष बात – इस सीज़न का लास्ट टर्न है ना इसलिए बता रहे हैं, डबल विदेशियों के लिए ही नहीं है, सबके लिए है। लास्ट टर्न में आप सामने बैठे हो तो आपको ही कहना पड़ता है। बापदादा ने देखा है कि एक संस्कार या नेचर कहो, नेचर तो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इज़ी नेचर हो। अलबेली नेचर नहीं। अलबेलापन अलग चीज़ है। इज़ी नेचर उसको कहा जाता है - जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार। टाइट नेचर बहुत टू-मच आफ़िशियल नहीं, आफ़ीशियल रहना अच्छा है लेकिन टू-मच नहीं और समय पर जब समय ऐसा है, उस समय अगर कोई आफ़िशियल बन जाता है तो वह गुण के बजाए, उनकी विशेषता उस समय नहीं लगती। अपने को मोल्ड कर सके, मिलनसार हो सके, छोटा हो, बड़ा हो। बड़े से बड़ेपन में चल सके, छोटे से छोटेपन में चल सके। साथियों में साथी बनके चल सके, बड़ों से रिगार्ड से चल सके। इज़ी मोल्ड कर सके, शरीर भी इजी रखते हैं ना तो जहाँ भी चाहें मुड जाते हैं और टाइट होगा तो मुड नहीं सकेगा। अलबेला भी नहीं, इज़ी है तो जहाँ चाहे इज़ी हो जाए, अलबेला हो जाए। नहीं। बापदादा ने कहा ना इजी हो जाओ तो इज़ी हो गये, ऐसे नहीं करना। इज़ी नेचर अर्थात् जैसा समय वैसा अपना स्वरूप बना सके।

अच्छा - डबल विदेशियों को अच्छा चांस मिला है। देखो, मधुबन वालों को भी इस सीज़न में चांस नहीं मिला है लेकिन विदेशियों को दो टर्न मिले हैं। लाडले हो गये ना! बापदादा को भी डबल विदेशी प्रिय लगते हैं क्योंकि हिम्मत रख अच्छे आगे बढ़ रहे हैं। हिम्मत अच्छी रखते हैं। हिम्मत वाले हो ना! कन्फ्यूज़ होने वाले तो नहीं हो ना! कन्फ्यूज़ होते हो? छोटी-छोटी बात पर कन्फ्यूज़ होते हो? हाँ नहीं कह रहे हैं। बापदादा ने देखा है कि पहले बहुत ज़्यादा कन्फ्यूज़ होते थे, अभी फ़र्क है। हिम्मत अच्छी रखते हैं और हिम्मत होने के कारण बाप की मदद भी है। फ़र्क है ना? पहले से फ़र्क है ना! अभी कथायें कम होती हैं ना! लम्बी बातें नहीं करो। बात जरूर करो, दिल में नहीं रखो लेकिन शार्ट में करो। ज्यादा विस्तार जो ᑎᑎ शब्द में स्पष्ट करो, वह [illegible]-[illegible] शब्दों में बोल सकते हो क्योंकि बढ़ने तो हैं ही ना! अभी भी देखो बढ़ गये हैं ना! डबल फ़ारेन की संख्या बढ़ गई है ना! और बढ़ने तो हैं ही। तो जब बढ़ते जाते हैं तो जरूर शार्ट करना पड़ेगा ना! फिर भी काफी हद तक साफ दिल भी रहते हैं, छिपाते कम हैं। बापदादा साफ़ दिल उसे कहते हैं - जिसमें स्वभाव-संस्कार, बोल, मन्सा संकल्प, ज़रा भी पुराना किचड़ा नहीं हो। ऐसा दिन कब आयेगा जो कोई भी चाहे भारतवासी, चाहे डबल फारेनर आवे, मिले और सिर्फ लाइन में सब कहें ओ.के., ओ.के.... आयेगा ऐसा दिन? जैसे आप लोगों ने अप्लीकेशन की है कि सेकण्ड-सेकण्ड दृष्टि लेते जाएं। तो बापदादा फिर कहते हैं आज तो आप लोगों की आशा पूर्ण करेंगे लेकिन ऐसा भी दिन लाओ, चाहे दादियों के पास, चाहे बापदादा के सामने, ऐसे लाइन में सब दिल से कहें, ओ.के.। यह हो सकता है? कुमार हो सकता है? *(पूरी सभा से पूछा)* तो यह खुशखबरी बहुत अच्छी है। तो कब होगा? फिर यह क्वेश्चन आता है कब? बताओ, आप लोग जो बड़े भाई हैं वह बताओ डेट कब? (अब)।

अच्छा - बापदादा समय देता है। अब कहेंगे तो सोचेंगे कि यह बात तो मेरे में है, यह निकालकर आयेंगे। लेकिन दूसरी सीज़न में ऐसी लाइन

लगायें। ९ मास तो हैं, १० मास हो जाते हैं। यह मंजूर है? मन से ओ.के. ऐसे नहीं ओ.के. ओ.के कहते जाओ... कुमारों में जो तैयार हैं वह हाथ उठाओ। आधे हैं, आधे नहीं हैं तो जिन्होंने हाथ नहीं उठाया उन्हों को कितना टाइम चाहिए? पूरा साल चाहिए? एक वर्ष में तैयार हो जायेंगे? एक वर्ष में जो तैयार हो जायेंगे वह हाथ उठाओ। अच्छा - एक मास चाहिए? जिन्होंने हाथ नहीं उठाया - वह चिटकी लिखकर दे देवें कितना समय चाहिए? ठीक है। अच्छा - बहनें तैयार हैं तो हाथ उठाओ। अच्छा जो कहते हैं अभी तैयार हैं, वह हाथ उठाओ। *(बापदादा सर्टिफ़िकेट देंगे तो)* बापदादा तो माला पहना देंगे। माला पहननी चाहिए ना? फ़ारेन के पास-विद्-आनर बन गये तो माला में तो आ जायेंगे ना। तो माला जल्दी तैयार हो जायेगी। पक्के हैं ना! कच्चे नहीं बनना! अच्छा है। जो हिम्मत रखता है उसको एक्स्ट्रा मदद जरूर मिलती है। देखो जिनको दादियाँ कहते हो, वह दादियाँ कैसे बनी? हिम्मत रखी और अपने से पक्की प्रतिज्ञा की, हमको करना ही है, बनना ही है। तो आज दादियों की लिस्ट में हैं ना! तो डबल फ़ारेनर्स को ८८१० की माला में आगे रखेंगे, तैयार हो जाओ। विजय माला में आने वाले दाने की सेरीमनी करेंगे। कोई भी आवे, सिर्फ आगे बैठने वाले नहीं, कोई भी आवे। बापदादा सेरीमनी करेंगे, विजयी रत्न। आगे वाले सब आना। आना है ना! कहो क्यों नहीं आयेंगे। हम नहीं आयेंगे तो कौन आयेगा! नशा रखो, निश्चय रखो तो क्या बड़ी बात है। बाप के बन तो गये, अभी वापस तो जाना नहीं है। अगर वापस भी जायेंगे तो न उस दुनिया के रहेंगे, न इस दुनिया के। इसलिए वापस तो जाना नहीं है। आगे ही बढ़ना है। जब संसार ही बाप हो गया, बाकी रहा ही क्या! बापदादा को डबल फ़ारेनर्स में बहुत-बहुत श्रेष्ठ उम्मीदें हैं, आशायें हैं कि डबल फ़ारेनर्स में से ऐसे रत्न निकलेंगे जो लास्ट सो फास्ट की लिस्ट में आयेंगे, फास्ट सो फर्स्ट। भारत वाले भी आयेंगे लेकिन आज डबल फ़ारेनर्स सामने बैठे हैं इसलिए उन्हों को कह रहे हैं। लास्ट सो फास्ट और फर्स्ट तो कितनी कमाल होगी। होनी तो है ही। सिर्फ कौन आगे आता

है, वह प्रत्यक्ष होंगे। होना तो है ही। सेन्टर निवासी क्या समझते हो? फास्ट आयेंगे? बहुत अच्छा। बापदादा को खुशी है कि हिम्मत वाले अवश्य विजयी होने ही हैं। होंगे या नहीं होंगे, नहीं। होने ही हैं। तो ऐसी उम्मींद अपने में है?

सबसे ज़्यादा दूरदेश से कौन आया है? ज्यादा दूरदेशी बापदादा है या आप? कितना भी आप कहो बहुत दूर से आये हैं, बापदादा से तो दूर कोई नहीं। तो सन्तुष्ट हैं? डबल फ़ारेनर्स सन्तुष्ट हुए? स्पेशल मिला, खुश हैं? फिर तो नहीं कहेंगे यह हुआ, यह नहीं हुआ। अच्छा।

भारतवासी हाथ उठाओ जो यहाँ बैठे हैं। मधुबन वाले हाथ उठाओ। मधुबन वाले तो होशियार हैं।

मधुबन वालों का उल्हना रहा हुआ है कि टोली नहीं मिली है। तो बापदादा कहते हैं कि इस सीज़न में आप बापदादा द्वारा दिलखुश मिठाई खा लो। मधुबन वाले, शान्तिवन वाले, ज्ञान सरोवर है, हॉस्पिटल है, इन्हों का प्लैन बापदादा के पास है, कम्पलेन नहीं रहेगी। मधुबन वालों को तो खुश करना है ना, नहीं तो आप कैसे आयेंगे। इन्हों का हिस्सा तो पहले लगता है, जितनी मेहनत करते हैं चारों ओर, तो मेहनत का प्रत्यक्षफल तो मिलना ही चाहिए। सिर्फ समय नहीं है बाकी बापदादा तो पहले मधुबन निवासियों को याद करते हैं।

सबसे नये देश से कौन आया है, जो देश पहली बार आया हो? *(करेबियन की तरफ़ से - क्वेट, कुरूसव, इजिप्ट)* मुबारक हो। कोई भी परिवार में नये बच्चे पैदा होते हैं तो मुबारक देते हैं। आपके परिवार में भी एड हुए हैं। खुशी है ना!

अच्छा - सामने सेन्टर्स पर रहने वाले बैठे हैं। हाथ उठाओ। सेन्टर पर रहने वाले तो पक्के हैं, यह स्टैम्प लगा ली है ना! आलमाइटी गवर्मेन्ट द्वारा ''सदा पक्के हैं'', यह स्टैम्प लगाई है? लग गई है या हल्की लगी है? मिटने वाली भी है? ऐसी तो नहीं है ना? जो भी सेन्टर पर रहने वाले हैं वह समझते हैं कि हम अन्त तक बापदादा के साथी रहेंगे और साथ चलेंगे। अभी साथी

रहेंगे और फिर साथ चलेंगे। ऐसे हैं तो हाथ उठाओ, टी.वी. निकालो। आपके फोटो बापदादा वतन में सजाकर रखेंगे। बहुत अच्छा। इनएडवान्स अन्त तक मुबारक हो। अच्छा है ना! एक भी अगर साथी नीचे-ऊपर होता है तो अच्छा तो नहीं लगता है ना! तो सभी साथ चलेंगे। आगे पीछे नहीं जाना, साथ चलेंगे। अभी भी सेवा में साथ रहेंगे और साथ चलेंगे अपने घर में और फिर राज्य में ब्रह्मा बाप के साथ रहेंगे। पक्का है ना! क्या बनेंगी? कृष्ण की सखी बनेंगी? *(बहन बनेंगी)* अच्छा है ना? *(बाबा पर्सनल सामने वालों से पूछ रहे हैं)* अगर यहाँ साथ हैं तो वायदा है वहाँ भी रहेंगी, बाप वायदा देते हैं। अगर यहाँ हैं तो वहाँ गैरन्टी हैं। यह सभी साथ रहेंगे या दूर-दूर रहेंगे? कभी-कभी मिलने आयेंगे! श्रीकृष्ण के साथ पढ़ना, साथ रास करना, साथ घूमना... पाण्डव भी रास करेंगे या सिर्फ बहनें ही करेंगी? दोनों को चांस है, जो चाहे वह कर सकता है क्योंकि अभी सीट फिक्स नहीं हुई है। सिर्फ दो सीट फिक्स हैं। ३-४ से खाली हैं। एनाउन्स नहीं हुई हैं। नम्बर ले सकते हो। अच्छा - कुमारों ने अच्छी भट्ठी की। टीचर कौन था?

(विदेश के यूथ की रिट्रीट ज्ञान सरोवर में चली) अच्छा रहा? अच्छा सभी को देखकर सबसे ज़्यादा खुशी किसको होती है? बापदादा को तो है ही, फिर दूसरा? हर एक कहेगा मेरे को। बहुत अच्छा। दादियों को बहुत खुशी है। थकाते तो नहीं हैं? ज़्यादा खुशी दादियों को होती है या आप लोगों को होती है? *(दोनों को होती है)* अच्छा - अभी डबल फ़ारेनर्स से पर्सनल मिले ना। चिटचैट भी की। दूर बैठे भी नज़दीक हैं।

टीचर्स बहुत हैं, अच्छा है डबल पार्ट बजा रहे हो। डबल पार्ट बजाने वालों को डबल मदद मिलती है। हिम्मत अच्छी है। अच्छा।

सभी को ड्रिल याद है या भूल गई? अभी-अभी सभी यह ड्रिल करो, लगाओ चक्कर। अच्छा।

चारों ओर के सर्व श्रेष्ठ आत्माओं को, चारों ओर से याद प्यार, समाचार भेजने वालों को बहुत अच्छे भिन्न-भिन्न सम्बन्ध से स्नेह के पत्र और अपना

हालचाल लिखा है, सेवा समाचार उमंग, प्लैन बहुत अच्छे-अच्छे लिखे हैं, जो बापदादा को मिल ही गये। जिस प्यार से, मेहनत से लिखा है तो जिन्होंने भी लिखा है, वह हर एक अपने-अपने नाम से बापदादा का, दिलाराम का दिल से यादप्यार स्वीकार करें। बच्चों का प्यार बाप से और उससे पदमगुणा बाप का बच्चों से प्यार है और सदा अमर है। स्नेही बच्चे, न बाप से अलग हो सकते हैं, न बाप बच्चों से अलग हो सकते हैं। साथ हैं, साथ ही रहेंगे।

चारों ओर के सदा स्वयं को बाप समान बनाने वाले, सदा बाप के नयनों में, दिल में, मस्तक में समीप रहने वाले, सदा एक बाप के संसार में रहने वाले, सदा हर कदम में बापदादा को फ़ालो करने वाले, सदा विजयी थे, विजयी हैं और विजयी रहेंगे - ऐसे निश्चय और नशे में रहने वाले, ऐसे अति श्रेष्ठ सिकीलधे, प्यारे ते प्यारे, सर्व बच्चों को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

दादी जी और दादी जानकी बापदादा से गले मिल रही हैं

सभी खुश हो रहे हैं ना या सोचते कि हम भी दादियां होते! अच्छा है सभी का प्यार, यही दुआयें देता है। प्यार है इसलिए सभी को खुशी होती है। बस खुश रहना, कभी भी मूड आफ नहीं करना। सदा एकरस खुशनुमः चेहरा हो। जो भी देखे उसे रूहानी खुशी की अनुभूति हो। यह सेवा का साधन है। चेहरे पर रूहानी खुशी हो, साधारण खुशी नहीं, रूहानी खुशी। फेस चेंज नहीं हो। जैसे एकरस स्थिति, वैसे ही एकरस चेहरा हो। हो सकता है? एकरस मूड हो? हो सकता है या होना ही है? होगा ना अभी? कभी भी कोई भी अचानक आपका फोटो निकाले तो और कोई फोटो नहीं आवे, रूहानी मुस्कराहट का फोटो हो। चाहे कामकाज भी कर रहे हो, सर्विस का बहुत टेन्शन हो लेकिन चेहरे पर खुशी हो। फिर आपको ज्यादा मेहनत भी नहीं करनी पड़ेगी। एक घण्टा बोलने के बजाए अगर आपका रूहानी मुस्कान का चेहरा होगा तो वह एक घण्टे के बोलने की सेवा एक सेकण्ड में करेगा

क्योंकि प्रत्यक्ष को प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं होती है। जो भी मिले, जैसा भी मिले, गाली देने वाला मिले, इनसल्ट करने वाला मिले, इज्जत न रखने वाला मिले, मान-शान न देने वाला मिले, लेकिन आपका एकरस चेहरा, रूहानी मुस्कान। हो सकता है? कुमार हो सकता है? पाण्डव हो सकता है? और पुरुषार्थ से बच जायेंगे। मेहनत नहीं लगेगी। मुझे रूहानी मुस्कान ही मुस्कराना है। कुछ भी हो जाए, मुझे अपनी मुस्कान छोड़नी नहीं है, हो सकता है? सोच रहे हैं? *(करके दिखायेंगे)* बहुत अच्छा, मुबारक हो! जो सामने बैठे हैं उन्हों को तो करना ही पड़ेगा। अच्छा है ना - खुद भी खुश दूसरे भी खुश और चाहिए क्या? बापदादा तो खुश है ही, दादियां भी खुश।

(बाबा आप ऐसे ही मिलते रहें) और नहीं मिले तो खुशी गुम। आप सदा मुस्कराते रहें, बाप मिलता रहेगा। बहुत अच्छा। ओमशान्ति।

बाप ही मेरा संसार है। यह तो सब कहते हो ना! दूसरा भी कोई संसार है क्या? बाप ही संसार है, तो संसार के बाहर और क्या है? सिर्फ संस्कार परिवर्तन करने की बात है। ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है - संस्कार। चाहे अपना संस्कार, चाहे दूसरों का संस्कार।

सम्पूर्णता की समीपता द्वारा प्रत्यक्षता के श्रेष्ठ समय को समीप लाओ

आज बापदादा अपने होलीएस्ट, हाइएस्ट, लकीएस्ट, स्वीटेस्ट बच्चों को देख रहे हैं। सारी विश्व में समय प्रति समय होलीएस्ट आत्मायें आती रही हैं। आप भी होलीएस्ट हो लेकिन आप श्रेष्ठ आत्मायें प्रकृतिजीत बन, प्रकृति को भी सतोप्रधान बना देती हो। आपके पवित्रता की पावर प्रकृति को भी सतोप्रधान पवित्र बना देती है। इसलिए आप सभी आत्मायें प्रकृति का यह शरीर भी पवित्र प्राप्त करती हो। आपके पवित्रता की शक्ति विश्व के जड़, चैतन्य, सर्व को पवित्र बना देती है इसलिए आपको शरीर भी पवित्र प्राप्त होता है। आत्मा भी पवित्र, शरीर भी पवित्र और प्रकृति के साधन भी सतोप्रधान पावन होते हैं। इसलिए विश्व में होलीएस्ट आत्मायें हो। होलीएस्ट हो ? अपने को समझते हो कि हम विश्व की होलीएस्ट आत्मायें हैं ? हाइएस्ट भी हो, क्यों हाइएस्ट हो ? क्योंकि ऊँचे-ते-ऊँचे भगवान को पहचान लिया। ऊँचे-ते-ऊँचे बाप द्वारा ऊँचे-ते-ऊँची आत्मायें बन गये। साधारण स्मृति, वृत्ति, दृष्टि, कृति, सब बदलकर श्रेष्ठ स्मृति स्वरूप, श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ दृष्टि बन गई। किसी को भी मिलते हो तो किस वृत्ति से मिलते हो ? ब्रदरहुड वृत्ति से, आत्मिक दृष्टि से, कल्याण की भावना से, प्रभू परिवार के भाव से। तो हाइएस्ट हो गये ना ? बदल गये ना ! और लकीएस्ट कितने हो ? कोई ज्योतिषि ने आपके भाग्य की लकीर नहीं खींची है, स्वयं भाग्य विधाता ने आपके भाग्य की लकीर खींची। और गैरन्टी कितनी बड़ी दी है ? २१ जन्मों के तकदीर की लकीर के अविनाशी की गैरन्टी ली है। एक जन्म की नहीं, २१ जन्म कभी दु:ख और अशान्ति की अनुभूति नहीं होगी। सदा सुखी रहेंगे। तीन बातें जीवन में चाहिए - हेल्थ, वेल्थ और हैपी। यह तीनों ही आप सबको बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो गया। गैरन्टी है ना, २१ जन्मों की ? सभी ने गैरन्टी ली है ? पीछे वालों को गैरन्टी मिली है ? सभी हाथ उठा रहे हैं, बहुत अच्छा। बच्चा बनना अर्थात् बाप द्वारा वर्सा मिलना। बच्चा बन नहीं रहे हो, बन रहे हो क्या ? बच्चे बन रहे हो या बन गये हो ? बच्चा बनना नहीं होता। पैदा हुआ और बना। पैदा होते ही बाप के वर्से के अधिकारी बन गये। तो ऐसा श्रेष्ठ भाग्य बाप द्वारा अभी प्राप्त कर लिया। और फिर रिचेस्ट भी हो। ब्राह्मण

आत्मा, क्षत्रिय नहीं ब्राह्मण। ब्राह्मण आत्मा निश्चय से अनुभव करती है कि मैं श्रेष्ठ आत्मा, मैं फलाना नहीं, आत्मा रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड है। ब्राह्मण है तो रिचेस्ट इन दी वर्ल्ड है क्योंकि ब्राह्मण आत्मा के लिए परमात्म याद से हर कदम में पदम हैं। तो सारे दिन में कितने कदम उठाते होंगे ? सोचो। हर कदम में पदम, तो सारे दिन में कितने पदम हो गये ? ऐसी आत्मायें बाप द्वारा बन गये। मैं ब्राह्मण आत्मा क्या हूँ, यह याद रहना ही भाग्य है। तो आज बापदादा हर एक के मस्तक पर भाग्य का चमकता हुआ सितारा देख रहे हैं। आप भी अपने भाग्य का सितारा देख रहे हो ?

बापदादा बच्चों को देख खुश होते हैं या बच्चे बाप को देख खुश होते हैं ? कौन खुश होता है ? बाप या बच्चे ? कौन ? (बच्चे) बाप खुश नहीं होता ? बाप बच्चों को देख खुश होते और बच्चे बाप को देख खुश होते हैं। दोनों खुश होते हैं क्योंकि बच्चे जानते हैं कि यह प्रभु मिलन, यह परमात्म प्यार, यह परमात्म वर्सा, यह परमात्म प्राप्तियाँ अभी ही प्राप्त होती हैं। ''अब नहीं तो कब नहीं।'' ऐसे है ?

बापदादा अभी सिर्फ एक बात बच्चों को रिवाइज करा रहे हैं - कौन सी बात होगी ? समझ तो गये हो। यही बापदादा रिवाइज़ करा रहे हैं कि **अब श्रेष्ठ समय को समीप लाओ।** यह विश्व की आत्माओं का आवाज़ है। लेकिन लाने वाले कौन ? आप हो या और कोई है ? ऐसे सुहावने श्रेष्ठ समय को समीप लाने वाले आप सभी हो ? अगर हो तो हाथ उठाओ। अच्छा फिर दूसरी बात भी है, वह भी समझ गये हो तब हँस रहे हो ? अच्छा - उसकी तारीख कौन-सी है ? डेट तो फिक्स करो ना। अभी डेट फिक्स की ना कि फारेनर्स का टर्न होना है। तो यह डेट तो फिक्स कर ली। तो ओ समय को समीप लाने वाली आत्मायें, बोलो, इसकी डेट कौन सी है ? वह नज़र आती है ? पहले आपकी नज़रों में आये तब विश्व पर आवे। बापदादा जब अमृतवेले विश्व में चक्र लगाते हैं तो देख-देख, सुन-सुन रहम आता है। मौज में भी हैं लेकिन मौज के साथ मूंझे हुए भी हैं। तो बापदादा पूछते हैं कि हे दाता के बच्चे मास्टर दाता कब अपने मास्टर दातापन का पार्ट तीव्रगति से विश्व के आगे प्रत्यक्ष करेंगे ? या अभी पर्दे के अन्दर तैयार हो रहे हो ? तैयारी कर रहे हो ? विश्व परिवर्तन के निमित्त आत्मायें अब विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम करो। होना तो है ही, यह तो निश्चित है और

होना भी आप निमित्त आत्माओं द्वारा ही है। सिर्फ देरी किस बात की है ? बापदादा यह एक सेरीमनी देखने चाहते हैं, कि **हर एक ब्राह्मण बच्चे के दिल में सम्पन्नता और सम्पूर्णता का झण्डा लहराया हुआ दिखाई दे।** जब हर ब्राह्मण के अन्दर सम्पूर्णता का झण्डा लहरायेगा तब ही विश्व में बाप की प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेगा। तो यह फ्लैग सेरीमनी बापदादा देखने चाहते हैं। जैसे शिवरात्रि पर शिव अवतरण का झण्डा लहराते हो, ऐसे अभी शिव-शक्ति पाण्डव अवतरण का नारा लगे। एक गीत बजाते हो ना - शिव शक्तियाँ आ गई। अभी विश्व यह गीत गाये कि शिव के साथ शक्तियाँ, पाण्डव प्रत्यक्ष हो गये। पर्दे में कहाँ तक रहेंगे! पर्दे में रहना अच्छा लगता है ? थोड़ा-थोड़ा अच्छा लगता है! अच्छा नहीं लगता, तो हटाने वाला कौन ? बाबा हटायेगा ? कौन हटायेगा ? ड्रामा हटायेगा या आप हटायेंगे ? जब आप हटायेंगे तो देरी क्यों ? तो ऐसे समझें ना कि पर्दे में रहना अच्छा लगता है ? बस, बापदादा की अभी सिर्फ एक ही यह श्रेष्ठ आशा है, सब गीत गायें – वाह! आ गये, आ गये, आ गये! हो सकता है ? देखो दादियाँ सभी कहती हैं हो सकता है फिर क्यों नहीं होता ? कारण क्या ? जब सभी ऐसे ऐसे कर रहे हैं, फिर कारण क्या है ? (सभी सम्पन्न नहीं बने हैं) क्यों नहीं बने हैं ? डेट बताओ ना! (डेट तो बाबा आप बतायेंगे) बापदादा का महामन्त्र याद है ? बापदादा क्या कहते हैं ? ''कब नहीं अब।'' (दादी जी कह रही हैं बाबा फाइनल डेट आप ही बताओ) अच्छा - बापदादा जो डेट बतायेगा उसमें अपने को मोल्ड करके निभायेंगे ? पाण्डव निभायेंगे ? पक्का। अगर नीचे ऊपर किया तो क्या करना पड़ेगा ? (आप डेट देंगे तो कोई नीचे ऊपर नहीं करेगा) मुबारक हो। अच्छा। अभी डेट बताते हैं, देखना। देखो, बापदादा फिर भी रहमदिल है, तो बापदादा डेट बताते हैं, अटेन्शन से सुनना।

बापदादा सब बच्चों से यह श्रेष्ठ भावना रखते हैं, आशा रखते हैं - कम से कम ६ मास में, ६ मास कब तक पूरा होगा ? (मई में) मई में – 'मैं', 'मैं' खत्म। बापदादा फिर भी मार्जिन देते हैं कि कम से कम इन ६ मास में, जो बापदादा ने पहले भी सुनाया है और अगले सीजन में भी काम दिया था, कि अपने को जीवनमुक्त स्थिति के अनुभव में लाओ। सतयुग के सृष्टि की जीवनमुक्ति नहीं, संगमयुग की जीवनमुक्त स्टेज। कोई

भी विघ्न, परिस्थितियाँ, साधन वा मैं और मेरापन, मैं बॉडीकान्सेस का और मेरा बॉडीकान्सेस की सेवा का, इन सबके प्रभाव से मुक्त रहना। ऐसे नहीं कहना कि मैं तो मुक्त रहने चाहता था लेकिन यह विघ्न आ गया ना, यह बात ही बहुत बड़ी हो गई ना। छोटी बात तो चल जाती है, यह बहुत बड़ी बात थी, यह बहुत बड़ा पेपर था, बड़ा विघ्न था, बड़ी परिस्थिति थी। कितनी भी बड़े ते बड़ी परिस्थिति, विघ्न, साधनों की आकर्षण सामना करे, सामना करेगी यह पहले ही बता देते हैं लेकिन कम से कम ६ मास में ७५ परसेन्ट मुक्त हो सकते हो? बापदादा १०० परसेन्ट नहीं कह रहे हैं, ७५ परसेन्ट, पौने तक तो आयेंगे तब पूरे पर पहुंचेंगे ना! तो ६ मास में, एक मास भी नहीं ६ मास दे रहे हैं, वर्ष का आधा। तो क्या यह डेट फिक्स कर सकते हो? देखो, दादियों ने कहा है फिक्स करो, दादियों का हुक्म तो मानना है ना! रिजल्ट देखकर तो बापदादा स्वत: ही आकर्षण में आयेंगे, कहने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। तो ६ मास और ७५ परसेंट, १०० नहीं कह रहे हैं। उसके लिए फिर आगे टाइम देंगे। तो इसमें एवररेडी हो? एवररेडी नहीं ६ मास में रेडी। पसन्द है या थोड़ी हिम्मत कम है, पता नहीं क्या होगा? शेर भी आयेगा, बिल्ली भी आयेगी, सब आयेंगे। विघ्न भी आयेंगे, परिस्थितियां भी आयेंगी, साधन भी बढ़ेंगे लेकिन साधन के प्रभाव से मुक्त रहना। पसन्द है तो हाथ उठाओ। टी.वी. घुमाओ। अच्छी तरह से हाथ उठाओ, नीचे नहीं करना। अच्छी सीन लग रही है। अच्छा - इनएडवांस मुबारक हो।

यह नहीं कहना हमको तो बहुत मरना पड़ेगा, मरो या जीओ लेकिन बनना है। यह मरना मीठा मरना है, इस मरने में दु:ख नहीं होता है। यह मरना अनेकों के कल्याण के लिए मरना है। इसीलिए इस मरने में मजा है। दु:ख नहीं है, सुख है। कोई बहाना नहीं करना, यह हो गया ना। इसीलिए हो गया। बहाने बाजी नहीं चलेगी। बहाने बाजी करेंगे क्या? नहीं करेंगे ना! उड़ती कला की बाजी करना और कोई बाजी नहीं। गिरती कला की बाजी, बहाने बाजी, कमजोरी की बाजी यह सब समाप्त। उड़ती कला की बाजी। ठीक है ना! सबके चेहरे तो खिल गये हैं। जब ६ मास के बाद मिलने आयेंगे तो कैसे चेहरे होंगे। तब भी फोटो निकालेंगे।

डबल फारेनर्स आये हैं ना तो डबल प्रतिज्ञा करने का दिन आ गया। दूसरे किसको

नहीं देखना, सी फादर, सी ब्रह्मा मदर। दूसरा करे न करे, करेंगे तो सभी फिर भी उनके प्रति भी रहम भाव रखना। कमजोर को शुभ भावना का बल देना, कमज़ोरी नहीं देखना। ऐसी आत्माओं को अपने हिम्मत के हाथ से उठाना, ऊँचा करना। हिम्मत का हाथ सदा स्वयं प्रति और सर्व के प्रति बढ़ाते रहना। हिम्मत का हाथ बहुत शक्तिशाली है। और बापदादा का वरदान है - हिम्मत का एक कदम बच्चों का, हजार कदम बाप की मदद का। नि:स्वार्थ पुरुषार्थ में पहले मैं। नि:स्वार्थ पुरुषार्थ, स्वार्थ का पुरुषार्थ नहीं, नि:स्वार्थ पुरुषार्थ इसमें जो ओटे वह ब्रह्मा बाप समान।

ब्रह्मा बाप से तो प्यार है ना! तब तो ब्रह्माकुमारी वा ब्रह्माकुमार कहलाते हो ना! जब चैलेन्ज करते हो कि सेकण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा ले लो तो अभी सेकण्ड में अपने को मुक्त करने का अटेन्शन। अभी समय को समीप लाओ। आपके सम्पूर्णता की समीपता, श्रेष्ठ समय को समीप लायेगी। मालिक हो ना, राजा हो ना! स्वराज्य अधिकारी हो ? तो ऑर्डर करो। राजा तो ऑर्डर करता है ना! यह नहीं करना है, यह करना है। बस ऑर्डर करो। अभी-अभी देखो मन को, क्योंकि मन है मुख्य मन्त्री। तो हे राजा, अपने मन मन्त्री को सेकण्ड में ऑर्डर कर अशरीरी, विदेही स्थिति में स्थित कर सकते हो ? करो ऑर्डर एक सेकण्ड में। (¾ मिनट ड्रिल) अच्छा।

सदा लवलीन और लक्की आत्माओं को बापदादा द्वारा प्राप्त हुई सर्व प्राप्तियों के अनुभवी आत्माओं को, स्वराज्य अधिकारी बन अधिकार द्वारा स्वराज्य करने वाली शक्तिशाली आत्माओं को, सदा जीवनमुक्त स्थिति के अनुभवी हाइएस्ट आत्माओं को, भाग्य विधाता द्वारा श्रेष्ठ भाग्य की लकीर द्वारा लकीएस्ट आत्माओं को, सदा पवित्रता की दृष्टि, वृत्ति द्वारा स्व परिवर्तन विश्व परिवर्तन करने वाली होलीएस्ट आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

डबल विदेशी मेहमानों से
('काल आफ टाइम' के प्रोग्राम में आये हुए मेहमानों से)

सभी अपने स्वीट होम में, स्वीट परिवार में पहुँच गये हैं ना! यह छोटा सा स्वीट परिवार प्यारा लगता है ना! और आप भी कितने प्यारे हो गये हो! सबसे पहले परमात्म प्यारे बन गये। बने हैं ना! बन गये या बनेंगे ? देखो, आप सबको देखकर

सब कितने खुश हो रहे हैं। क्यों खुश हो रहे हैं? सभी के चेहरे देखो बहुत खुश हो रहे हैं। क्यों खुश हो रहे हैं? क्योंकि जानते हैं कि यह सब गॉडली मैसेन्जर बन आत्माओं को मैसेज देने के निमित्त आत्मायें हैं। (पाँचों खण्ड़ों के हैं) तो ॐ खण्डों में मैसेज पहुँच जायेगा, सहज है ना। प्लैन बहुत अच्छा बनाया है। इसमें परमात्म पावर भरके और परिवार का सहयोग लेके आगे बढ़ते रहना। सभी के संकल्प बापदादा के पास पहुँच रहे हैं। संकल्प बहुत अच्छे-अच्छे चल रहे हैं ना! प्लैन बन रहे हैं। तो प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में हिम्मत आपकी और मदद बाप की और ब्राह्मण परिवार की। सिर्फ निमित्त बनना है, बस और मेहनत नहीं करनी है। मैं परमात्म कार्य के निमित्त हूँ। कोई भी कार्य में आओ तो – बाबा, मैं इन्स्ट्रुमेंट सेवा के अर्थ तैयार हूँ, मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ, चलाने वाला आपेही चलायेगा। यह निमित्त भाव आपके चेहरों पर निर्माण और निर्मान भाव प्रत्यक्ष करेगा। करावनहार निमित्त बनाए कार्य करायेगा। माइक आप और माइट बाप की। तो सहज है ना! तो निमित्त बनके याद में हाजिर हो जाओ, बस। तो आपकी सूरत, आपके फीचर्स स्वत: ही सेवा के निमित्त बन जायेंगे। सिर्फ बोल द्वारा सेवा नहीं करेंगे लेकिन फीचर्स द्वारा भी आपकी आन्तरिक खुशी चेहरे से दिखाई देगी। इसको ही कहा जाता है – 'अलौकिकता'। अभी अलौकिक हो गये ना। लौकिकपन तो खत्म हुआ ना। मैं आत्मा हूँ - यह अलौकिक। मैं फलाना हूँ - यह लौकिक। तो कौन हो? अलौकिक या लौकिक? अलौकिक हो ना! अच्छा है। बापदादा वा परिवार के सामने पहुंच गये, यह बहुत अच्छी हिम्मत रखी। देखो, आप भी कोटों में कोई निकले ना। कितना ग्रुप था, उसमें से कितने आये हो, तो कोटों में कोई निकले ना। अच्छा है - बापदादा को ग्रुप पसन्द है। और यह देखो कितने खुश हो रहे हैं। आप से ज्यादा यह खुश हो रहे हैं क्योंकि सेवा का रिटर्न सामने देख खुश हो रहे हैं। खुश हो रहे हैं ना - मेहनत का फल मिल गया। अच्छा। अभी तो बालक सो मालिक हो। बालक मास्टर है। बच्चे को सदा कहा जाता है – 'मास्टर'। अच्छा।

सब ठीक आराम से रहे हुए हो? मन भी आराम में, तन भी आराम में। दोनों ही आराम हैं ना! तो मुस्कराओ। सीरियस नहीं रहो। अब तो सब मिल गया बाकी क्या चाहिए। नाचो, गाओ। मुस्कराना अच्छा लगता है ना! ऐसे अच्छा नहीं लगता।

मुस्कराना अच्छा लगता है ना! दिल में खुशी है ना तो खुशी का चेहरे पर मुस्कराना आता है। मुस्कराते रहो और औरों को भी मुस्कराना सिखाओ। ठीक है ना! अच्छा।

विदाई के समय :- ड्रामा में जो भी सीन पास होती है वह अच्छे ते अच्छी है। अभी जो भी बच्चों ने जहाँ भी सेवा की है, वह भी अच्छे ते अच्छी है। और चारों ओर सेवा तो होनी ही है। फिर भी हर समय की आवश्यकता को विशेष सहयोग देना होता है। तो वर्तमान समय बापदादा की प्रेरणा से सबका अटेन्शन अपनी राजधानी दिल्ली की तरफ है। तो आप सबको भविष्य में महल दिल्ली में बनाना है या आसपास बनाना है। कहाँ बनाना है ? जहाँ लक्ष्मी-नारायण का महल होगा उसके नजदीक बनाना है ना। तो जगह-जगह पर सेवा करना, यह तो ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है और सेवा के बिना तो रह भी नहीं सकते हैं। फिर भी इस समय देहली की तरफ सबको सहयोग का हाथ अवश्य बढ़ाना चाहिए। आप सब चाहते हो दिल्ली में आवाज फैले ? चाहते हो ? तो और सब तरफ करते हुए भी विशेष अटेन्शन उस तरफ देना आवश्यक है। अभी फाउन्डेशन के समय सभी का स्वागत तो हुआ। सभी देश वालों ने मैजारिटी पाँव रखा। अभी पाँव रखा है, अभी हाथ बढ़ाना है। चारों ओर कई आवश्यकतायें होती हैं लेकिन नम्बर तो होते हैं ना पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, तो इस समय अटेन्शन सबका राज्य लेने में है। राज्य गद्दी बनानी है ना! होना तो है ही। और आप सबको निमित्त बनना ही है। अभी तक जो किया, देहली वालों ने भी बहुत अच्छी मेहनत की, मुबारक भी है और आगे के लिए भी इनएडवांस आगे बढ़ने की मुबारक। ठीक है ना! पसन्द है ? पीछे वालों को पसन्द है ? अच्छा।

बापदादा सबकी हिम्मत देखकर खुश होते हैं। जहाँ ईशारा मिले वहाँ नम्बर वन में। दूसरा नम्बर आपेही सिद्ध होगा, रहेगा नहीं। पहला नम्बर पर पूरा ध्यान देने से दूसरे, तीसरे, चौथे में भी मदद मिलती रहेगी। ब्राह्मणों के सब कार्य सफल होने ही हैं। सिर्फ एक दो तीन चार, यह नम्बर थोड़ा देखना पड़ता है। इसमें तो होशियार हो ना। डबल फारेनर्स तो हाँ जी में होशियार हैं ही। जोर से बोलो – ''हाँ जी''। अच्छा। ओम् शान्ति।

बाप समान बनने के लिए दो बातों की दृढ़ता रखो - स्वमान में रहना है और सबको सम्मान देना है

आज बापदादा अपने प्यारे ते प्यारे, मीठे ते मीठे छोटे से ब्राह्मण परिवार कहो, ब्राह्मण संसार कहो, उसको ही देख रहे हैं। यह छोटा सा संसार कितना न्यारा भी है तो प्यारा भी है। क्यों प्यारा है? क्योंकि इस ब्राह्मण संसार की हर आत्मा विशेष आत्मा है। देखने में तो अति साधारण आत्मायें आती हैं लेकिन सबसे बड़े से बड़ी विशेषता हर एक ब्राह्मण-आत्मा की यही है जो परम-आत्मा को अपने दिव्य बुद्धि द्वारा पहचान लिया है। चाहे [illegible] वर्ष के बुजुर्ग हैं, बीमार हैं लेकिन परमात्मा को पहचानने की दिव्य बुद्धि, दिव्य नेत्र सिवाए ब्राह्मण आत्माओं के नामीग्रामी वी.वी.आई.पी. में भी नहीं है। यह सभी मातायें क्यों यहाँ पहुँची हैं? टाँगें चलें, नहीं चलें लेकिन पहुँच तो गई हैं। तो पहचाना है तब तो पहुंची हैं ना! यह पहचानने का नेत्र, पहचानने की बुद्धि सिवाए आपके किसी को भी प्राप्त नहीं हो सकती। सभी मातायें यह गीत गाती हो ना - हमने देखा, हमने जाना....। माताओं को यह नशा है? हाथ हिला रही हैं, बहुत अच्छा। पाण्डवों को नशा है? एक दो से आगे हैं। न शक्तियों में कमी है, न पाण्डवों में कमी है। लेकिन बापदादा को यही खुशी है कि यह छोटा सा संसार कितना प्यारा है। जब आपस में भी मिलते हो तो कितनी प्यारी आत्मायें लगती हैं!

बापदादा देश-विदेश की सर्व आत्माओं द्वारा आज यही दिल का गीत सुन रहे थे - बाबा, मीठा बाबा हमने जाना, हमने देखा। यह गीत गाते-गाते चारों ओर के बच्चे एक तरफ खुशी में, दूसरे तरफ स्नेह के सागर में समाये हुए थे। जो भी चारों ओर के यहाँ साकार में नहीं हैं लेकिन दिल से, दृष्टि से बापदादा के सामने हैं और बापदादा भी साकार में दूर बैठे हुए बच्चों को सम्मुख ही देख रहे हैं। चाहे देश है, चाहे विदेश है, बापदादा कितने में पहुँच सकते हैं? चक्कर लगा सकते हैं? बापदादा चारों ओर के बच्चों को रिटर्न में अरब-खरब से भी ज्यादा याद-प्यार दे रहे हैं। चारों ओर के बच्चों को देख-देख सबके दिलों में एक ही संकल्प देख रहे हैं, सभी नयनों से यही कह रहे हैं कि हमें परमात्म [illegible] मास का होम वर्क याद है। आप सबको भी याद है ना? भूल तो नहीं गया? पाण्डवों को याद है? अच्छी तरह से याद है? बापदादा बार-

बार क्यों याद दिलाता है? कारण? समय को देख रहे हो, ब्राह्मण आत्मायें स्वयं को भी देख रही हैं। मन जवान होता जाता है, तन बुजुर्ग होता जाता है। समय और आत्माओं की पुकार अच्छी तरह से सुनने में आ रही है! तो बापदादा देख रहे थे – आत्माओं की पुकार दिल में बढ़ती जा रही है – 'हे सुख-देवा! हे शान्ति-देवा! हे सच्ची खुशी-देवा थोड़ी सी अंचली हमें भी दे दो। सोचो, पुकार करने वालों की लाइन कितनी बड़ी है! आप सभी सोचते हो - बाप की प्रत्यक्षता जल्दी से जल्दी हो जाए लेकिन प्रत्यक्षता किस कारण से रुकी हुई है? जब आप सभी भी यही संकल्प करते हो और दिल की चाहना भी रखते हो, मुख से कहते भी हो – हमें बाप समान बनना है। बनना है ना? है बनना? अच्छा, फिर बनते क्यों नहीं हो? बापदादा ने बाप समान बनने को कहा है, क्या बनना है, कैसे बनना है, 'समान' शब्द में यह दोनों क्वेश्चन उठ नहीं सकते। क्या बनना है? उत्तर है ना - बाप समान बनना है। कैसे बनना है?

फ़ालो फ़ादर – फुटस्टैप फ़ादर मदर। निराकार बाप, साकार ब्रह्मा मदर। क्या फ़ालो करना भी नहीं आता? फालो तो आजकल के जमाने में अंधे भी कर लेते हैं। देखा है, आजकल वह लकड़ी के आवाज़ पर, लकड़ी को फ़ालो करते-करते कहाँ के कहाँ पहुँच जाते हैं। आप तो मास्टर सर्वशक्तिवान हैं, त्रिनेत्री हैं, त्रिकालदर्शी हैं। फ़ालो करना आपके लिए क्या बड़ी बात है! बड़ी बात है क्या? बोलो, बड़ी बात है? है नहीं लेकिन हो जाती है। बापदादा सब जगह चक्कर लगाते हैं, सेन्टर पर भी, प्रवृत्ति में भी। तो बापदादा ने देखा है, हर एक ब्राह्मण आत्मा के पास, हर एक सेन्टर पर, हर एक की प्रवृत्ति के स्थान पर जहाँ-तहाँ ब्रह्मा बाप के चित्र बहुत रखे हुए हैं। चाहे अव्यक्त बाप के, चाहे ब्रह्मा बाप के, जहाँ तहाँ चित्र ही चित्र दिखाई देते हैं। अच्छी बात है। लेकिन बापदादा यह सोचते हैं कि चित्र को देख चरित्र तो याद आते हैं ना! या सिर्फ चित्र ही देखते हो? चित्र को देख प्रेरणा तो मिलती है ना! तो बापदादा और तो कुछ कहते नहीं हैं सिर्फ एक ही शब्द कहते हैं - 'फ़ालो करो', बस। सोचो नहीं, ज़्यादा प्लैन नहीं बनाओ, यह नहीं वह करें, ऐसा नहीं वैसा, वैसा नहीं ऐसा। नहीं। जो बाप ने किया, कापी करना है, बस। कापी करना नहीं आता? आजकल तो

साइन्स ने फोटो कापी की भी मशीनें निकाल ली हैं। निकाली है ना! यहाँ फोटो कापी है ना? तो यह ब्रह्मा बाप का चित्र रखते हैं। भले रखो, अच्छी तरह से रखो, बड़े बड़े रखो। लेकिन फोटो कापी तो करो ना!

तो बापदादा आज चारों ओर का चक्कर लगाते यह देख रहे थे, चित्र से प्यार है या चरित्र से प्यार है? संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, बाकी क्या चाहिए? बापदादा ने देखा, कोई भी चीज़ को अच्छी तरह से मजबूत करने के लिए चार ही कोनों से उसको पक्का किया जाता है। तो बापदादा ने देखा तीन कोने तो पक्के हैं, एक कोना और पक्का होना है। संकल्प भी है, उमंग भी है, लक्ष्य भी है, किसी से भी पूछो क्या बनना है? हर एक कहता है – बाप समान बनना है। कोई भी यह नहीं कहता है - बाप से कम बनना है, नहीं। समान बनना है। अच्छी बात है। एक कोना मजबूत करते हो लेकिन चलते-चलते ढीला हो जाता है, **वह है दृढ़ता।** संकल्प है, लक्ष्य है लेकिन कोई पर-स्थिति आ जाती है, साधारण शब्दों में उसको आप लोग कहते हैं बातें आ जाती हैं, वह दृढ़ता को ढीला कर देती हैं। दृढ़ता उसको कहा जाता है - 'मर जायें, मिट जायें लेकिन संकल्प न जाये'। झुकना पड़े, जीते जी मरना पड़े, अपने को मोड़ना पड़े, सहन करना पड़े, सुनना पड़े लेकिन संकल्प नहीं जाये। इसको कहा जाता है – 'दृढ़ता'। जब छोटे-छोटे बच्चे ओम निवास में आये थे तो ब्रह्मा बाबा उन्हों को हँसी-हँसी में याद दिलाता था, पक्का बनाता था कि इतना-इतना पानी पियेंगे, इतनी मिर्ची खायेंगे, डरेंगे तो नहीं। फिर हाथ से ऐसे आँख के सामने करते हैं.....। तो ब्रह्मा बाप छोटे-छोटे बच्चों को पक्का करते थे, चाहे कितनी भी समस्या आ जाए, संकल्प की आँख हिले नहीं। वह तो लाल मिर्ची और पानी का मटका था, छोटे बच्चे थे ना। आप तो सभी अभी बड़े हो, तो बापदादा आज भी बच्चों से पूछते हैं कि आपका दृढ़ संकल्प है? संकल्प में दृढ़ता है कि 'बाप समान' बनना ही है? बनना है नहीं, बनना ही है। अच्छा - इसमें हाथ हिलाओ। टी.वी. वाले निकालो। टी.वी. काम में आनी चाहिए ना! बड़ा-बड़ा हाथ करो। अच्छा - मातायें भी उठा रही हैं। पीछे वाले और ऊँचा हाथ करो। बहुत अच्छा। कैबिन वाले नहीं उठा रहे हैं। कैबिन वाले तो निमित्त हैं। अच्छा। थोड़ी घड़ी के लिए तो हाथ उठाके बापदादा को खुश कर दिया।

अभी बापदादा सिर्फ एक ही बात बच्चों से कराना चाहते हैं, कहना नहीं चाहते, कराना चाहते हैं। सिर्फ अपने मन में दृढ़ता लाओ, थोड़ी सी बात में संकल्प को ढीला नहीं कर दो। **कोई इनसल्ट करे, कोई घृणा करे, कोई अपमान करे, निंदा करे, कभी भी कोई दु:ख दे लेकिन आपकी शुभ भावना मिट नहीं जाए।** आप चैलेन्ज करते हो कि हम माया को, प्रकृति को परिवर्तन करने वाले विश्व परिवर्तक हैं, अपना आक्यूपेशन तो याद है ना ? विश्व परिवर्तक तो हो ना ! अगर कोई अपने संस्कार के वश आपको दु:ख भी दे, चोट लगाये, हिलाये, तो क्या आप दु:ख की बात को सुख में परिवर्तन नहीं कर सकते हो ? इनसल्ट को सहन नहीं कर सकते हो ? गाली को गुलाब नहीं बना सकते हो ? समस्या को बाप समान बनने के संकल्प में परिवर्तन नहीं कर सकते हो ? आप सबको याद है - जब आप ब्राह्मण जन्म में आये और निश्चय किया, चाहे आपको एक सेकण्ड लगा या एक मास लगा लेकिन जब से आपने निश्चय किया, दिल ने कहा ''मैं बाबा का, बाबा मेरा।'' संकल्प किया ना, अनुभव किया ना ! तब से आपने माया को चैलेन्ज किया कि मैं मायाजीत बनूंगा, बनूंगी। यह चैलेन्ज माया को किया था ? मायाजीत बनना है कि नहीं ? मायाजीत आप ही हैं ना या अभी दूसरे आने हैं ? जब माया को चैलेन्ज किया तो यह समस्यायें, यह बातें, यह हलचल माया के ही तो रॉयल रूप हैं। माया और तो कोई रूप में आयेगी नहीं। इन रूपों में ही मायाजीत बनना है। **बात नहीं बदलेगी, सेन्टर नहीं बदलेगा, स्थान नहीं बदलेगा, आत्मायें नहीं बदलेंगी, हमें बदलना है।** आपका स्लोगन तो सबको बहुत अच्छा लगता है - **बदलके दिखाना है, बदला नहीं लेना है, बदलना है।** यह तो पुराना स्लोगन है। नये-नये रूप, रॉयल रूप बनके माया और भी आने वाली है, घबराओ नहीं। बापदादा अण्डरलाइन कर रहा है - माया ऐसे, ऐसे रूप में आनी है, आ रही है। जो महसूस ही नहीं करेंगे कि यह माया है, कहेगे नहीं दादी, आप समझती नहीं हो, यह माया नहीं है। यह तो सच्ची बात है। और भी रॉयल रूप में आने वाली है, डरो मत। क्यों ? देखो, कोई भी दुश्मन चाहे हार खाता है, चाहे जीत होती है, जो भी उनके पास छोटे मोटे शस्त्र अस्त्र होंगे, यूज़ करेगा या नहीं करेगा ? करेगा ना ? तो माया की भी अन्त तो होनी है लेकिन जितना अन्त समीप आ

रहा है, उतना वह नये-नये रूप से अपने अस्त्र शस्त्र यूज़ कर रही है, करेगी भी। फिर आपके पाँव में झुकेगी। पहले आपको झुकाने की कोशिश करेगी, फिर खुद झुक जायेगी। सिर्फ इसमें आज बापदादा एक ही शब्द बार-बार अण्डरलाइन करा रहा है। ''**बाप समान बनना है**'' - अपने इस लक्ष्य के स्वमान में रहो और सम्मान देना अर्थात् सम्मान लेना, लेने से नहीं मिलेगा, देना अर्थात् लेना है। सम्मान दे – यह यथार्थ नहीं है, सम्मान देना ही लेना है। स्वमान बॉडी कान्सेस का नहीं, ब्राह्मण जीवन का स्वमान, श्रेष्ठ आत्मा का स्वमान, सम्पन्नता का स्वमान। तो स्वमान और सम्मान लेना नहीं है लेकिन देना ही लेना है - इन दो बातों में दृढ़ता रखो। आपकी दृढ़ता को कोई कितना भी हिलाये, दृढ़ता को ढीला नहीं करो। मजबूत करो, अचल बनो। तब यह जो बापदादा से प्रॉमिस किया है, 6 मास का। प्रॉमिस तो याद है ना। यह नहीं देखते रहना कि अभी तो 15 दिन पूरा हुआ है, साढ़े पाँच मास तो पड़े हैं। जब रूहरिहान करते हैं ना - अमृतवेले रूहरिहान तो करते हैं, तो बापदादा को बहुत अच्छी-अच्छी बातें सुनाते हैं। अपनी बातें जानते तो हो ना? तो अब 'दृढ़ता' को अपनाओ। उल्टी बातों में दृढ़ता नहीं रखना। क्रोध करना ही है, मुझे दृढ़ निश्चय है, ऐसे नहीं करना। क्यों? आजकल बापदादा के पास रिकार्ड में मैजारिटी क्रोध के भिन्न-भिन्न प्रकार की रिपोर्ट पहुँचती है। महारूप में कम है लेकिन अंश रूप में भिन्न-भिन्न प्रकार का क्रोध का रूप ज्यादा है।

इस पर क्लास कराना - क्रोध के कितने रूप हैं? फिर क्या कहते हैं, हमारा न भाव था, न भावना थी, ऐसे ही कह दिया। इस पर क्लास कराना।

टीचर्स बहुत आई हैं ना? (1200 टीचर्स हैं) 1200 ही दृढ़ संकल्प कर लें तो कल ही परिवर्तन हो सकता है। फिर इतने एक्सीडेंट नहीं होंगे, बच जायेंगे सभी। टीचर्स हाथ उठाओ। बहुत हैं। टीचर अर्थात् निमित्त फाउण्डेशन। अगर फाउण्डेशन पक्का अर्थात् दृढ़ रहा तो झाड़ तो आपेही ठीक हो जायेगा। आजकल चाहे संसार में, चाहे ब्राह्मण संसार में हर एक को हिम्मत और सच्चा प्यार चाहिए। मतलब का प्यार नहीं, स्वार्थ का प्यार नहीं। एक सच्चा प्यार और दूसरी हिम्मत, मानो 95 परसेंट किसने संस्कार के वश, परवश होके नीचे-ऊपर कर भी लिया लेकिन 5 परसेन्ट

अच्छा किया, फिर भी अगर आप उसके ३४ परसेन्ट अच्छाई को लेकर पहले उसमें हिम्मत भरो, यह बहुत अच्छा किया फिर उसको कहो बाकी यह ठीक कर लेना, उसको फील नहीं होगा। अगर आप कहेंगी यह क्यों किया, ऐसा थोड़ेही किया जाता है, यह नहीं करना होता है, तो पहले ही बिचारा संस्कार के वश है, कमजोर है, तो वह नरवश हो जाता है। प्रोग्रेस नहीं कर सकता है। ३४ परसेन्ट की पहले हिम्मत दिलाओ, यह बात बहुत अच्छी है आपमें। यह आप बहुत अच्छा कर सकते हैं, फिर उसको अगर समय और उसके स्वरूप को समझकर बात देंगे तो वह परिवर्तन हो जायेगा। हिम्मत दो, परवश आत्मा में हिम्मत नहीं होती है। बाप ने आपको कैसे परिवर्तन किया? आपकी कमी सुनाई, आप विकारी हो, आप गन्दे हो, कहा? आपको स्मृति दिलाई आप आत्मा हो और इस श्रेष्ठ स्मृति से आपमें समर्थी आई, परिवर्तन किया। तो हिम्मत से स्मृति दिलाओ। स्मृति समर्थी स्वत: ही दिलायेगी। समझा। तो अभी तो समान बन जायेंगे ना? सिर्फ एक अक्षर याद करो - 'फ़ालो फ़ादर-मदर'। जो बाप ने किया, वह करना है। बस। कदम पर कदम रखना है। तो समान बनना सहज अनुभव होगा।

ड्रामा छोटे-छोटे खेल दिखाता रहता है। आश्चर्य की मात्रा तो नहीं लगाते? अच्छा।

अनेक बच्चों के कार्ड, पत्र, दिल के गीत बापदादा के पास पहुँच गये हैं। सभी कहते हैं हमारी भी याद देना, हमारी भी याद देना। तो बाप भी कहते हैं हमारी भी यादप्यार दे देना। याद तो बाप भी करते, बच्चे भी करते, क्योंकि इस छोटे से संसार में है ही बापदादा और बच्चे और विस्तार तो है ही नहीं। तो कौन याद आयेगा? बच्चों को बाप, बाप को बच्चे। तो देश-विदेश के बच्चों को बापदादा भी बहुत-बहुत-बहुत-बहुत याद-प्यार देते हैं।

यह माताओं का झुण्ड बहुत अच्छा आया है। सदैव बुजुर्ग मातायें यही सोचकर आती हैं, अभी एक बार तो मिलकर आयें, फिर देखा जायेगा। ऐसे सोचते-सोचते भी कई बार आ चुकी हैं। अच्छा करती हैं। बापदादा माताओं की हिम्मत देखकर खुश होते हैं। ताली बजाओड हाि'जर हो जाती हैं। (सभी ने खूब तालियाँ बजाई) अच्छा है ताली बजाने में खुशी होती है। माताओं की भी रौनक अच्छी है। देखो, ड्रामा में

माताओं से बाप का, परिवार का प्यार है इसलिए पहला चांस माताओं को ही मिला है। माताओं के टर्न में पानी भी पहुँच गया है। कोई तकलीफ हुई क्या! नहीं ना! एकानामी की या नहीं? एकानामी किया? सबकी दिल बड़ी है ना। जब दिल बड़ी होती है तो सब ठीक चलता है। थोड़ी बहुत खिटखिट तो होती है, वह कोई बड़ी बात नहीं। ठीक है ना - मधुबन के, शान्तिवन के पाण्डव। मजबूत हैं ना, तोड़ निभायेंगे ना? कहो दादी अगर पानी नहीं आया तो हम बाल्टियाँ भरकर भी आयेंगे। पानी कैसे नहीं हाज़िर होगा, जब इतने बच्चे हाज़िर हो जायेंगे तो पानी कैसे नहीं हाज़िर होगा। अच्छा।

चारों ओर के ब्राह्मण संसार की विशेष आत्माओं को, सदा दृढ़ता द्वारा सफलता प्राप्त करने वाले सफलता के सितारों को, सदा स्वयं को सम्पन्न बनाए आत्माओं की पुकार को पूर्ण करने वाली सम्पन्न आत्माओं को, सदा निर्बल को, परवश को अपने हिम्मत के वरदान द्वारा हिम्मत दिलाने वाली, बाप के मदद के पात्र आत्माओं को, सदा विश्व-परिवर्तक बन स्व-परिवर्तन से माया, प्रकृति और कमज़ोर आत्माओं को परिवर्तन करने वाली परिवर्तक आत्माओं को, बापदादा का चारों ओर के छोटे से संसार की सर्व आत्माओं को सम्मुख आई हुई श्रेष्ठ आत्माओं को अरब-खरब गुणा यादप्यार और नमस्ते।

कर्नाटक के सेवाधारी आये हैं :- अच्छा पार्ट बजा रहे हैं, सभी को अच्छी सैलवेशन दी है। तो कर्नाटक निवासियों को सेवा के सन्तुष्टता की बहुत-बहुत मुबारक हो। आलराउण्ड पार्ट अच्छा बजाया। सन्तुष्टता का सबसे सहज आधार है **''पहले आप''।** पहले आप कहते जाओ, साथी बनाते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। पहले मैं नहीं, पहले आप। तो कर्नाटक वालों ने भी हिम्मत अच्छी दिखाई है। परिवार भी खुश, बापदादा भी खुश, सेवाधारी हाथ उठाओ। सर्व के सहयोग से सन्तुष्टता का वरदान ले लिया, अच्छा।

दादी जी से – आपको बापदादा ने मेहनत बहुत दी है। मुहब्बत के कारण मेहनत नहीं लगती है। (बाबा आप बैठे हैं हम तो कठपुतलियाँ हैं) फिर भी अच्छा, बहुत अच्छा पार्ट बजा रही हो। (सुनने में नहीं आ रहा है) कोई बात नहीं, जब कान ढीले होते हैं ना तो नयनों की भाषा से जल्दी कैच करते हैं। प्यार तो सभी से है। आप सभी दादियों में जैसे सभी की जान है। अच्छा है। जो भी निमित्त बने हैं ना, चाहे गुप्त

रूप में, चाहे प्रत्यक्ष रूप में सहयोग देना - यह पार्ट बहुत अच्छा बजा रही हो, देखने में भले यह दो दादियां आती हैं लेकिन आप लोग समाये हुए हैं। आप लोगों का मधुबन में हाजिर होना ही मदद है, जो भी निमित्त बने हुए हैं, आप लोगों में रग-रग में हजूर हाज़िर है। जब हजूर हाज़िर है, तो आपका हाज़िर होना ही सब कुछ है। पालना ली हुई है। ऐसा भाग्य कितने थोड़ों का है। एक पालना लेना और दूसरा निमित्त बनना, यह भी एक ड्रामा में हीरो पार्ट है। रिटर्न कर रहे हो ना! तो रिटर्न करने का गुप्त में जमा होता रहता है। सुना।

(७४ तारीख को मधुबन आते समय आगरा सेवाकेन्द्र की माताओं की गाडी एक ट्रक से टकरा गई, जिसमें करीब ६ मातायें, एक टीचर तथा ड्राइवर टोटल - ८ ने अपना पुराना शरीर छोड़ दिया और एक दिल्ली की पुरानी माता ने शान्तिवन में शरीर छोड़ा है, यह समाचार बापदादा को सुना रहे हैं)

यह कोई-कोई होता है। उन्हों की दिल में उस समय भी बाबा ही बाबा था। बाबा-बाबा ही कर रहे थे। सभी को बाबा-बाबा ही याद था। नज़दीक आकर ऊपर चली गई। पुरानी-पुरानी थी ना इसलिए उन्हों को बाबा-बाबा ही याद था और बाबा-बाबा कहते ही गई हैं। अवस्था अच्छी रही, चिल्लाया नहीं। दर्द तो काफी हुआ है। फिर भी अवस्था अच्छी रही। देखो, एडवांस पार्टी में सब चाहिए। अभी आप लोग जायेंगे तो एडवांस पार्टी भी तैयार चाहिए ना। इतने सारे चाहिए। तो एडवांस पार्टी की तैयारी हो रही है क्योंकि सभी मातायें पक्की थी। साकार बाप की पालना लेने वाली, तो पालना तो देंगी ना। (एक कुमारी [illegible] साल की थी) वह भी लगन वाली थी। एडवांस पार्टी में अपना पार्ट बजायेंगे। समय नजदीक आ रहा है तो तैयारी सब चाहिए ना।

अच्छा - ओम् शान्ति।

साक्षात् ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फ़रिश्ता बनो तब साक्षात्कार शुरू हो

आज ब्राह्मण संसार के रचता बापदादा अपने ब्राह्मण संसार को देख-देख हर्षित हो रहे हैं। कितना छोटा सा प्यारा संसार है। हर एक ब्राह्मण के मस्तक पर भाग्य का सितारा चमक रहा है। नम्बरवार होते हुए भी हर एक के सितारे में भगवान को पहचानने और बनने के श्रेष्ठ भाग्य की चमक है। जिस बाप को ऋषि, मुनि, तपस्वी नेती-नेती कहके चले गये, उस बाप को ब्राह्मण संसार की भोली-भाली आत्माओं ने जान लिया, पा लिया। यह भाग्य किन आत्माओं को प्राप्त होता है ? जो साधारण आत्मायें हैं। बाप भी साधारण तन में आते हैं, तो बच्चे भी साधारण आत्मायें ही पहचानती हैं। आज की इस सभा में देखो, कौन बैठे हैं ? कोई अरब-खरबपति बैठे हैं ? साधारण आत्माओं का ही गायन है। बाप गरीब-निवाज़ गाया हुआ है। अरब-खरबपति निवाज़ नहीं गाया हुआ है। बुद्धिवानों का बुद्धि क्या किसी अरब-खरबपति की बुद्धि को नहीं पलटा सकता ? क्या बड़ी बात है ! लेकिन ड्रामा का बहुत अच्छा कल्याणकारी नियम बना हुआ है, परमात्म कार्य में फुरी-फुरी (बूंद-बूंद) तलाव होना है। अनेक आत्माओं का भविष्य बनना है। 10-20 का नहीं, अनेक आत्माओं का सफल होना है। इसीलिए गायन है - 'बूँद-बूँद से तलाब'। आप सभी जितना तन-मन-धन सफल करते रहते हो उतना ही सफलता के सितारे बन गये हो। सभी सफलता के सितारे बने हो ? बने हो या अभी बनना है, सोच रहे हो ? सोचो नहीं। करेंगे, देखेंगे, करना तो है ही....यह सोचना भी समय गँवाना है। भविष्य और वर्तमान की प्राप्ति गँवाना है।

बापदादा के पास कोई-कोई बच्चों का एक संकल्प पहुँचता है। बाहर वाले तो बिचारे हैं लेकिन ब्राह्मण आत्मायें बिचारे नहीं, विचारवान हैं, समझदार हैं। लेकिन कभी-कभी कोई-कोई बच्चों में एक कमजोर संकल्प उठता है, बतायें। बतायें ? सभी हाथ उठा रहे हैं, बहुत अच्छा। कभी-कभी सोचते हैं कि क्या विनाश होना है या होना नहीं है ! 99 का चक्कर भी पूरा हो गया, 2000 भी पूरा होना ही है। अब कब तक ? बापदादा सोचते हैं - हँसी की बात है कि विनाश को सोचना अर्थात बाप को विदाई

देना क्योंकि विनाश होगा तो बाप तो परमधाम में चले जायेंगे ना! तो संगम से थक गये हैं क्या ? हीरे तुल्य कहते हो और गोल्डन को ज़्यादा याद करते हो, होना तो है लेकिन इन्तजार क्यों करते ? कई बच्चे सोचते हैं सफल तो करें लेकिन विनाश हो जाए कल परसों तो, हमारा तो काम में आया ही नहीं। हमारा तो सेवा में लगा नहीं। तो करें, सोच कर करें। हिसाब से करें, थोड़ा-थोड़ा करके करें। यह संकल्प बाप के पास पहुँचते हैं। लेकिन मानों आज आप बच्चों ने अपना तन सेवा में समर्पण किया, मन विश्व-परिवर्तन के वायब्रेशन में निरन्तर लगाया, धन जो भी है, है तो प्राप्ति के आगे कुछ नहीं लेकिन जो भी है, आज आपने किया और कल विनाश हो जाता है तो क्या आपका सफल हुआ या व्यर्थ गया ? सोचो, सेवा में तो लगा नहीं, तो क्या सफल हुआ ? आपने किसके प्रति सफल किया ? बापदादा के प्रति सफल किया ना ? तो बापदादा तो अविनाशी है, वह तो विनाश नहीं होता! अविनाशी खाते में, अविनाशी बापदादा के पास आपने आज जमा किया, एक घण्टा पहले जमा किया, तो अविनाशी बाप के पास आपका खाता एक का पदमगुणा जमा हो गया। बाप बंधा हुआ है, एक का पदम देने के लिए। तो बाप तो नहीं चला जायेगा ना! पुरानी सृष्टि विनाश होगी ना! इसीलिए आपका दिल से किया हुआ, मजबूरी से किया हुआ, देखा-देखी में किया हुआ, उसका पूरा नहीं मिलता है। मिलता ज़रूर है क्योंकि दाता को दिया है लेकिन पूरा नहीं मिलता है। इसलिए यह नहीं सोचो – अच्छा, अभी विनाश तो २००० तक भी दिखाई नहीं देता है, अभी तो प्रोग्राम बन रहे हैं, मकान बन रहे हैं। बड़े-बड़े प्लैन बन रहे हैं, तो २००० तक तो दिखाई नहीं देता है, दिखाई नहीं देगा। कभी भी इन बातों को अपना आधार बनाके अलबेले नहीं होना। अचानक होना है। आज यहाँ बैठे हैं, घण्टे के बाद भी हो सकता है। होना नहीं है, डर नहीं जाओ कि पता नहीं एक घण्टे के बाद क्या होना है! सम्भव है। इतना एवररेडी रहना ही है। शिवरात्रि तक करना है, यह सोचो नहीं। समय का इन्तजार नहीं करो। समय आपकी रचना है, आप मास्टर रचता हो। रचता – रचना के अधीन नहीं होता है। समय रचना आपके ऑर्डर पर चलने वाली है। आप समय का इन्तजार नहीं करो, लेकिन अभी समय आपका इन्तजार कर रहा है। कई बच्चे सोचते हैं, ६ मास के लिए बापदादा

ने कहा है तो ҽ मास तो होगा ही। होगा ही ना! लेकिन बापदादा कहते हैं यह हद की बातों का आधार नहीं लो, एवररेडी रहो। निराधार, एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति। चैलेन्ज करते हो एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति का वर्सा लो। तो क्या आप एक सेकण्ड में स्वयं को जीवनमुक्त नहीं बना सकते हैं? इसलिए **इन्तजार नहीं, सम्पन्न बनने का इन्तजाम करो।**

बापदादा को बच्चों के खेल देख करके हँसी भी आती है। कौन से खेल पर हंसी आती है? बतायें क्या? आज मुरली नहीं चला रहे हैं, समाचार सुना रहे हैं। अभी तक कई बच्चों को खिलौनों से खेलना बहुत अच्छा लगता है। छोटी-छोटी बातों के खिलौने से खेलना, छोटी बात को अपनाना, यह समय गँवाते हैं। यह साइडसीन्स हैं। भिन्न-भिन्न संस्कार की बातें वा चलन यह सम्पूर्ण मंजिल के बीच में साइडसीन्स हैं। इसमें रुकना अर्थात् सोचना, प्रभाव में आना, समय गँवाना, रुचि से सुनना, सुनाना, वायुमण्डल बनाना.... यह है रुकना, इससे सम्पूर्णता की मंजिल से दूर हो जाते हैं। मेहनत बहुत, चाहना बहुत "बाप समान बनना ही है", शुभ संकल्प, शुभ इच्छा है लेकिन मेहनत करते भी रूकावट आ जाती है। दो कान हैं, दो आँखें हैं, मुख है तो देखने में भी आता, सुनने में भी आता, बोलने में भी आता, लेकिन बाप का बहुत पुराना स्लोगन सदा याद रखो - 'देखते हुए नहीं देखो, सुनते हुए नहीं सुनो। सुनते हुए नहीं सोचो, सुनते हुए अन्दर समाओ, फैलाओ नहीं।' यह पुराना स्लोगन याद रखना जरूरी है क्योंकि दिन-प्रतिदिन जो भी सभी के जैसे पुराने शरीर के हिसाब चुक्तू हो रहे हैं, ऐसे ही पुराने संस्कार भी, पुरानी बीमारियाँ भी सबकी निकलके खत्म होनी है, इसीलिए घबराओ नहीं कि अभी तो पता नहीं और ही बातें बढ़ रही हैं, पहले तो थी नहीं। जो नहीं थी, वह भी अभी निकल रही हैं, निकलनी हैं। आपके समाने की शक्ति, सहन करने की शक्ति, समेटने की शक्ति, निर्णय करने की शक्ति का पेपर है। क्या DD साल पहले वाले पेपर आयेंगे क्या? बी.ए. के क्लास का पेपर, एम.ए. के क्लास में आयेगा क्या? इसलिए घबराओ नहीं, क्या हो रहा है। यह हो रहा है, यह हो रहा है.. खेल देखो। पेपर तो पास हो जाओ, पास-विद्-आनर हो जाओ।

बापदादा ने पहले भी सुनाया है कि पास होने का सबसे सहज साधन है, बापदादा

के पास रहो, जो आपके काम का नज़ारा नहीं है, उसको पास होने दो, **पास रहो, पास करो, पास हो जाओ।** क्या मुश्किल है? टीचर्स सुनाओ, मधुबन वाले सुनाओ। मधुबन वाले हाथ उठाओ। होशियार हैं मधुबन वाले आगे आ जाते हैं, भले आओ। बापदादा को खुशी है। अपना हक लेते हैं ना? अच्छा है, बापदादा नाराज नहीं है, भले आगे बैठो। मधुबन में रहते हैं तो कुछ तो पास खातिरी होनी चाहिए ना! लेकिन पास शब्द याद रखना। मधुबन में नई-नई बातें होती हैं ना, डाकू भी आते हैं। कई नई-नई बातें होती हैं, अभी बाप जनरल में क्या सुनायें, थोड़ा गुप्त रखते हैं लेकिन मधुबन वाले जानते हैं। मनोरंजन करो, मूंझो नहीं। या है मूंझना, या है मनोरंजन समझकर मौज में पास करना। तो मूंझना अच्छा है या पास करके मौज में रहना अच्छा है? पास करना है ना! पास होना है ना! तो पास करो। क्या बड़ी बात है? कोई बड़ी बात नहीं। बात को बड़ा करना या छोटा करना, अपनी बुद्धि पर है। जो बात को बड़ा कर देते हैं, उनके लिए अज्ञानकाल में भी कहते हैं कि यह रस्सी को सांप बनाने वाला है। सिन्धी भाषा में कहते हैं कि ''नोरी को नाग'' बनाते हैं। ऐसे खेल नहीं करो। अभी यह खेल खत्म।

आज विशेष समाचार तो सुनाया ना, बापदादा अभी एक सहज पुरुषार्थ सुनाते हैं, मुश्किल नहीं। सभी को यह संकल्प तो है ही कि 'बाप समान बनना ही है।' बनना ही है, पक्का है ना! फारेनर्स बनना ही है ना? टीचर्स बनना है ना? इतनी टीचर्स आई हैं! वाह! कमाल है टीचर्स की। बापदादा ने आज खुशखबरी सुनी, टीचर्स की। कौन सी खुशखबरी है, बताओ। टीचर्स को आज गोल्डन मैडल (बैज) मिला है। जिसको गोल्डन मैडल मिला है, हाथ उठाओ। पाण्डवों को भी मिला है? बाप की हमजिन्स तो रहनी नहीं चाहिए। पाण्डव ब्रह्मा बाप की हमजिन्स हैं। (उन्हों को और प्रकार का गोल्डन मैडल मिला है) पाण्डवों को रायॅल गोल्ड मैडल है। गोल्डन मैडल वालों को बापदादा की अरब-खरब बारी मुबारक है, मुबारक है, मुबारक है।

बापदादा, जो देश-विदेश में सुन रहे हैं, और गोल्डन मैडल मिल चुका है, वह सभी भी समझें हमें भी बापदादा ने मुबारक दी है, चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियाँ हैं, किसी भी कार्य के निमित्त बनने वालों को खास यह दादियाँ, परिवार में रहने वालों

को भी कोई विशेषता के आधार पर गोल्डन मैडल देती हैं। तो जिसको भी जिस भी विशेषता के आधार पर चाहे सरेण्डर के आधार पर, चाहे कोई भी सेवा में विशेष आगे बढ़ने वाले को दादियों द्वारा भी गोल्डन मैडल मिला है, तो दूर बैठे सुनने वालों को भी बहुत-बहुत मुबारक है। आप सब दूर बैठकर मुरली सुनने वालों के लिए, गोल्डन मैडल वालों के लिए एक हाथ की ताली बजाओ, वह आपकी ताली देख रहे हैं। वह भी हँस रहे हैं, खुश हो रहे हैं।

बापदादा सहज पुरुषार्थ सुना रहे थे - अभी समय तो अचानक होना है, एक घण्टा पहले भी बापदादा अनाउन्स नहीं करेगा, नहीं करेगा, नहीं करेगा! नम्बर कैसे बनेंगे? अगर अचानक नहीं होगा तो पेपर कैसे हुआ? पास विद आनर का सर्टीफिकेट, फाइनल सर्टीफिकेट तो अचानक में ही होना है। इसलिए दादियों का एक संकल्प बापदादा के पास पहुँचा है। दादियाँ चाहती हैं कि अभी बापदादा साक्षात्कार की चाबी खोले, यह इन्हों का संकल्प है। आप सब भी चाहते हो? बापदादा चाबी खोलेंगे या आप निमित्त बनेंगे? अच्छा, बापदादा चाबी खोले, ठीक है। बापदादा हाँ जी करते हैं, (ताली बजा दी) पहले पूरा सुनो। बापदादा को चाबी खोलने में क्या देरी है, लेकिन करायेगा किस द्वारा? प्रत्यक्ष किसको करना है? बच्चों को या बाप को? बाप को भी बच्चों द्वारा करना है क्योंकि अगर ज्योतिबिन्दु का साक्षात्कार भी हो जाए तो कई तो बिचारे..., बिचारे हैं ना! तो समझेंगे ही नहीं कि यह क्या है। अन्त में शक्तियां और पाण्डव बच्चों द्वारा बाप को प्रत्यक्ष होना है। तो बापदादा यही कह रहे हैं कि जब सब बच्चों का एक ही संकल्प है कि बाप समान बनना ही है, इसमें तो दो विचार नहीं हैं ना! एक ही विचार है ना। तो ब्रह्मा बाप को फ़ालो करो। अशरीरी, बिन्दी ऑटोमेटिकली हो जायेंगे। ब्रह्मा बाप से तो सबका प्यार है ना! सबसे ज़्यादा देखा गया है, वैसे तो सभी का है लेकिन फारेनर्स का ब्रह्मा बाप से बहुत प्यार है। इस नेत्र द्वारा देखा नहीं है लेकिन अनुभव के नेत्र द्वारा फारेनर्स ने मैजॉरिटी ब्रह्मा बाबा को देखा है और बहुत प्यार है। ऐसे तो भारत की गोपिकायें, गोप भी हैं फिर भी बापदादा फारेनर्स की कभी-कभी अनुभव की कहानियाँ सुनते हैं, भारतवासी थोड़ा गुप्त रखते हैं, वह ब्रह्मा बाबा के प्रति सुनाते हैं तो उन्हों की कहानियाँ बापदादा भी सुनते हैं और औरों

को भी सुनाते हैं, मुबारक हो फारेनर्स को। लंदन, अमेरिका, आस्ट्रेलिया, अफ्रीका, एशिया, रशिया, जर्मनी... मतलब तो चारों ओर के फारेनर्स को जो दूर बैठे भी सुन रहे हैं, उन्हों को भी बापदादा मुबारक देते हैं, खास ब्रह्मा बाबा मुबारक दे रहे हैं। भारत वालों का थोड़ा गुप्त है, प्रसिद्ध इतना नहीं कर सकते हैं, गुप्त रखते हैं। अभी प्रत्यक्ष करो। बाकी भारत में भी बहुत अच्छे-अच्छे हैं। ऐसी गोपिकायें हैं, अगर उन्हों का अनुभव आजकल के प्राइममिनिस्टर, प्रेजीडेंट भी सुनें तो उनकी आँखों से भी पानी आ जाए। ऐसे अनुभव हैं लेकिन गुप्त रखते हैं इतना खोलते नहीं हैं, चांस भी कम मिलता है। तो बापदादा यह कह रहे हैं कि ब्रह्मा बाप से सबका प्यार तो है, इसीलिए तो अपने को क्या कहलाते हो ? ब्रह्माकुमारी या शिव कुमारी ? ब्रह्माकुमारी कहलाते हो ना, तो ब्रह्मा बाप से प्यार तो है ही ना। तो चलो अशरीरी बनने में थोड़ी मेहनत करनी भी पड़ती है लेकिन ब्रह्मा बाप अभी किस रूप में है ? किस रूप में है ? बोलो ? (फ़रिश्ता रूप में है) तो ब्रह्मा से प्यार अर्थात् फ़रिश्ता रूप से प्यार। चलो बिन्दी बनना मुश्किल लगता है, फ़रिश्ता बनना तो उससे सहज है ना ! सुनाओ, बिन्दी रूप से फ़रिश्ता रूप तो सहज है ना ! आप एकाउन्ट का काम करते बिन्दी बन सकते हो ? फ़रिश्ता तो बन सकते हो ना ! बिन्दी रूप में कर्म करते हुए कभी-कभी व्यक्त शरीर में आ जाना पड़ता है लेकिन बापदादा ने देखा कि साइंस वालों ने एक लाइट के आधार से रोबट बनाया है, सुना है ना ! चलो देखा नहीं सुना तो है ! माताओं ने सुना है ? आपको चित्र दिखा देंगे। वह लाइट के आधार से रोबट बनाया है और वह सब काम करता है। और फास्ट गति से करता है, लाइट के आधार से। और साइंस का प्रत्यक्ष प्रमाण है। तो बापदादा कहते हैं क्या साइलेन्स की शक्ति से, साइलेन्स की लाइट से आप कर्म नहीं कर सकते ? नहीं कर सकते ? इन्जीनियर और साइंस वाले बैठे हैं ना ! तो **आप भी एक रूहानी रोबट की स्थिति तैयार करो। जिसको कहेंगे रूहानी कर्मयोगी, फ़रिश्ता कर्मयोगी।** पहले आप तैयार हो जाना। इन्जीनियर हैं, साइंस वाले हैं तो पहले आप अनुभव करना। करेंगे ? कर सकते हैं ? अच्छा, ऐसे प्लैन बनाओ। बापदादा ऐसे रूहानी चलते फिरते कर्मयोगी फ़रिश्ते देखने चाहते हैं। अमृतवेले उठो, बापदादा से मिलन मनाओ, रूह-रूहान करो, वरदान लो।

जो करना है वह करो। लेकिन बापदादा से रोज़ अमृतवेले 'कर्मयोगी फ़रिश्ता भव' का वरदान लेके फिर कामकाज में आओ। यह हो सकता है?

आप लोगों की डिपार्टमेंट (एकाउन्ट की) सबसे दिमाग चलाने वाली है, हो सकता है? मधुबन वाले हाथ उठाओ। जो समझते हैं हो सकता है वह बड़ा हाथ उठाओ। मधुबन की बहनों ने उठाया! मधुबन का वायब्रेशन तो चारों ओर फैलेगा ही। इसमें फ़रिश्ते स्वरूप में कर्मयोगी, डबल लाइट, लाइट के शरीर से, लाइट बन कर्म कर रहे हैं। बोलो तो भी फ़रिश्ते रूप में, काम करो फ़रिश्ते रूप में। जिससे काम है वही एक सुने दूसरा सुने ही नहीं। वातावरण क्यों बनता है?

बापदादा ने देखा है कोई भी छोटी बात का वातावरण बनने का कारण जो बात करते हैं ना, वह ऐसे करते हैं जो जिसका उस बात से सम्बन्ध ही नहीं है, उनके भी कानों में पड़ती है। उनका भी व्यर्थ संकल्प चलना शुरू हो जाता है। इसलिए फ़रिश्ता अर्थात् जिसका काम वही सुने। जितना काम है उतना ही बोले, कहानी बनाके नहीं बोले। कथा नहीं करो। कथा हमेशा मिक्स भी होती है और लम्बी भी होती है। तो ब्रह्मा बाप के प्यार का रिटर्न है - **ब्रह्मा बाप समान कर्मयोगी फ़रिश्ता भव।**

बापदादा यही कह रहे हैं - इस स्थिति की धरनी तैयार करो तो बापदादा साक्षात बाप बच्चों द्वारा साक्षात्कार अवश्य करायेगा। 'साक्षात् बाप और साक्षात्कार' - यह दो शब्द याद रखना। बस हैं ही फ़रिश्ते। सेवा भी करते हैं, ऊपर की स्टेज से फ़रिश्ते आये, सन्देश दिया फिर ऊपर चले गये अर्थात् ऊँची स्मृति में चले गये।

अभी समय अनुसार जैसे कहाँ-कहाँ पानी के प्यासी हैं, ऐसे वर्तमान समय शुद्ध, शान्तिमय, सुखमय वायब्रेशन के प्यासी हैं। फ़रिश्ते रूप से ही वायब्रेशन फैला सकते हो। फ़रिश्ता अर्थात् सदा ऊँच स्थिति में रहने वाले। फ़रिश्ता अर्थात् पुराने संसार और पुराने संस्कार से नाता नहीं। अभी संसार परिवर्तन आप सबके संस्कार परिवर्तन के लिए रुका हुआ है।

इस नये वर्ष में लक्ष्य रखो - संस्कार परिवर्तन, स्वयं का भी और सहयोग द्वारा औरों का भी। कोई कमजोर है तो सहयोग दो, न वर्णन करो, न वातावरण बनाओ। सहयोग दो। इस वर्ष की टॉपिक ''संस्कार परिवर्तन''। फ़रिश्ता

संस्कार, ब्रह्मा बाप समान संस्कार। तो सहज पुरुषार्थ है या मुश्किल है? थोड़ा-थोड़ा मुश्किल है? कभी भी कोई बात मुश्किल होती नहीं है, अपनी कमज़ोरी मुश्किल बनाती है। इसीलिए बापदादा कहते हैं ''हे मास्टर सर्वशक्तिवान बच्चे, अभी शक्तियों का वायुमण्डल फैलाओ।'' अभी वायुमण्डल को आपकी बहुत-बहुत-बहुत आवश्यकता है। जैसे आजकल विश्व में पोल्यूशन की प्राबलम है, ऐसे विश्व में एक घड़ी मन में शान्ति सुख के वायुमण्डल की आवश्यकता है क्योंकि मन का पोल्यूशन बहुत है, हवा की पोल्यूशन से भी ज्यादा है। अच्छा।

चारों ओर के बापदादा समान बनना ही है, लक्ष्य रखने वाले, निश्चय बुद्धि विजयी आत्माओं को, सदा पुराने संसार और पुराने संस्कार को दृढ़ संकल्प द्वारा परिवर्तन करने वाले मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को, सदा किसी भी कारण से सरकमस्टांश से स्वभाव-संस्कार से, कमजोर साथियों को, आत्माओं को सहयोग देने वाले, कारण देखने वाले नहीं, निवारण करने वाले ऐसे हिम्मतवान आत्माओं को, सदा ब्रह्मा बाप के स्नेह का रिटर्न देने वाले कर्मयोगी फ़रिश्ते आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

सेवा का टर्न पंजाब का है, पंजाब वालों का ब्रह्मा बाप से अच्छा प्यार है।

अच्छा है, ब्रह्मा बाप की पालना भी ली है, तो जैसे आजकल प्राइज देने का प्रोग्राम बना रहे हैं, तो बापदादा समझते हैं कि जैसे कल्चर आफ पीस में नम्बरवन प्राइज कोई भी ज़ोन वाले ने लिया है, सेन्टर ने लिया है, ऐसे यह कर्मयोगी फरिश्ते स्वरूप की स्टेज में नम्बरवन प्राइज़ पंजाब लेवे। हो सकता है? पंजाब वाले हाथ उठाओ। लेंगे फर्स्ट प्राइज? पंजाब वाले जो फर्स्ट प्राइज लेंगे वह एक हाथ की ताली बजाओ। पंजाब की टीचर्स एक हाथ की ताली बजाओ। बहुत समय बैठे हो, ड्रिल करो, उठो। और सेन्टर से जो मुख्य पाण्डव हैं वह भी उठो। फर्स्ट प्राइज़ लेंगे? अच्छा, अभी देखेंगे तीन प्राइज़ कौन लेता है। फर्स्ट, सेकण्ड, थर्ड, तीन प्राइज़ बापदादा देंगे। कितने टाइम में प्राइज़ देंगे? (दादी ने कहा मई तक) (बापदादा पंजाब की अचल बहन से पूछ रहे हैं? (६ मास में पूरा पुरुषार्थ रहेगा) टीचर्स बताओ ६

मास चाहिए ? जिसको ੬ मास चाहिए वह हाथ उठाओ। अच्छा बाकी को क्या चाहिए ੧੨ मास ? कम समय चाहिए। चलो बापदादा लास्ट मार्च में पेपर लेगा ? फिर परसेन्टेज में हो या फाइनल हो, उस अनुसार प्राइज देंगे। ठीक है ना ! मार्च में लास्ट टर्न में। (अभी लास्ट टर्न शिवरात्रि पर है) फरवरी एन्ड या मार्च बात एक ही है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि सिर्फ पंजाब तैयार हो, सभी ज़ोन, सभी सेन्टर को तैयार होना है। हो सकता है पंजाब से आगे कोई फर्स्ट से भी आगे जाए ए वन। इसलिए सभी ज़ोन का पेपर लेंगे ? मधुबन भी ज़ोन है, ऐसे नहीं समझना हम ज़ोन में नहीं है। पहले मधुबन। अच्छा।

जगदीश भाई से :- ठीक है ना ! (ज़्यादा तो आप जानते हैं) अच्छा है। अभी नेचरल साधन से ही ठीक है। सेवा तो आपने आदि से बहुत की है, (फ़र्ज अदा किया है अपना भाग्य बनाया है) अभी भी चाहे शरीर द्वारा ज़्यादा नहीं कर सकते, लेकिन जिन आत्माओं ने जिस सेवा के निमित्त बन सेवा की इन्वेन्शन के निमित्त बने हैं, उन्हों को उस सेवा की सफलता के शेयर जमा होते हैं। जैसे प्रदर्शनी की इन्वेन्शन हुई, तो उस द्वारा क्वान्टिटी को सन्देश मिल रहा है, मेला हुआ यह भी क्वान्टिटी की सेवा, वी.आई.पी आता है तो कोई कोई, लेकिन कान्फ्रेन्स हुई तो कान्फ्रेन्स की सेवा से स्पीच की आकर्षण से वी.आई.पी. आते हैं उन्हों की सेवा होती है, लेकिन उसमें भी कोई-कोई। अभी जो वर्गीकरण की सेवा हो रही है, इसमें भिन्न-भिन्न वर्ग के वी.आई.पी. का आना हो रहा है और वर्गीकरण की सेवा से नजदीक सहयोग में भी आते हैं, क्यों ? एक तो ੧੮ वर्ग हैं, विस्तार है। तो ੧੮ वर्ग ही अलग-अलग सेवा कर रहे हैं, अलग-अलग वी.आई.पी. को इन्वाइट करते हैं और दूसरा ੨-੩ दिन रहने का साधन मिलता है। कान्फ्रेन्स में आते हैं लेकिन वी.आई.पी. जो हैं वह भाषण करके मैजारिटी चले जाते हैं फिर भी साधन है, आकर्षण है, वी.आई.पी को स्पीच करने की। तो जिन्होंने भी जो भी इन्वेन्शन की है, निमित्त बने हैं उनको उनकी सेवा का शेयर मिलता है। इसलिए आप फिकर नहीं करो कि मैं सेवा नहीं कर सकता, नहीं, सेवा हो रही है। भिन्न-भिन्न सेवा के निमित्त बने ना। यह (रमेश भाई) प्रदर्शनी के बने, वह (निर्वैर भाई) सीढ़ी के बने, कोई न कोई सेवा के निमित्त बने, कोई कान्फ्रेन्स के निमित्त बनते हैं

और दादियाँ तो सभी में हैं। आप विंग्स के निमित्त हैं। दादियों की भी छत्रछाया है। हाँ विदेश में भी सेवा की। तो फाउण्डेशन डालने में मेहनत होती है। इसलिए फिकर नहीं करो आपका शेयर इक्ट्ठा हो रहा है। थोड़ा फ़िकर है। (बाबा को प्रत्यक्ष नहीं किया है, यह फ़िकर है) यह वायुमण्डल से हो जायेगा। समय इन्तजार कर रहा है, पर्दा खुलने के लिए। अभी इस वर्ष में फ़रिश्ता रूप बन जाएँ, चारों ओर साक्षात्कार शुरू हो जायेंगे। देखेंगे यह कौन आया, यह ब्रह्मा बाबा को जैसे पहले-पहले देखा, ऐसे ब्रह्मा बाप के साथ-साथ आप पाण्डव शक्तियों को देखेंगे। ढूँढ़ेंगे यह कौन हैं, कहाँ हैं। पहली-पहली आत्मा निकली हो दिल्ली सेवा में। और आते ही सेवा शुरू कर दी, पहला-पहला किताब याद है कौन-सा लिखा था ? कुम्भ के मेले के लिए लिखा था। तो आते ही सेवा की है ना ! इसलिए आपको फल मिलेगा। तो करो डांस। गणपति डांस, करो। (जगदीश भाई ने गणपति डांस की)

अच्छा है, निमित्त सेवा है लेकिन भाग्य की लकीर लम्बी खींच रही है। (तनजानिया से जगदीश भाई के लिए नेचरोपैथी की डाक्टर आई है) अच्छा है निमित्त बनने का गोल्डन चांस मिला है। ऐसे अनुभव करती हो ?

अच्छा है, सहयोग देना, सहयोगी बनना अर्थात् स्वयं का खाता बढ़ाना। अच्छा-ओम् शान्ति।

मुरली दादा, रजनी बहन से (जयन्ती बहन के लौकिक मात-पिता) – बापदादा का हाथ और साथ सदा आदि से है और अन्त तक है ही है। (दादी जानकी कह रही हैं कभी-कभी दिल छोटी कर देते हैं) नहीं। बापदादा का हाथ और साथ दोनों के ऊपर है ही। क्यों ? कारण ? आपके शेयर का खाता बहुत बड़ा है। जो कन्यादान किया है उसकी सेवा का शेयर आपके खाते में जमा है, इसलिए खुश रहो। बेफ़िकर बादशाह। बेफ़िकर बापदादा हैं ना ! सहयोग मिलता रहेगा। अच्छा। कोई फ़िकर नहीं करो, बापदादा कोई-न-कोई को निमित्त बनाता है। बहुत अच्छा किया।

बचत का खाता जमा कर अखण्ड महादानी बनो

आज नव युग रचता अपने नव युग अधिकारी बच्चों को देख रहे हैं। आज पुराने युग में साधारण हैं और कल नये युग में राज्य अधिकारी पूज्य हैं। आज और कल का खेल है। आज क्या और कल क्या! जो अनन्य ज्ञानी तू आत्मा बच्चे हैं, उन्हों के सामने आने वाला कल भी इतना ही स्पष्ट है जितना आज स्पष्ट है। आप सभी तो नया वर्ष मनाने आये हो लेकिन बापदादा नया युग देख रहे हैं। नये वर्ष में तो हर एक ने अपना-अपना नया प्लैन बनाया ही होगा। आज पुराने की समाप्ति है, समाप्ति में सारे वर्ष की रिजल्ट देखी जाती है। तो आज बापदादा ने भी हर एक बच्चों का वर्ष का रिजल्ट देखा। बापदादा को तो देखने में समय नहीं लगता है। तो आज विशेष सभी बच्चों के जमा का खाता देखा। पुरुषार्थ तो सभी बच्चों ने किया, याद में भी रहे, सेवा भी की, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी लौकिक या अलौकिक परिवार में निभाया, लेकिन इन तीनों बातों में जमा का खाता कितना हुआ ?

आज वतन में बापदादा ने जगत अम्बा माँ को इमर्ज किया। (खाँसी आई) आज बाजा थोड़ा खराब है, बजाना तो पड़ेगा ना। तो बापदादा और मम्मा ने मिलकर सभी के बचत का खाता देखा। बचत करके जमा कितना हुआ! तो क्या देखा ? नम्बरवार तो सभी हैं ही लेकिन जितना जमा का खाता होना चाहिए उतना खाते में जमा कम था। तो जगत अम्बा माँ ने प्रश्न पूछा - याद की सब्जेक्ट में कई बच्चों का लक्ष्य भी अच्छा है, पुरुषार्थ भी अच्छा है, फिर जमा का खाता जितना होना चाहिए उतना कम क्यों ? बातें, रूह-रूहान चलते-चलते यही रिज़ल्ट निकली कि योग का अभ्यास तो कर ही रहे हैं लेकिन योग के स्टेज की परसेन्टेज साधारण होने के कारण जमा का खाता साधारण ही है। योग का लक्ष्य अच्छी तरह से है लेकिन योग की रिज़ल्ट है-योगयुक्त, युक्तियुक्त बोल और चलन। उसमें कमी होने के कारण योग लगाने के समय योग में अच्छे हैं, लेकिन योगी अर्थात् योगी का जीवन में प्रभाव। इसलिए जमा का खाता कोई कोई समय का जमा होता है, लेकिन सारा समय जमा नहीं होता। चलते-चलते याद की परसेन्टेज़ साधारण हो जाती है। उसमें बहुत कम जमा खाता

बनता है।

दूसरा – सेवा की रूह-रूहान चली। सेवा तो बहुत करते हैं, दिनरात बिजी भी रहते हैं। प्लैन भी बहुत अच्छे-अच्छे बनाते हैं और सेवा में वृद्धि भी बहुत अच्छी हो रही है। फिर भी मैजॉरिटी का जमा का खाता कम क्यों ? तो रूह-रूहान में यह निकला कि सेवा तो सब कर रहे हैं, अपने को बिजी रखने का पुरुषार्थ भी अच्छा कर रहे हैं। फिर कारण क्या है ? तो यही कारण निकला सेवा का बल भी मिलता है, फल भी मिलता है। बल है स्वयं के दिल की सन्तुष्टता और फल है सर्व की सन्तुष्टता। अगर सेवा की, मेहनत और समय लगाया तो दिल की सन्तुष्टता और सर्व की सन्तुष्टता, चाहे साथी, चाहे जिन्हों की सेवा की दिल में सन्तुष्टता अनुभव करें, बहुत अच्छा, बहुत अच्छा कहके चले जायें, नहीं। दिल में सन्तुष्टता की लहर अनुभव हो। कुछ मिला, बहुत अच्छा सुना, वह अलग बात है। कुछ मिला, कुछ पाया, जिसको बापदादा ने पहले भी सुनाया – एक है दिमाग तक तीर लगना और दूसरा है दिल पर तीर लगना। अगर सेवा की और स्व की सन्तुष्टता, अपने को खुश करने की सन्तुष्टता नहीं, बहुत अच्छा हुआ, बहुत अच्छा हुआ, नहीं। दिल माने स्व की भी और सर्व की भी। और दूसरी बात है कि सेवा की और उसकी रिजल्ट अपनी मेहनत या मैंने किया... मैंने किया यह स्वीकार किया अर्थात् सेवा का फल खा लिया। जमा नहीं हुआ। बापदादा ने कराया, बापदादा के तरफ अटेन्शन दिलाया, अपने आत्मा की तरफ नहीं। यह बहन बहुत अच्छी, यह भाई बहुत अच्छा, नहीं। बापदादा इन्हों का बहुत अच्छा, यह अनुभव कराना - यह है जमा खाता बढ़ाना। इसलिए देखा गया टोटल रिज़ल्ट में मेहनत ज़्यादा, समय एनर्जी ज़्यादा और थोड़ा-थोड़ा शो ज़्यादा। इसलिए जमा का खाता कम हो जाता है। जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है, वह डायमण्ड चाबी है, गोल्डन चाबी लगाते हो लेकिन जमा की डायमण्ड चाबी है **''निमित्त भाव और निर्मान भाव''।** अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं सेवा करने के समय **निमित्त भाव, निर्मान भाव, नि:स्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह** इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा।

बापदादा ने जगत अम्बा माँ को दिखाया कि इस विधि से सेवा करने वाले का जमा का खाता कैसे बढ़ता जाता है। बस, सेकण्ड में अनेक घण्टों का जमा खाता जमा हो जाता है। जैसे टिक-टिक-टिक जोर से जल्दी-जल्दी करो, ऐसे मशीन चलती है। तो जगत अम्बा बड़ी खुश हो रही थी कि जमा का खाता, जमा करना तो बहुत सहज है। तो दोनों की (बापदादा और जगत अम्बा की) राय हुई कि अब नया वर्ष शुरू हो रहा है तो जमा का खाता चेक करो, सारे दिन में ग़लती नहीं की लेकिन समय, संकल्प, सेवा, सम्बन्ध-सम्पर्क में स्नेह, सन्तुष्टता द्वारा जमा कितना किया ? कई बच्चे सिर्फ यह चेक कर लेते हैं - आज बुरा कुछ नहीं हुआ। कोई को दुःख नहीं दिया। लेकिन अब यह चेक करो कि सारे दिन में श्रेष्ठ संकल्पों का खाता कितना जमा किया ? श्रेष्ठ संकल्प द्वारा सेवा का खाता कितना जमा हुआ ? कितनी आत्माओं को किसी भी कार्य से सुख कितनों को दिया ? योग लगाया लेकिन योग की परसेन्टेज किस प्रकार की रही ? आज के दिन दुआओं का खाता कितना जमा किया ?

इस नये वर्ष में क्या करना है ? कुछ भी करते हो चाहे मन्सा, चाहे वाचा, चाहे कर्मणा लेकिन समय प्रमाण मन में यह धुन लगी रहे – **मुझे अखण्ड महादानी बनना ही है।** अखण्ड महादानी, महादानी नहीं, अखण्ड। मन्सा से शक्तियों का दान, वाचा से ज्ञान का दान और अपने कर्म से गुण दान। आजकल दुनिया में, चाहे ब्राह्मण परिवार की दुनिया, चाहे अज्ञानियों की दुनिया में सुनने के बजाए देखना चाहते हैं। देखकर करना चाहते हैं। आप लोगों को सहज क्यों हुआ ? ब्रह्मा बाप को कर्म में गुण दान मूर्त देखा। ज्ञान दान तो करते ही हो लेकिन इस वर्ष का विशेष ध्यान रखो - **हर आत्मा को गुण दान अर्थात् अपने जीवन के गुण द्वारा सहयोग देना है।** ब्राह्मणों को दान तो नहीं करेंगे ना, सहयोग दो। कुछ भी हो जाए, कोई कितने भी अवगुणधारी हो, लेकिन मुझे अपने जीवन द्वारा, कर्म द्वारा, सम्पर्क द्वारा गुणदान अर्थात् सहयोगी बनना है। इसमें दूसरे को नहीं देखना, यह नहीं करता है तो मैं कैसे करूँ, यह भी तो ऐसा ही है। ब्रह्मा बाप ने सी ([illegible]) शिव बाप किया। अगर देखना है तो ब्रह्मा बाप को देखो। इसमें दूसरे को न देख यह लक्ष्य रखो जैसे ब्रह्मा बाप का स्लोगन था ''**ओटे सो अर्जुन**'' अर्थात् जो स्वयं को निमित्त बनायेगा वह नम्बरवन

अर्जुन हो जायेगा। ब्रह्मा बाप अर्जुन नम्बरवन बना। अगर दूसरे को देख करके करेंगे तो नम्बरवन नहीं बनेंगे। नम्बरवार में आयेंगे, नम्बरवन नहीं बनेंगे। और जब हाथ उठवाते हैं तो सब नम्बरवार में हाथ उठाते हैं या नम्बरवन में उठाते हैं? तो क्या लक्ष्य रखेंगे? अखण्ड गुणदानी, अटल, कोई कितना भी हिलावे, हिलना नहीं। हरेक एक दो को कहते हैं, सभी ऐसे हैं, तुम ऐसे क्यों अपने को मारता है, तुम भी मिल जाओ। कमजोर बनाने वाले साथी बहुत मिलते हैं। लेकिन बापदादा को चाहिए हिम्मत, उमंग बढ़ाने वाले साथी। तो समझा क्या करना है? सेवा करो लेकिन जमा का खाता बढ़ाते हुए करो, खूब सेवा करो। पहले स्वयं की सेवा, फिर सर्व की सेवा। और भी एक बात बापदादा ने नोट की, सुनायें?

आज चन्द्रमा और सूर्य का मिलन था ना। तो जगत अम्बा माँ बोली एडवांस पार्टी कब तक इन्तजार करे? क्योंकि जब आप एडवांस स्टेज पर जाओ तब एडवांस पार्टी का कार्य पूरा हो। तो जगत अम्बा माँ ने आज बापदादा को बहुत धीरे से, बड़े तरीके से एक बात सुनाई, वह एक कौन सी बात सुनाई? बापदादा तो जानते हैं, फिर भी आज रूह-रूहान थी ना। तो क्या कहा कि मैं भी चक्कर लगाती हूँ, मधुबन में भी लगाती हूँ तो सेन्टरों पर भी लगाती हूँ। तो हँसते-हँसते, जिन्होंने जगत अम्बा को देखा है उन्हों को मालूम है कि हँसते, हँसते इशारे में बोलती है, सीधा नहीं बोलती है। तो बोली कि आजकल एक विशेषता दिखाई देती है, कौन-सी विशेषता? तो कहा कि आजकल अलबेलापन बहुत प्रकार का आ गया है। कोई के अन्दर किस प्रकार का अलबेलापन है, कोई के अन्दर किस प्रकार का अलबेलापन है। हो जायेगा, कर लेंगे.. और भी तो कर रहे हैं, हम भी कर लेंगे... यह तो होता ही है, चलता ही है... यह भाषा अलबेलेपन की संकल्प में तो है ही लेकिन बोल में भी है। तो बापदादा ने कहा कि इसके लिए नये वर्ष में आप कोई युक्ति बच्चों को सुनाओ। तो आप सबको पता है जगत अम्बा माँ का एक सदा धारणा का स्लोगन रहा है, याद है? किसको याद है? **(हुक्मी हुक्म चलाए रहा..)** तो जगत अम्बा बोली अगर यह धारणा सब कर लें कि हमें बापदादा चला रहा है, उसके हुक्म से हर कदम चला रहे हैं। अगर यह स्मृति रहे तो हमारे को चलाने वाला डायरेक्ट बाप है। तो कहाँ नज़र जायेगी? चलने

वाले की, चलाने वाले के तरफ़ ही नज़र जायेगी, दूसरे तरफ नहीं। तो यह करावनहार निमित्त बनाए करा रहे हैं, चला रहे हैं। जिम्मेवार करावनहार है। फिर सेवा में जो माथा भारी हो जाता है ना, वह सदा हल्का रहेगा, जैसे रूहे गुलाब। समझा, क्या करना है ? अखण्ड महादानी। अच्छा।

नया वर्ष मनाने के लिए सभी भाग-भाग करके पहुँच गये हैं। अच्छा है हाउस फुल हो गया है। अच्छा पानी तो मिला ना ! मिला पानी ? फिर भी पानी की मेहनत करने वालों को मुबारक है। इतने हज़ारों को पानी पहुँचाना, कोई दो-चार बाल्टी तो नहीं है ना ! चलो कल से तो चलाचली का मेला होगा। सब आराम से रहे ! थोड़ा-सा तूफ़ान ने पेपर लिया। थोड़ी हवा लगी। सब ठीक रहे ? पाण्डव ठीक रहे ? अच्छा है कुम्भ के मेले से तो अच्छा है ना ! अच्छा तीन पैर पृथ्वी तो मिली ना। खटिया नहीं मिली लेकिन तीन पैर पृथ्वी तो मिली ना !

तो नये वर्ष में चारों ओर के बच्चे भी विदेश में भी, देश में भी नये वर्ष की सेरीमनी बुद्धि द्वारा देख रहे हैं, कानों द्वारा सुन रहे हैं। मधुबन में भी देख रहे हैं। मधुबन वालों ने भी यज्ञ रक्षक बन सेवा का पार्ट बजाया है, बहुत अच्छा। बापदादा विदेश वा देश वालों के साथ मधुबनवासियों को भी जो सेवा के निमित्त हैं, उन्हों को भी मुबारक दे रहे हैं। अच्छा। बाकी तो कार्ड बहुत आये हैं। आप सब भी देख रहे हो ना बहुत कार्ड आये हैं। कार्ड तो कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन इसमें छिपा हुआ दिल का स्नेह है। तो बापदादा कार्ड की शोभा नहीं देखते लेकिन कितने कीमती दिल का स्नेह भरा हुआ है, तो सभी ने अपने-अपने दिल का स्नेह भेजा है। तो ऐसे स्नेही आत्माओं को विशेष एक एक का नाम तो नहीं लेंगे ना ! लेकिन बापदादा कार्ड के बदले ऐसे बच्चों को स्नेह भरा रिगार्ड दे रहे हैं। याद पत्र, टेलीफोन, कम्प्युटर, ई-मेल, जो भी साधन हैं उन सभी साधनों से पहले संकल्प द्वारा ही बापदादा के पास पहुँच जाता है फिर आपके कम्प्युटर और ई-मेल में आता है। बच्चों का स्नेह बापदादा के पास हर समय पहुँचता ही है। लेकिन आज विशेष नये वर्ष के कईयों ने प्लैन भी लिखे हैं, प्रतिज्ञायें भी की हैं, बीती को बीती कर आगे बढ़ने की हिम्मत भी रखी है। सभी को बापदादा कह रहे हैं बहुत-बहुत शाबास बच्चे, शाबास !

आप सभी खुश हो रहे हैं ना! तो वह भी खुश हो रहे हैं। अभी बापदादा की यही दिल की आश है कि – **''दाता का बच्चा हर एक दाता बन जाओ।''** माँगो नहीं यह मिलना चाहिए, यह होना चाहिए, यह करना चाहिए। दाता बनो, एक दो को आगे बढ़ाने में फ्राखदिल बनो। बापदादा को छोटे कहते हैं कि हमको बड़ों का प्यार चाहिए और बाप छोटों को कहते हैं कि बड़ों का रिगार्ड रखो तो प्यार मिलेगा। रिगार्ड देना ही रिगार्ड लेना है। रिगार्ड ऐसे नहीं मिलता है। देना ही लेना है। जब आपके जड़ चित्र देते हैं। देवता का अर्थ ही है देने वाला। देवी का अर्थ ही है देने वाली। तो आप चैतन्य देवी देवतायें दाता बनो, दो। अगर सभी देने वाले दाता बन जायेंगे, तो लेने वाले तो खत्म हो जायेंगे ना! फिर चारों ओर सन्तुष्टता की, रूहानी गुलाब की खुशबू फैल जायेगी। सुना!

तो नये वर्ष में न पुरानी भाषा बोलना, जो पुरानी भाषा कई-कई बोलते हैं जो अच्छी नहीं लगती है, तो पुराने बोल, पुरानी चाल, पुरानी कोई भी आदत से मज़बूर नहीं बनना। हर बात में अपने से पूछना कि नया है! क्या नया किया ? बस सिर्फ २१ वीं सदी मनाना है, २१ जन्म का सम्पूर्ण वर्सा २१ वीं सदी में पाना ही है। पाना है ना! अच्छा।

सेवा में गुजरात का टर्न है – गुजरात की सेवा तो मशहूर है ना ? अच्छा है गुजरात की विशेषता है कि जितना पास में है, उतना हर कार्य में सहयोग देने में एवररेडी बन जाते हैं। गुजरात वालों को सिर्फ बापदादा एक उल्हना देते हैं, बतायें क्या ? जितना पास है ना, उतने कोई माइक्स पास में नहीं आये हैं। गुजरात की मिनिस्ट्री बहुत अच्छी है। गुजरात को मिनिस्ट्री में से कोई ग्रुप तैयार करना चाहिए, हो सकता है। जो मिलकर एक हैदराबाद, एक गुजरात, कनार्टक में भी हैं, कोई ऐसे सम्बन्ध-सम्पर्क में लायें, हैं सम्बन्ध-सम्पर्क में लेकिन सेवा में लगें। जब काम पड़ता है तब उसी थोड़े टाइम के लिए तो मददगार बन जाते हैं, लेकिन सेवा में निमित्त बनते रहें, इतने समीप और बेधड़क हो। बापदादा ने जो पहले कहा है, अभी वर्ष पूरा हो रहा है लेकिन बापदादा के पास वह रिजल्ट आई नहीं है। जगह-जगह पर बिखरे हुए अच्छे-अच्छे आई.पी. हैं। मधुबन में भी बहुत आये हैं, सेवाकेन्द्रों पर भी बहुत

आते रहते हैं लेकिन उन्हों का संगठन नहीं हुआ है। ज़ोन-ज़ोन में भी संगठन हो जाए, उन्हों में हिम्मत आवे आगे बढ़ने की। इण्डीविज्युअल तो सेवा करते रहते हो लेकिन आवाज तब होगा जब एक-दो के संगठन में आयेंगे। जैसे फारेन से ग्रुप बनके आया ना ! चाहे छोटा आया, चाहे बड़ा आया लेकिन ग्रुप बनके आया। और ग्रुप बनने में ताकत, हिम्मत आती है। अच्छा। गुजरात वालों को सेवा की मुबारक है।

विदेश के यूथ की रिट्रीट ज्ञान सरोवर में चल रही है

अच्छा है, यूथ ग्रुप का भी बापदादा ने समाचार सुना। अच्छा पुरुषार्थ और विधि बहुत अच्छी अपनाते हैं। फारेन के यूथ खड़े हो जाओ। अच्छा। जो यहाँ अभ्यास पक्का किया है, वह वहाँ भी कायम रहेगा ना ! या थोड़ा कम हो जायेगा ? बोलो ! अपने देश में जाके भी यह अभ्यास जो ७१ सेकण्ड का किया वह रहेगा ? (हाथ हिला रहे हैं) अच्छा, प्रोग्राम बहुत अच्छा बनाया है। अटेन्शन भी अच्छा रखा है। अभी सिर्फ इसको बढ़ाते रहना, कम नहीं करना। दूसरे वर्ष आओ तो यही रिज़ल्ट ले आओ कि आगे से आगे हैं। कम नहीं हुआ है। बाकी अच्छा है, आते भी हिम्मत से हैं, प्यार से हैं। इतना दूर-दूर से आते हैं तो यह प्यार है तभी आते हैं। बापदादा ने तो कहा ही है कि आल वर्ल्ड से यूथ ग्रुप को इकट्ठा कर गवर्मेन्ट के सामने लाना है कि यह यूथ स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन कर रहे हैं। ऐसा संगठन भी तैयार हो जायेगा। फारेन में कितने देशों में सेवा है ? (२७१) और इन्डिया में ? इन्डिया के एक एक स्टेट का हो और एक-एक देश का एक हो। तो एक-एक देश का यूथ, चाहे विदेश, चाहे देश सभी का एक-एक ही हो भले। लेकिन इतने सब देशों के यूथ अपने यूथ ग्रुप का जो ओथ लेते हैं, प्रामिस करते हैं वह ले आवें और गवर्मेन्ट के आगे रखें तो कितनी अच्छी सेवा हो सकती है। गाँव वाले भी हों, देश वाले भी हो तो फारेन वाले भी हों। सब तरफ के यूथ इकट्ठे हों, तो कितनी अच्छी सेवा हो जायेगी। ऐसे ही हर देश का अपने हिसाब से अच्छा प्रसिद्ध आई.पी. हो, वी.आई.पीज़ की तो बात छोड़ो। जो हिम्मत वाला हो और सभी देशों के इकट्ठे हों। गवर्मेन्ट को बतायें कि हमारे देश में कितनी आत्माओं को फायदा है। अच्छा।

विदेश के छोटे बच्चों की भी रिट्रीट है – छोटे-छोटे बच्चे भी आये हैं। हाँ

खड़े हो जाओ। अच्छी ट्रेनिंग ली ? अच्छी ट्रेनिंग हुई ? अच्छे बच्चे बनेंगे ना !

टीचर्स से – सभी टीचर्स ने 'कल्चर आफ पीस' की मेहनत की है। अच्छी सेवा की है। आत्माओं को परिचय मिला, कोई सम्बन्ध-सम्पर्क में भी आये, सन्देश भी कई आत्माओं को मिला। चाहे अभी आये या नहीं आये लेकिन समय आने पर याद आयेगा तो हमें भी पर्चा मिला था और ढूँढ़ेंगे आपको कि वह सफेद वस्त्र वाली बहिनें, कौन सी थी जिन्होंने पर्चे दिये थे लेकिन हमने नहीं सुना। वह भी समय आयेगा, जिन आत्माओं में बीज डाला है, उनका फल निकलेगा। प्राइज़ तो थोड़ों को दी जाती है, उमंग-उत्साह बढ़ाने के लिए। लेकिन जिन्होंने ने भी जितनों की भी सेवा की है, उन सबकी सेवा आत्माओं तक भी पहुँची और बाप के पास तो जमा होती ही है। प्राइज़ तो एक को मिलेगी लेकिन सहयोग तो बहुतों ने, टीचर्स ने स्टूडेण्टस ने बहुत दिया है, इसलिए सभी सेवा करने वालों को बापदादा की तरफ़ से स्नेह की सौगात है ही है। ऐसे नहीं समझना हमको तो गिफ्ट मिली नहीं, हमको दिल का स्नेह मिला। अच्छा।

आज बापदादा को जो रेलवे में जाकर रिसीव करते हैं रात को ठण्डक में, गर्मी में वह याद आ रहे हैं, वह बैठे हैं ? जो रेलवे स्टेशन पर जाकर रिसीव करते हैं वह यहाँ हैं या अभी भी स्टेशन पर हैं ? सेवा में बिज़ी रहते हैं। उन्हों की भी सेवा अथक है। आप सबको अच्छी तरह से लाते हैं ना ! पहुँच जाते हो ना ! विशेष मैजॉरिटी सभी संगम भवन में रहते हैं ना। तो उन सभी अथक सेवाधारियों को भी बापदादा याद करते हैं। वैसे तो सभी मधुबन की डिपार्टमेंट मेहनत तो बहुत करते हैं। इसीलिए सभी मधुबन डिपार्टमेंट वालों को, चाहे शान्तिवन वालों को, चाहे पाण्डव भवन वालों को, चाहे आस-पास रहने वालों को, ज्ञान सरोवर वालों को, हॉस्पिटल वालों को सभी सेवाधारियों को बापदादा मुबारक देते हैं। अच्छा। यह भी (सामने कैबिन में बैठे हुए भाईयों को देखकर) देखो कितनी सेवा कर रहे हैं। बहुत अच्छा है। (एयरपोर्ट वाले, आवास निवास वाले भी बहुत अथक सेवा करते हैं) इसीलिए कहा सभी डिपार्टमेंट वालों को। हर एक की सेवा बहुत अच्छी है। जो स्वच्छता रखते हैं, उन्हों का भी काम कम नहीं है। सब डिपार्टमेंन्ट्स का काम अपना-अपना है। और डिपार्टमेंन्टस नहीं होती तो आप इतने सभी कैसे अच्छी तरह रहते। इसलिए बापदादा नाम नहीं ले रहे हैं

लेकिन हर एक डिपार्टमेंट नम्बरवन अपने को समझे। अच्छा।

चारों ओर के नव युग अधिकारी श्रेष्ठ आत्माओं को, सर्व बच्चों को, जो सदा हर कदम में पदम जमा करने वाली आत्मायें हैं, सदा अपने को ब्रह्मा बाप समान सर्व के आगे सैम्पुल बन सिम्पुल बनाने वाली आत्मायें, सदा अपने जीवन में गुणों को प्रत्यक्ष कर औरों को गुणवान बनाने वाले, सदा अखण्ड महादानी, महा सहयोगी आत्माओं को बापदादा का यादप्यार और नमस्ते।

जगदीश भाई से – ठीक है। (चलती का नाम गाड़ी है) जीवन को बाप हवाले तो आदि से कर ही लिया है। जीवन में जब तक भी है तक तक सेवा तो कर रहे हो और करते ही रहेंगे। जमा हो रहा है। अभी बापदादा जो भी महारथी हैं, सभी महारथी बैठे हैं ना, उन महारथियों को कौन सी सेवा करनी है, वह बताते हैं। सेवायें तो सब कर रहे हैं और आप सबने तो अभी तक जो दूसरे सेवायें कर रहे हैं, वह बहुत कर ली है, अभी तो दूसरे भी आप लोगों द्वारा बहुत होशियार हो गये हैं, अभी महारथियों को और नई सेवा करनी चाहिए। ठीक है ना! अभी आप लोगों को जो सेवा करनी है उनमें इनकी (कानों की) जरूरत नहीं है। (कम सुन रहा है) अब आप लोगों की सेवा है, वायब्रेशन्स द्वारा आत्माओं को समीप लाना। आपस में तो होना ही है। आपसी स्नेह औरों को वायब्रेशन द्वारा खींचेगा। अभी आप लोगों को यह साधारण सेवा करने की आवश्यकता नहीं है। भाषण करने वाले तो बहुत हैं, लेकिन आप लोग हर एक आत्मा को ऐसी भासना दो जो वह समझें कि हमको कुछ मिला। ब्राह्मण परिवार में भी आपके संगठन के वायब्रेशन द्वारा निर्विघ्न बनाना है। मन्सा सेवा की विधि को और तीव्र करो। वाचा वाले बहुत हैं। मन्सा द्वारा कोई न कोई शक्ति का अनुभव हो। वह समझें कि इन आत्माओं द्वारा यह यह शक्ति का अनुभव हुआ। चाहे शान्ति का हो, चाहे खुशी का हो, चाहे सुख का हो, चाहे अपने-पन का। तो जो भी अपने को महारथी समझते हैं उन्हों को अभी यह सेवा करनी है। सभी अपने को महारथी समझते हो? महारथी हैं? अच्छा है। (जगदीश भाई ने एक गीत गाया)

अभी औरों को भी आप द्वारा ऐसा अनुभव हो। बढ़ता जायेगा। इससे ही अभी ऐसी अनुभूति शुरू करेंगे तब साक्षात्कार शुरू हो जायेगा।

दादी जानकी से – फिर मानो यहाँ आप भारत में मिलती हो और फारेन में चली जाती हो तो फारेन में जाने के बाद आपके फ़रिश्ते रूप का साक्षात्कार होगा कि यह कौन सी देवी थी जिसने मेरे को एक सेकण्ड के लिए भी शान्ति का अनुभव कराया, सुख का कराया... इससे ही साक्षात्कार शुरू हो जायेगा। यह औरों को भी पाठ पढ़ाओ। हर बात में कहें बाबा-बाबा-बाबा, 'मैं' नहीं लायें, तभी साक्षात्कार शुरू हो। यह मैं पन आ जाता है इसलिए लोग भी ब्रह्माकुमारियों की महिमा करते हैं, बाप की कम करते हैं। (नाम ही ब्रह्माकुमारी है) लेकिन पहले ब्रह्मा नाम है।

अच्छा। **(जगदीश भाई से)** शरीर को चला रहे हैं ना, चलाते चलो। अच्छा। लाइट रहना ही अच्छा है। सभी पाण्डव भी मददगार हैं। पाण्डवों का भी प्यार है, दादियों का भी प्यार है। (पाण्डवों से भी ज्यादा दादियों का है) कोई ऐसी घड़ी आ जायेगी जो असम्भव से सम्भव हो जायेगा। अच्छा। सभी ने सुना ना!

(जगदीश भाई की सेवा में दिल्ली की साधना बहन हैं, उनसे बापदादा मिल रहे हैं):-

सेवा का भाग्य मिलना भी बहुत बड़ी बात है, दिल से सेवा करते चलो। कर रही हो, करते चलो।

अव्यक्त बापदादा ने कल्चर आफ पीस की सेवाओं में प्राइज़ विनर को गिफ्ट दी तथा रात्रि 12 बजे के पश्चात नये वर्ष में सभी बच्चों को 2001 वर्ष की मुबारक दी।

इस समय पुराने और नये वर्ष का संगम समय है। संगम समय अर्थात् पुराना समाप्त हुआ और नया आरम्भ हुआ। जैसे बेहद के संगमयुग में आप सभी ब्राह्मण आत्मायें विश्व-परिवर्तन करने के निमित्त हो, ऐसे आज के इस पुराने और नये वर्ष के संगम पर भी स्व-परिवर्तन का संकल्प दृढ़ किया है और करना ही है। जो बताया हर सेकण्ड अटल, अखण्ड महादानी बनना है। दाता के बच्चे मास्टर दाता बनना है। पुराने वर्ष को विदाई के साथ-साथ पुरानी दुनिया के लगाव और पुराने संस्कार को विदाई दे नये श्रेष्ठ संस्कार का आह्वान करना है। सभी को अरब-खरब बार मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।

देहली भवन प्रति

देहली दरबार से सभी को प्यार है ही क्योंकि अनेक बार राज्य किया है और आज नहीं लेकिन कल राज्य करना है, इतने नज़दीक पहुँच गये हो। इसलिए जो भी दिल्ली की सेवा करने के निमित्त हैं और निमित्त बनना ही है, उन सभी सेवाधारियों को आप सभी सब प्रकार का सहयोग दे आगे बढ़ा रहे हो और आगे बढ़ाते रहना है क्योंकि राजधानी तैयार करनी है इसलिए इनएडवांस देहली सेवा के स्थान को मुबारक हो, मुबारक हो।

इंजीनियर्स या जो भी सेवा के निमित्त हैं अच्छी सेवा कर रहे हैं इसीलिए बापदादा सबके मुख में गुलाबजामुन दे रहे हैं और जब आप सबके सहयोग से तैयार हो जायेगा तो आप सबके भी मुख में गुलाबजामुन आयेगा। अच्छा। ओम् शान्ति।